दैनिक जागरण
वर्ष 7 अंक 358
मूल्य ₹8.00 नई दिल्ली, बुधवार, 5 जून, 2024
www.jagran.com
पृष्ठ 14

जनता-जनार्दन ने राजग पर लगातार तीसरी बार अपना विश्वास जताया है। भारत के इतिहास में यह एक अभूतपूर्व पल है। मैं इस स्नेह और आशीर्वाद के लिए अपने परिवारजनों को नमन करता हूं। मैं देशवासियों को विश्वास दिलाता हूं कि उनकी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए हम नई ऊर्जा, नई उमंग, नए संकल्पों के साथ आगे बढ़ेंगे। सभी कार्यकर्ताओं ने जिस समर्पण भाव से अथक मेहनत की है, मैं इसके लिए उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूं, अभिनंदन करता हूं। -**नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री**

लोकतंत्र की जय

गठबंधन के सहारे मोदी

यूपी, राजस्थान व महाराष्ट्र से करारा झटका

लंबी और थका देने वाली लोकसभा चुनाव प्रक्रिया में मंगलवार को जब परिणाम आया तो लोकतंत्र की जीत हुई। यह तथ्य फिर स्थापित हुआ कि जनता ही जनार्दन है। जनादेश ने केंद्र में राजग सरकार के तीसरे कार्यकाल का आधार निर्मित कर दिया है, लेकिन महासमर-2024 का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष एक सशक्त विपक्ष का उभार रहा। शासन में निरंतरता भावी सरकार को सशक्त राष्ट्र के निर्माण और जनकल्याणकारी नीतियां आगे बढ़ाने का अवसर प्रदान करेगी। भाजपा के नेतृत्व वाला राजग भले ही अपनी अपेक्षाओं से पीछे रह गया हो, लेकिन यह कम उल्लेखनीय नहीं है कि उसने लगातार तीसरी बार बहुमत का आंकड़ा पार किया। इस चुनाव की बड़ी बात यह है कि अरसे बाद सत्ता पक्ष के साथ-साथ विपक्ष भी नतीजे को लोकतंत्र की विजय बता रहा है। लगातार चुनाव आयोग और ईवीएम पर खड़े होने वाले सवाल आज किसी की जुबान पर नहीं हैं। यह हमेशा से चर्चा का विषय रहा है कि सशक्त लोकतंत्र के लिए मजबूत विपक्ष जरूरी है। जनता ने वह कर दिया है। पिछले दो आम चुनाव से देश निर्णायक जनादेश का साक्षी रहा है इस बार गठबंधन की सरकार होगी। ऐसे में अपेक्षा की जा सकती है कि इतिहास में दर्ज गठबंधन की विवशता इस बार बड़े सुधार और कल्याणकारी फैसलों के आड़े न आएगी। देश की गति गठबंधन की विवशता से बाधित न होगी। साथ ही मजबूत विपक्ष से भी जनता अपेक्षा करेगी कि उसकी ताकत सकारात्मक होगी।

पांच बड़ी विजय

- **शंकर लालवानी, इंदौर (मप्र)**
  पार्टी : भाजपा
  अंतर : **10,08,077**
- **रकीबुल हुसैन, धुबरी (असम)**
  पार्टी : कांग्रेस
  अंतर : **9,62,682**
- **शिवराज सिंह चौहान, विदिशा (मप्र)**
  पार्टी : भाजपा
  अंतर : **8,21,408**
- **सीआर पाटिल, नवसारी (गुजरात)**
  पार्टी : भाजपा
  अंतर : **7,73,551**
- **अमित शाह, गांधीनगर (गुजरात)**
  पार्टी : भाजपा
  अंतर : **7,44,716**

चर्चित जीत-हार

- **कंगना रनौत :** अभिनेत्री कंगना रनौत पहली बार चुनावी मैदान में थीं। उन्होंने हिमाचल की मंडी सीट से जीत दर्ज की।
- **अरुण गोविल :** रामायण धारावाहिक में राम का किरदार निभाने वाले अरुण गोविल मेरठ, उप्र से सांसद चुने गए।
- **पप्पू यादव :** कांग्रेस से टिकट नहीं मिलने पर निर्दलीय लड़े पप्पू यादव पूर्णिया, बिहार से चुनाव जीत गए।
- **भूपेश बघेल :** छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री व कांग्रेस नेता भूपेश बघेल राजनांदगांव से चुनाव हार गए।

इलस्ट्रेशन : अवधेश राजपूत

पराजित मंत्री और उनकी सीटें

स्मृति इरानी, अमेठी, उत्तर प्रदेश

महेंद्र नाथ पांडेय, चंदौली, उत्तर प्रदेश

साध्वी निरंजन ज्योति, फतेहपुर, उप्र

आरके सिंह, आरा, बिहार

अर्जुन मुंडा, खूंटी, झारखंड

संजीव बालियान, मुजफ्फरनगर, उप्र

अजय मिश्र टेनी, लखीमपुर खीरी, उप्र,

राजीव चंद्रशेखर, तिरुअनंतपुरम, केरल

भानु प्रताप सिंह वर्मा, जालौन, उप्र

कैलाश चौधरी, बाड़मेर-जैसलमेर, राजस्थान

राजग में शामिल प्रमुख पार्टियों की स्थिति

- भाजपा - 240
- शिवसेना (शिंदे गुट) - 7
- जनता दल (सेकुलर) - 2
- तेदेपा - 16
- जदयू - 12
- रालोद - 2
- जनसेना - 2
- हम - 1
- अपना दल - 1
- अन्य दल - 8

आइएनडीआइए के प्रमुख दलों की स्थिति

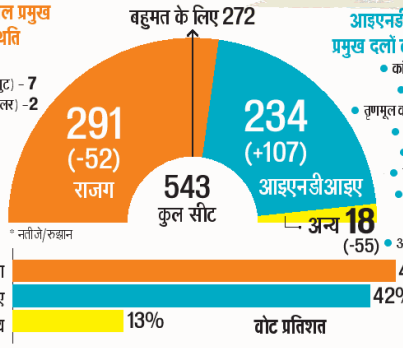

- कांग्रेस - 100
- सपा - 38
- तृणमूल कांग्रेस - 29
- द्रमुक - 22
- राजद - 4
- एनसीपी - 8
- झामुमो - 3
- आप - 3
- अन्य दल - 27

भारत की जनता ने संविधान और लोकतंत्र को बचा लिया है। देश की वंचित और गरीब आबादी अपने अधिकारों की रक्षा के लिए हमारे साथ खड़ी हो गई। गठबंधन के सभी साथियों और कांग्रेस के बब्बर शेर कार्यकर्ताओं को बधाई। जनता ने यह साफ कर दिया है कि वह अदाणी समूह और मोदीजी के बीच सीधा संबंध देखती है। देश ने मोदीजी और अमित शाह जी को कह दिया है कि हम नहीं चाहते हैं कि आप देश चलाएं।
- **राहुल गांधी**, कांग्रेस नेता

राजग की यह जीत, बीते 10 वर्षों में मोदीजी ने जिस तरह देश के गरीबों, महिलाओं, पिछड़ों, वंचितों और युवाओं के सपनों को साकार करने के लिए पुरुषार्थ किया है, उसके लिए जनता का आशीर्वाद है। इस जीत के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को बधाई देता हूं। इसके अलावा, भाजपा को मिली यह जीत हमारे कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम का प्रतिफल है। इस जीत के लिए भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा और सभी भाजपा कार्यकर्ताओं को भी मैं बधाई देता हूं।
-**अमित शाह**, गृह मंत्री

भाजपा को अपेक्षित परिणाम न मिलने के कारण

- भाजपा अपने मुद्दे तय कर विपक्ष को उसी पिच पर आने को विवश करती थी। इस बार ऐसा नहीं दिखा। चरण दर चरण विपक्ष के तय मुद्दों का भाजपा जवाब देती रही।
- 2014 में मनमोहन सरकार का भ्रष्टाचार और 2019 में सर्जिकल और एयरस्ट्राइक के बाद राष्ट्रवाद प्रमुख चुनावी मुद्दा रहा। 2024 में भाजपा कोई ऐसा राष्ट्रीय मुद्दा बनाने में विफल रही, जो मतदाताओं को मतदान केंद्र तक ला सके।
- अबकी बार 400 पार के नारे को विपक्ष संविधान बदलने और एससी, एसटी और ओबीसी आरक्षण खत्म करने से जोड़कर भाजपा के खिलाफ इस्तेमाल करने में सफल रहा। विपक्ष आरक्षण जैसे संवेदनशील मुद्दे पर भ्रम पैदा करने में सफल रहा।
- उत्तर प्रदेश में भाजपा यादव से इतर अन्य पिछड़ी जातियों को अपने पक्ष में गोलबंद करने में सफल रही थी। इस बार ये पिछड़ी जातियां भाजपा से छिटककर सपा और कांग्रेस के पक्ष में जाती दिखीं।

विपक्ष के अच्छे प्रदर्शन के प्रमुख आधार

- कांग्रेस समेत आइएनडीआइए के प्रमुख दलों ने अपने घोषणापत्र में लोक-लुभावन वादे किए। इसका असर कई राज्यों में चुनाव परिणाम पर साफ दिख रहा है। नौकरी देने के वादे के साथ आमजन से जुड़ी कई घोषणाओं ने विपक्ष के लिए मजबूत आधार बनाया।
- आरक्षण और संविधान को लेकर नैरेटिव बनाना भी इस लोकसभा चुनाव में विपक्षी गठबंधन के लिए खासा लाभकारी साबित हुआ। राहुल गांधी और अखिलेश यादव समेत आइएनडीआइए के प्रमुख नेताओं ने अपनी रैलियों और भाषणों में संविधान की बात की।
- इस बार विपक्ष ने गठबंधन के दलों के बीच बेहतर समन्वय पर विशेष ध्यान दिया। हालांकि शुरुआती दौर में नीतीश कुमार नाराज होकर आइएनडीआइए से अलग हो गए, लेकिन इसके बाद विपक्षी नेताओं ने आपसी मेलजोल और समझ को बेहतर किया।
- लोकसभा चुनाव के दौरान विभिन्न प्रदेशों में बेहतर जातीय गोलबंदी भी विपक्षी गठबंधन के बेहतर प्रदर्शन में अहम रही। भाजपा की ओर से भावनात्मक मुद्दे का अभाव भी रहा।

चुनाव के बड़े फैक्टर

अखिलेश यादव : आइएनडीआइए के प्रमुख घटक दल कांग्रेस के दबाव में आए बगैर अपनी शर्तों पर रणनीति बनाई। उत्तर प्रदेश में प्रत्याशी चयन में बहुत सावधानी बरती। सत्तारूढ़ भाजपा के खिलाफ उन मुद्दों को उठाया जिन्होंने जनमानस पर सीधा प्रभाव डाला। किसानों की आय दोगुनी न होने, एमएसपी, पेपर लीक और प्रतियोगी परीक्षाओं में भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों के जरिये भाजपा को घेरा।

ममता बनर्जी: बंगाल की मुख्यमंत्री और टीएमसी प्रमुख ममता बनर्जी ने केंद्र सरकार पर लगातार हमले की रणनीति कायम रखते हुए मुस्लिम हितैषी होने की अपनी छवि को बरकरार रखा। तमाम घोटालों के सामने और अपने नेताओं और मंत्रियों के खिलाफ केंद्रीय एजेंसियों की कार्रवाई से भी विचलित नहीं हुईं। संदेशखाली प्रकरण के साइड इफेक्ट को रोकने में कामयाब रहीं।

चंद्रबाबू नायडू : पिछले अनुभव से सबक लेते हुए नायडू ने जगनमोहन रेड्डी की बढ़ती ताकत को रोकने के लिए भाजपा का साथ लिया। राजग के संयोजक रह चुके नायडू एक बार फिर राष्ट्रीय राजनीति में अहम किरदार के रूप में उभरे हैं। विधानसभा में खुद के बूते प्रचंड बहुमत पाने के बाद सरकार बनाने जा रहे चंद्रबाबू तीसरी बार बनने जा रही मोदी सरकार के लिए भी अहम कड़ी बनेंगे।

नीतीश कुमार: बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के जदयू की सफलता में महिला वोटर और अति पिछड़ा वर्ग का बड़ा योगदान माना जा रहा है। महिलाओं के लिए आरक्षण सहित कई योजनाएं लागू कीं। जीविका समूह की महिलाओं को नियमित रूप से मदद की तो शराबबंदी से घर में सुख-शांति आने का भी फायदा हुआ। अति पिछड़ा वर्ग को सशक्त करने ने भी उनके दल को फायदा पहुंचाया।

ओडिशा में पहली बार भाजपा, आंध्र में भी राजग सरकार

जेएनएन, नई दिल्ली : ओडिशा विधानसभा चुनाव में पहली बार कमल खिला है। विधानसभा की 145 सीटों में से भाजपा ने अकेले दम 78 सीटों पर जीत हासिल की। इसी के साथ करीब ढाई दशक से सत्ता पर काबिज नवीन पटनायक के हाथ से सत्ता खिसक गई। सत्तारूढ़ बीजू जनता दल (बीजद) 51 सीटों पर सिमट गया। इसी तरह आंध्र प्रदेश में भी राजग की भारी बहुमत से सरकार बन रही है। गठबंधन ने 175 में से 164 सीटें जीतकर सत्तारूढ़ वाईएसआरसीपी का एक तरह से सफाया कर दिया है।

ओडिशा में भाजपा अपने बलबूते आधे से ज्यादा सीटें जीत कर पहली बार सत्ता में आई है। यहां उसने किसी को भी मुख्यमंत्री का चेहरा बनाकर चुनाव नहीं लड़ा था।

अंदर के पन्नों पर

टिकट बंटवारे में चूकी, भाजपा नहीं दोहरा पाई पिछला प्रदर्शन पेज>>02
अंततः यूपी में सफल हुई कांग्रेस व सपा के गठबंधन की राजनीति पेज>>02
बिहार में राजग को 30 सीटें, महागठबंधन ने नौ सीटों पर दर्ज की जीत पेज>>03
झारखंड में भाजपा को नुकसान, खूंटी में निशाने से चूका अर्जुन का 'तीर' पेज>>03
भाजपा की अपेक्षा के अनुरूप नहीं आए राजस्थान के नतीजे पेज>>04
शिवसेना-भाजपा के सिर फुटौव्वल में कांग्रेस व पवार ने मारी बाजी पेज>>04
बंगाल में महिलाओं और मुस्लिमों ने तृणमूल पर बरसाई 'ममता' पेज>>04
भगवा हुआ मध्यप्रदेश, भाजपा का क्लीन स्वीप पेज>>05
गुजरात में भाजपा की मजबूत पकड़ बरकरार पेज>>05
आंध्र में नायडू ने पूरी की प्रतिज्ञा, जगन की पार्टी का सूपड़ा साफ पेज>>08

संपादकीय

चुनौतियों भरी तीसरी पारी : अबकी बार मोदी को घटक दलों, खासतौर से नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू पर विशेष ध्यान देना होगा, जिससे सरकार में अस्थिरता न आने पाए। डा. **एके वर्मा** का विश्लेषण। • पेज 6

****

जनादेश गुणा-गणित

लोकसभा चुनाव 2024

सबसे युवा सदस्य

पुष्पेंद्र सरोज (25)
पार्टी: सपा
निर्वाचन क्षेत्र: कौशांबी, उत्तर प्रदेश

प्रिया सरोज (25)
पार्टी: सपा
निर्वाचन क्षेत्र: मछलीशहर, उत्तर प्रदेश

टीआर वालू (82) — सबसे बुजुर्ग सदस्य
पार्टी: द्रमुक
निर्वाचन क्षेत्र: श्रीपेरंबदूर (तमिलनाडु)

सुरेश गोपी — केरल में खुला खाता
पार्टी: बीजेपी
निर्वाचन क्षेत्र: त्रिसूर, केरल

पारिवारिक विरासत

विरासत की राजनीति हमेशा से चर्चा का विषय रही है। कई बार परिवाद के नाम पर इसकी आलोचना की जाती रही है। वहीं एक तर्क यह भी है कि जो लोग राजनीति में हैं, अगर उनके बच्चे राजनीति में आकर काबिलियत दिखाना चाहते हैं तो इसमें गलत क्या है? ऐसे ही कुछ युवा उम्मीदवार अपने परिवार की राजनीतिक विरासत को आगे बढ़ाने के लिए चुनाव मैदान में थे। इनमें से कई उम्मीदवारों ने सफलता हासिल की है।

- **चिराग पासवान**, पूर्व केन्द्रीय मंत्री रामविलास पासवान के पुत्र हैं। एलजेपी — हाजीपुर, बिहार
- **करण भूषण सिंह**, छह बार सांसद रहे बृज भूषण शरण सिंह के पुत्र हैं। बीजेपी — कैसरगंज, उत्तर प्रदेश
- **उज्ज्वल रमण सिंह**, सपा के वरिष्ठ नेता रेवती रमण सिंह के पुत्र हैं। सपा — इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश
- **नीरज शेखर**, पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर के पुत्र हैं। बीजेपी — बलिया, उत्तर प्रदेश
- **कार्ति चिदंबरम**, पूर्व केंद्रीय मंत्री पी चिदंबरम के पुत्र हैं। कांग्रेस — शिवगंगा, तमिलनाडु
- **वैभव गहलोत**, राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के पुत्र हैं। कांग्रेस — जालोर-सिरोही, राजस्थान
- **आदित्य यादव**, वरिष्ठ सपा नेता शिवपाल यादव के पुत्र हैं। सपा — बदायूं, उत्तर प्रदेश
- **बांसुरी स्वराज**, पूर्व विदेश मंत्री सुषमा स्वराज की पुत्री हैं। बीजेपी — नई दिल्ली, दिल्ली
- **रोहिणी आचार्य**, राजद के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव की पुत्री हैं। राजद — सारण, बिहार
- **अनिल एंटनी**, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एके एंटनी के पुत्र हैं। बीजेपी — पथानामथिट्टा, केरल
- **अंशुल अविजित**, कांग्रेस के दिग्गज नेता जगजीवन राम के नाती हैं। कांग्रेस — पटना साहिब, बिहार
- **प्रज्वल रेवन्ना**, पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवेगौड़ा के पौत्र हैं। जेडीएस — हासन, कर्नाटक
- **शांभवी चौधरी**, जेडीयू नेता अशोक चौधरी की पुत्री हैं। एलजेपी — समस्तीपुर, बिहार
- **जितिन प्रसाद**, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता जितेन्द्र प्रसाद के पुत्र हैं। बीजेपी — पीलीभीत, उत्तर प्रदेश
- **धमेन्द्र यादव**, सपा नेता मुलायम सिंह यादव के भतीजे हैं सपा — आजमगढ़, उत्तर प्रदेश
- **तनुज पूनिया**, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पीएल पूनिया के पुत्र हैं। कांग्रेस — बाराबंकी, उत्तर प्रदेश
- **ललितेशपति त्रिपाठी**, यूपी के पूर्व सीएम कमलापति त्रिपाठी प्रपौत्र हैं। तृणमूल कांग्रेस — भदोही, उत्तर प्रदेश
- **अंजनी सोरेन**, झारखंड पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की बहन हैं। जेएमएम — मयूरभंज, ओडिशा

किसने किसको चुना

शहरी सीटें 90/543

2 अन्य
39 राजग 49 आइएनडीआइए

ग्रामीण क्षेत्र 202/543

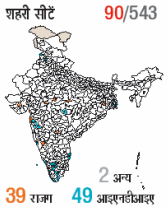

4 अन्य
125 राजग 73 आइएनडीआइए

कृषि प्रधान क्षेत्र 267/543

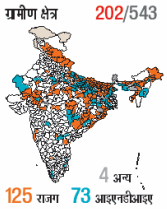

4 अन्य
157 राजग 104 आइएनडीआइए

सामान्य सीटों पर 180/543

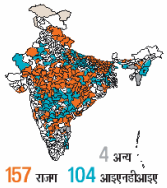

2 अन्य
113 राजग 65 आइएनडीआइए

एससी आरक्षित 50/543

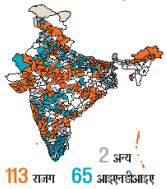

1 अन्य
27 राजग 22 आइएनडीआइए

एसटी आरक्षित 37/543

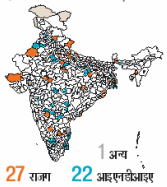

3 अन्य
17 राजग 17 आइएनडीआइए

आदिवासी सीटें 41/543

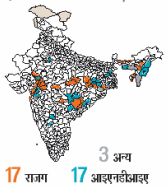

3 अन्य
24 राजग 14 आइएनडीआइए

अब ऐसी हो गई है देश की सियासी तस्वीर

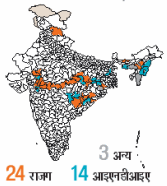

लोकसभा चुनाव में देश की सियासी तस्वीर बदल गई है। 2014 में बीजेपी ने 282 सीटें हासिल कर पूर्ण बहुमत से नरेन्द्र मोदी की अगुआई में सरकार बनाई थी। 2019 के लोकसभा चुनाव में पार्टी ने अपने प्रदर्शन में सुधार करते हुए सीटों की संख्या 303 तक पहुंचा दी और देश की राजनीति में अपना प्रभुत्व कायम किया। 2024 आम चुनाव के परिणाम पार्टी की उम्मीदों के अनुरूप नहीं रहे हैं और इससे देश की सियासी तस्वीर बदली है।

कमल का कमाल: बढ़ती सीटें बढ़ता जनाधार

लोकसभा चुनाव	सीटें	मत प्रतिशत
1984	2	7.4
1989	86	11.4
1991	120	20.8
1996	161	20.3
1998	182	25.6
1999	182	23.8
2004	138	22.2
2009	116	18.8
2014	282	31.0
2019	303	-
2024	240	-

रुझान और जीत के आधार पर।

291 (-52) राजग
234 (+107) आइएनडीआइए
18 (-55) अन्य

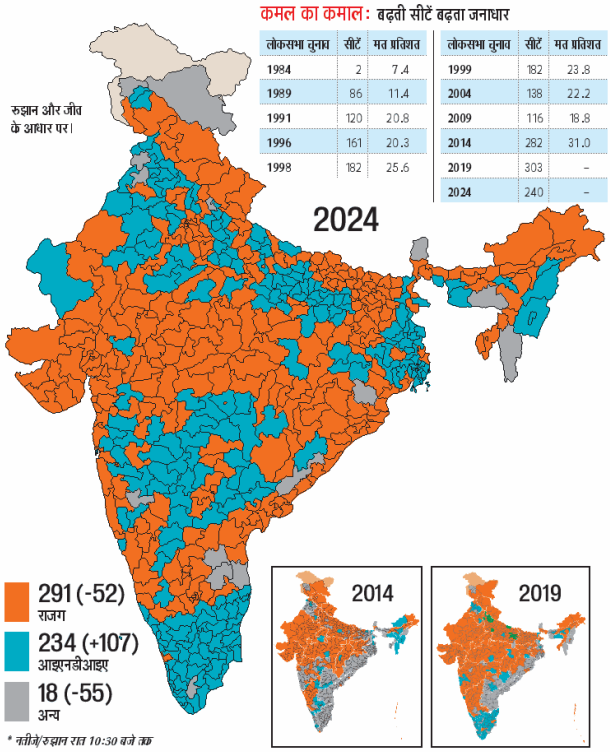

* नतीजे/रुझान रात 10:30 बजे तक

प्रमुख नेताओं की रैली और चुनाव परिणाम

लोस चुनाव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सहित सभी दलों के प्रमुख नेताओं ने देश भर में बड़ी संख्या में रैलियां और रोड शो किए। नेताओं ने गर्मी के प्रकोप की परवाह किए बिना अपनी पार्टी की चुनावी संभावनाओं को मजबूत करने के लिए प्रचार किया। कहीं पर नेताओं की मेहनत रंग लाई और उनकी पार्टी को अच्छी सीटें मिलीं और कहीं पर उनकी चुनावी रैलियों का खास असर नहीं दिखा। आइये जानते हैं कि बड़े नेताओं ने कहां पर कितनी रैलियां और रोड शो किए और इनके नतीजे क्या रहे।

पंजाब

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी: 4 रैलियां (पटियाला, जालंधर, गुरदासपुर, होशियारपुर)
प्रत्याशी कवर किए: सभी 13, सभी हारे।

गृहमंत्री अमित शाह: 1 रैली (लुधियाना)
प्रत्याशी कवर किए: एक, हार गए।

योगी आदित्यनाथ: दो रैलियां (श्री आनंदपुर साहिब व लुधियाना)
प्रत्याशी कवर किए: दो, हार गए

राहुल गांधी की रैली: तीन रैलियां (अमृतसर, लुधियाना व पटियाला) व एक चौपाल (श्री आनंदपुर साहिब)
प्रत्याशी कवर किए: चार, पटियाला में जीते, अमृतसर व लुधियाना में निर्णायक बढ़त और आनंदपुर साहिब में हारे।

प्रियंका गांधी वाड्रा: दो रैलियां (फतेहगढ़ साहिब, पटियाला)।
प्रत्याशी कवर किए: दो, जीत गए।

जम्मू-कश्मीर

प्रधानमंत्री की रैलियां

- जम्मू कश्मीर में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ऊधमपुर व जम्मू सीट के लिए ऊधमपुर में एक रैली की।
- भाजपा ने दो सीटों पर चुनाव लड़ा और दोनों सीटें भाजपा जीत रही है।

राहुल गांधी की रैलियां

- राहुल गांधी ने जम्मू कश्मीर में एक भी रैली नहीं की।
- कांग्रेस ने दो प्रत्याशी उतारे, दोनों ही हार रहे हैं।

नेताओं ने नहीं की गर्मी की परवाह, किया धुआंधार प्रचार

22 रैली, 5 रोड शो करने के साथ 2 सम्मेलनों में हिस्सा लिया उत्तर प्रदेश में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने

- मुख्यमंत्री योगी ने प्रत्याशियों के प्रचार के लिए देश भर में कुल 204 चुनाव कार्यक्रम किए। इनमें 169 जनसभाएं, 13 रोड शो, 15 प्रबुद्ध सम्मेलन हैं। यूपी के बाहर 14 राज्यों में भी 44 जनसभाएं व दो रोड शो
- सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने आइएनडीआइए के लिए 49 दिनों में 81 चुनावी जनसभाएं की उन्होंने मैनपुरी, कन्नौज व लखनऊ में रोड शो भी किया है।
- बसपा प्रमुख मायावती ने 35 जनसभाएं कीं। प्रचार अभियान की शुरुआत 11 अप्रैल को महाराष्ट्र के नागपुर से की थी। उन्होंने 28 जनसभाएं उत्तर प्रदेश व सात जनसभाएं दूसरे राज्यों में की हैं।
- कांग्रेस पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने चार जनसभाएं तथा एक प्रेस कान्फ्रेंस की, पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष, सांसद राहुल गांधी जी ने नौ जनसभाएं तथा एक प्रेसवार्ता की, राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने 22 जनसभाएं, 5 रोड शो, 15 स्वागत सभाएं तथा 80 नुक्कड़ सभाओं के माध्यम से इस प्रदेश की जनता से इंडिया गठबंधन को विजयी बनाने की अपील की है।

मध्य प्रदेश

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सात जनसभाएं और दो रोड-शो। जबलपुर (रोड-शो), बालाघाट, पिपरिया (होशंगाबाद), दमोह, सागर, हरदा (बैतूल), भोपाल (रोड-शो), मुरैना और खरगोन। सभी सीटें भाजपा की झोली में।
- राहुल गांधी ने पांच सभाएं की थीं। मंडला, शहडोल, भिंड, खरगोन और रतलाम- सभी में कांग्रेस हारी

बिहार में मोदी, शाह और राहुल की सभाएं

प्रधानमंत्री मोदी की सभाएं
कुल सभा : 15
सभा की प्रभाव वाली सीटें: 28
रोड शो : 01
मिली जीत: 16 (रुझान पर आधारित)

अमित शाह की सभाएं
कुल सभा: 13
सभा की प्रभाव वाली सीटें: 19
मिली जीत: 9 (रुझान पर आधारित)

राहुल गांधी की सभाएं
कुल सभा: 4
सभा की प्रभाव वाली सीटें: 7
मिली जीत 3 (रुझान पर आधारित)

हिमाचल प्रदेश में किसने की कितनी सभाएं

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंडी व शिमला संसदीय क्षेत्र नाहन में दो सभाएं की थीं। दोनों सीटों पर भाजपा जीत रही है।
- गृह मंत्री अमित शाह ने कांगड़ा संसदीय क्षेत्र के धर्मशाला और हमीरपुर संसदीय क्षेत्र के अंब में अनुराग ठाकुर के समर्थन में सभा की थी। यह सीटें भी भाजपा जीत रही है।
- उत्तर प्रदेश के सीएम योगी ने कुल्लू व हमीरपुर में सभा की थी।
- कांग्रेस के राहुल गांधी ने शिमला संसदीय क्षेत्र के नाहन व हमीरपुर संसदीय क्षेत्र के ऊना में सभा की थी। दोनों सीटों पर कांग्रेस हार रही है।

नतीजों में नजर नहीं आए एक्जिट पोल के अनुमान

एक तारीख को आए ज्यादातर एक्जिट पोल ने राजग की सीटों की संख्या 350-400 के बीच रहने का अनुमान जताया था। लेकिन चुनाव परिणाम इसके उलट हैं। सवाल उठता है कि क्या मतदाताओं ने जानकारी नहीं दी या एक्जिट पोल करने वाली एजेंसियों का डाटा जुटाने का तरीका सही नहीं था।

543 कुल — **एक्जिट पोल: किसको कितनी सीटें** — बहुमत 272

एजेंसी	राजग	आइएनडीआइए	अन्य
न्यूज 24-टुडेज चाणक्य	400±15	107±11	36±7
एबीपी न्यूज-सी वोटर	353-383	152-182	4-12
रिपब्लिक भारत-मैट्रिज	353-368	118-133	43-48
इंडिया टीवी-सीएनएक्स	371-401	109-139	28-38
जन की बात	362-392	141-161	10-20
आजतक-एक्सिस माय इंडिया	381	148	14

अमीर उम्मीदवार

इस बार चुनाव में कई अमीर उम्मीदवार अपनी किस्मत आजमा रहे थे। इनसे से ज्यादातर उम्मीदवार जीते हैं जबकि कुछ उम्मीदवारों को हार मिली है।

- चंद्रशेखर पेम्मासानी (गुंटूर) — ₹5,000+ करोड़ — गुंटूर, आंध्र प्रदेश
- कोंडा विश्वेसर रेड्डी (बीजेपी) — ₹4,556+ करोड़ — छेवल्ला, तेलंगाना
- पल्लवी श्रीनिवास डेंपो (बीजेपी) — ₹1,361+ करोड़ — दक्षिण गोवा, गोवा
- नवीन जिंदल (बीजेपी) — ₹1,230+ करोड़ — कुरुक्षेत्र, हरियाणा
- नकुल नाथ (कांग्रेस) — ₹716 करोड़ — छिंदवाड़ा, मध्य प्रदेश

गरीब उम्मीदवार

आम चुनाव में सबसे गरीब उम्मीदवार भी मैदान में थे। इनमें से अधिकतर उम्मीदवार निर्दलीय थे। इनको चुनाव में सफलता नहीं मिली है।

- रामकुमार यादव, एसयूसीआइ (सी) — ₹1,686 — प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश
- खिलखिलाकर, बीएसएसएसपी — ₹2,000 — उत्तर प. दिल्ली, दिल्ली
- मास्टर रणधीर सिंह, निर्दलीय — ₹2.00 — रोहतक, हरियाणा
- नंद राम बागरी, वीपीआइ — ₹2,000 — मैनपुरी, उत्तर प्रदेश
- दिलीप कुमार बराल, निर्दलीय — ₹4,032 — पुरी, ओडिशा

राजग का महानगरों में, आइएनडीआइए का ग्रामीण क्षेत्रों में लहराया जीत का परचम

- दिल्ली, बेंगलुरु और पुणे जैसे शहरों में राजग को बढ़त मिली
- विपक्षी गठबंधन को अधिकांश वोट गांव-कस्बों से मिले हैं

नई दिल्ली, प्रेट्र : भाजपा नीत राजग ने इस लोकसभा चुनाव में महानगरों में बेहतरीन प्रदर्शन किया है। लेकिन विपक्षी गठबंधन आइएनडीआइए ने देश के ग्रामीण इलाकों में झंडे गाड़े हैं। दिल्ली, बेंगलुरु और पुणे जैसे शहरों में राजग को बढ़त मिली है। हालांकि मुंबई क्षेत्र राजग के प्रभाव से अछूता रहा। जबकि आइएनडीआइए को अधिकांश वोट गांव-कस्बों से मिले।

भाजपा ने दिल्ली में अपनी पकड़ बनाए रखी है। सातों लोकसभा सीटों पर उसने जीत हासिल की है। राजग के लिए पुणे में भी खासे अच्छे नतीजे रहे। उसने जिन दलों से यहां गठबंधन किया, उनकी भी स्थिति यहां अच्छी रही। लेकिन इसके उलट विपक्षी गठबंधन आइएनडीआइए ने ग्रामीण आबादी के बीच अपनी पैठ अधिक बना ली है। देश में दूरदराज के ग्रामीण इलाकों में विपक्षी गठबंधन के विभिन्न दलों ने अच्छा प्रदर्शन किया है। आइएनडीआइए को देश आंतरिक अंचलों में अपनी पहुंच बनाने का मौका मिला। जैसे-छत्तीसगढ़ का कोरबा, उत्तर प्रदेश का आंवला, बस्ती व लालगंज और अन्य संसदीय क्षेत्र हैं। कृषक समुदाय और ग्रामीण मतदाताओं ने राजग के प्रत्याशियों से ज्यादा आइएनडीआइए के उम्मीदवारों पर भरोसा जताया है। हालांकि इस मामले में ओडिशा, गुजरात और मध्यप्रदेश भी अपवाद स्वरूप हैं जहां राजग ने शहरी ही नहीं ग्रामीण इलाकों में भी अपनी पूरी छाप छोड़ी है।

केंद्रीय मंत्री वीरेंद्र कुमार ने आठवीं बार जीता लोस चुनाव

नई दिल्ली, प्रेट्र: केंद्रीय मंत्री वीरेंद्र कुमार ने मप्र की टीकमगढ़ सीट से आठवीं बार जीत दर्ज की है, वहीं केंद्रीय मंत्री पंकज चौधरी सातवीं बार लोकसभा पहुंचे। केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह, मप्र के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान तथा तृणमूल कांग्रेस के सुदीप बंदोपाध्याय छठी बार लोकसभा पहुंचे हैं। राव इंद्रजीत गुड़गांव, शिवराज सिंह विदिशा और सुदीप बंदोपाध्याय ने कोलकाता उत्तर से चुनाव जीता।

एआइएमआइएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी पांचवीं बार हैदराबाद से चुने गए हैं। बठिंडा से शिअद की हरसिमरत कौर बादल चौथी बार लोकसभा पहुंची हैं। कांग्रेस नेता शशि थरूर ने भी तिरुअनंतपुरम से लगातार चौथी बार चुनाव जीता। जदयू के कौशलेंद्र कुमार भी 1,35,608 मतों की बढ़त के साथ चौथी बार जीत की ओर बढ़ रहे हैं। जीत की हैट-ट्रिक लगाने वाले नेताओं में वाराणसी से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, लखनऊ से केंद्रीय मंत्री राजनाथ सिंह, उधमपुर से भाजपा नेता जितेंद्र सिंह, मथुरा से हेमा मालिनी, बुलंदशहर से भोला सिंह, गौतमबुद्ध नगर से महेश शर्मा, उन्नाव से साक्षी महाराज, जम्मू से जुगल किशोर शामिल हैं। नागपुर से केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी भी हैट-ट्रिक की ओर बढ़ रहे हैं।

नोटा को देश में सर्वाधिक मत मिलने का नया रिकार्ड

नईदुनिया प्रतिनिधि, इंदौर: लोकसभा चुनाव के लिए मंगलवार को वोटों की गिनती शुरू होने के बाद जब लोगों की निगाहें एक-एक सीट के उतार-चढ़ाव पर टिकी थीं, तब इंदौर ऐसे तीन रिकार्ड अपने नाम करने के लिए वोटों की गिनती कर रहा था, जोकि देश के राजनीतिक इतिहास में पहले नहीं बने थे। यहां के भाजपा प्रत्याशी शंकर लालवानी ने न सिर्फ सबसे ज्यादा वोट प्राप्त किए बल्कि अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी को सबसे ज्यादा मतों के अंतर से पराजित भी किया। शंकर लालवानी को 12 लाख, 26 हजार 751 वोट प्राप्त हुए, जबकि उनके निकटतम प्रतिद्वंद्वी बसपा के संजय सोलंकी को मात्र 51 हजार 659 मत ही मिले। शंकर लालवानी ने 11 लाख, 75 हजार, 92 मतों से देश में सर्वाधिक वोटों से चुनाव जीता। इसके अलावा इंदौर के नाम नोटा (इनमें से कोई नहीं) को सबसे ज्यादा वोट मिलने का रिकार्ड भी दर्ज हो गया। यहां दो लाख, 18 हजार, 674 लोगों ने नोटा का विकल्प चुना। यह अब तक हुए चुनाव में नोटा को किसी भी विधानसभा और लोकसभा चुनाव में मिले सर्वाधिक मत हैं। वर्ष 2019 के चुनाव में बिहार के गोपालगंज में नोटा को सबसे अधिक 51 हजार, 660 मत मिले थे।

****

राष्ट्रीय संस्करण
वर्ष 7 अंक 358
मूल्य ₹8.00 नई दिल्ली, बुधवार, 5 जून, 2024
दैनिक जागरण
www.jagran.com
पृष्ठ 14
विश्व पर्यावरण दिवस

बहुमत के आंकड़े से चूकी भाजपा

पिछले दो चुनावों में बंपर जीत के बाद इस जीत का स्वाद भाजपा के लिए साबित हुआ कसैला

कई कद्दावर मंत्री और नेता चुनावी जंग हारे, जनता ने मजबूत लोकतंत्र के लिए विपक्ष को किया सशक्त

जितेंद्र शर्मा • जागरण

नई दिल्ली: बीते दो लोकसभा चुनावों में भाजपा को बड़ा बहुमत देने वाली जनता ने इस बार चौंकाने वाला जनादेश दिया है। आइएनडीआइए के रूप में एकजुट विपक्ष के सामने मुख्य रूप से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के चेहरे पर चुनाव मैदान में उतरी भाजपा का हाथ तो मतदाता लगातार तीसरी बार भी थामे रहे, लेकिन इतने सधे अंदाज में कि बहुमत के लिए आवश्यक 272 सीटों से कुछ पहले लाकर छोड़ दिया। 18वीं लोकसभा की संतुलित तस्वीर सजाते हुए जनता ने विपक्षी गठबंधन को 234 सीटों के साथ ताकत और हौसला दिया है तो प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में 10 वर्ष तक चली राजग सरकार और उसके निर्णयों पर भी भरोसे की मुहर लगाई है। यही कारण है कि भाजपा को 240 सीटों सहित राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) की झोली में 291 सीटें डालकर जनादेश दिया है-अबकी बार फिर राजग सरकार। वहीं, दो राज्यों ओडिशा में भाजपा एवं आंध्र प्रदेश में राजग की सरकार बनने जा रही है।

18वीं लोकसभा के लिए 543 सीटों पर सात चरणों में हुए चुनाव परिणामों को लेकर सत्ता पक्ष और विपक्ष के दावों का पटाक्षेप मंगलवार को मतगणना के साथ हो गया। मतगणना शुरू होने से लेकर अंत तक ईवीएम से निकलते रहे वोटों का रुझान लगभग एक समान था। कुछ सीटों पर उतार-चढ़ाव को छोड़ दिया जाए तो यह परिणाम लगभग स्थिर ही रहा कि भाजपा 250 का आंकड़ा, तो राजग 300 का आंकड़ा पार नहीं कर पाया। इसी तरह विपक्ष की उम्मीदें भी 234 के पास आकर ऐसी ठिठकीं कि उससे आगे नहीं बढ़ सकीं। निस्संदेह लगातार तीसरी बार केंद्र की सत्ता में वापसी भाजपा के लिए बड़ी उपलब्धि है, लेकिन 2014 व 2019 के लोकसभा चुनाव की बंपर जीत के परिणामों ने उसकी उम्मीदों को ऐसा आसमान दे दिया था कि इस जीत का स्वाद भी भाजपा के नेताओं-कार्यकर्ताओं के लिए कसैला हो गया। इन परिणामों का संकेत साफ है कि विपक्ष के नेता मन मुताबिक मुद्दों के सहारे नैरेटिव गढ़ने में काफी हद तक सफल रहे। जातिगत जनगणना भले ही मुद्दा बनती न दिखी हो, लेकिन विपक्ष की जातीय बिसात ने भाजपा की राह में किस तरह रोड़े अटकाए, यह खास तौर पर उत्तर प्रदेश में दिखाई दिया। 80 लोकसभा सीटों वाले इस सबसे बड़े राज्य में सपा और कांग्रेस ने मिलकर चुनाव लड़ा। यहां अखिलेश की रणनीति कारगर साबित हुई और सपा 37 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी बन रही है और भाजपा 62 से घटकर 33 सीटों पर सिमट गई।

मध्य प्रदेश में दशकों बाद छिंदवाड़ा सीट कांग्रेस से छीनकर क्लीन स्वीप करते हुए भाजपा ने 29 सीटों पर जीत दर्ज की है। गुजरात और छत्तीसगढ़ में कांग्रेस सिर्फ एक-एक सीट जीत सकी तो दिल्ली में कांग्रेस और आम आदमी पार्टी में से कोई भी भाजपा को क्लीन स्वीप से नहीं रोक सका। हालांकि, ओडिशा में बीजू जनता दल के निराशाजनक प्रदर्शन को छोड़ दें तो बाकी राज्यों में क्षेत्रीय क्षत्रपों ने जरूर राजग के लिए चुनौती खड़ी की है। मसलन, उप्र में सपा, तमिलनाडु में द्रमुक और बंगाल में तृणमूल कांग्रेस ने भाजपा की उम्मीदों को झटका दिया है। भाजपा उप्र के गढ़ में जरूर ठिठक गई, लेकिन ओडिशा में भारी जीत हासिल की। लोकसभा सीटों पर भी और विधानसभा में भी। केरल में भाजपा खाता खोलने में कामयाब रही तो तेलंगाना में अपने चार के पिछले आंकड़े को दोगुना कर लिया। तमिलनाडु में भी भाजपा का वोट प्रतिशत बढ़ा है।

गठबंधन युग की वापसी >> संपादकीय

- मतगणना शुरू होने से लेकर अंत तक ईवीएम से निकलते रहे वोटों का रुझान था लगभग एक समान
- उप्र में सपा-कांग्रेस ने मिलकर लड़ा चुनाव, जातीय बिसात ने भाजपा की राह में अटकाए रोड़े
- चुनाव के दौरान विपक्ष के नेता मन मुताबिक मुद्दों के सहारे नैरेटिव गढ़ने में काफी हद तक रहे सफल

नरेन्द्र मोदी करेंगे जवाहर लाल नेहरू के रिकार्ड की बराबरी

भाजपा अपने राजग सहयोगियों के साथ बहुमत का आंकड़ा पार गई है, इसलिए लगभग तय है कि प्रधानमंत्री के रूप में जल्द ही नरेन्द्र मोदी तीसरी बार शपथ ग्रहण करेंगे। इसके साथ ही वह देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के लगातार तीन बार प्रधानमंत्री बनने के रिकार्ड की बराबरी कर लेंगे।

>> लोकसभा चुनाव के परिणाम आने के बीच मंगलवार को नई दिल्ली में भाजपा मुख्यालय पहुंचे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का भव्य स्वागत किया गया • प्रेट्र

यह रुकने का और थमने का समय नहीं : मोदी

- छह दशक के बाद पहली बार लगातार तीसरी बार जीत को बताया ऐतिहासिक
- विपक्ष पर कटाक्ष, कहा- जितनी सीटें भाजपा को मिलीं, उतनी एकजुट विपक्ष को भी नहीं

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : लगातार तीसरी बार राजग के स्पष्ट बहुमत से साथ जीत हासिल करने के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने साफ कर दिया है कि पिछले 10 वर्षों से जारी जनकल्याणकारी, महिला सशक्तीकरण और विकास की योजनाओं को जारी रखा जाएगा। विकसित भारत के निर्माण का संकल्प दोहराते हुए उन्होंने कहा कि यह रुकने का, थमने का समय नहीं है। प्रधानमंत्री ने भ्रष्टाचारियों को मिल रहे राजनीतिक समर्थन पर चिंता जताते हुए साफ किया कि चुनौतियों के बाद भी भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई जारी रहेगी।

पिछली बार की तुलना में कम सीटें मिलने पर विपक्ष के हमलों का जवाब देते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भाजपा ने अकेले जितनी सीटें जीती हैं, उतनी सीटें एकजुट विपक्ष भी नहीं जीत पाया। कांग्रेस को आईना दिखाते हुए प्रधानमंत्री ने अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, ओडिशा और आंध्र प्रदेश के विधानसभा चुनावों में भाजपा और सहयोगी दलों की जीत का भी हवाला दिया। कहा- इन राज्यों में कांग्रेस का सूपड़ा साफ हो गया है। हालत यह है कि उनके उम्मीदवारों के लिए जमानत बचाना भी मुश्किल हो गया।

उन्होंने केरल में पहली बार एक सीट पर जीत को कई पीढ़ियों से कार्यकर्ताओं के संघर्ष और बलिदान का परिणाम बताया। चुनाव प्रक्रिया पर विपक्ष के लगातार हमलों के बीच निष्पक्ष और पारदर्शी चुनाव कराने के लिए चुनाव आयोग का आभार जताते हुए प्रधानमंत्री ने पूरी दुनिया में भारत की साख में चार चांद लगाने वाला बताया। प्रधानमंत्री ने साफ किया कि यह जनादेश पिछले 10 वर्षों से उनके नेतृत्व में राजग सरकार की नीतियों के प्रति जनता का समर्थन है।

प्रधानमंत्री ने राजग की तीसरी बार की जीत को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि 1962 के बाद पहली बार लगातार दो बार सत्ता में आने के बाद तीसरी बार किसी सरकार को जीत मिली है। प्रधानमंत्री ने बिहार और आंध्र प्रदेश में राजग के शानदार प्रदर्शन का श्रेय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू को दिया। अपनी मां के निधन के बाद पहली बार चुनावी जीत को भावुक पल बताते हुए कहा- चुनाव प्रचार के दौरान माताओं-बहनों से मिले प्यार ने मां की कमी महसूस नहीं करने दी। तीसरे कार्यकाल में बड़े फैसलों के प्रति आशंकाओं पर मोदी ने कहा कि इस कार्यकाल में भी बड़े फैसलों का दौर जारी रहेगा। इसका नया इतिहास बनेगा। यह मोदी की गारंटी है।

विमर्श

तीसरे कार्यकाल में बदलेगी राजनीति: लोकसभा चुनाव के जनादेश से यह साबित होता है कि नरेन्द्र मोदी भारतवर्ष के एक सर्वमान्य नेता के तौर पर उभरे हैं। **हर्ष वर्धन त्रिपाठी** का दृष्टिकोण।

विपक्ष की गारंटियों के बावजूद एनडीए को बहुमत: चुनाव प्रचार के दौरान विपक्षी गठबंधन आइएनडीआइए ने जनता के समक्ष मुफ्त की गारंटियों का वादा भी किया, इसके बावजूद उसे बहुमत नहीं मिल सका, जो एनडीए के प्रति लोगों के भरोसे को दर्शाता है। **डा. अश्विनी महाजन** का आलेख। • पेज-7

उत्तरकाशी में चार ट्रेकरों की ठंड से मौत

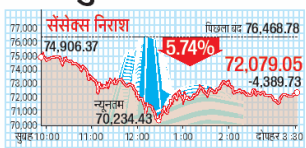

उत्तरकाशी : उत्तराखंड के भटवाड़ी मल्ला-सिल्ला-कुशकल्याण-सहस्रताल की ट्रेकिंग पर गए चार ट्रेकरों की ठंड से मौत की सूचना है, 13 की स्थिति गंभीर है। उत्तरकाशी स्थित जिला आपदा प्रबंधन कार्यालय को मंगलवार को यह जानकारी मिली। (पेज-10)

आइसीसी T20 विश्व कप 2024
आज का मैच
भारत vs आयरलैंड
रात 8 बजे | स्थान : न्यूयार्क
प्रसारण: स्टार स्पोर्ट्स पर

भाजपा को बहुमत न मिलने से औंधे मुंह गिरे शेयर बाजार

- 4,389 अंक गिरकर दो माह के निचले स्तर पर बंद हुआ सेंसेक्स
- 31 लाख करोड़ रुपये घटा पूंजीकरण

मुंबई, प्रेट्र: आम चुनावों में भाजपा के बहुमत से दूर रहने के संकेतों के बाद मंगलवार को घरेलू शेयर बाजारों में प्रतिशत के लिहाज से बीते चार वर्षों की सबसे बड़ी एकदिनी गिरावट दर्ज की गई। सेंसेक्स 4,389.73 अंक या 5.74 प्रतिशत गिरकर दो माह के निचले स्तर 72,079.05 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान सेंसेक्स 6,234.35 अंक या 8.15% गिरकर करीब पांच माह के निचले स्तर 70,234.43 अंक पर आ गया था।

इसी तरह, एनएसई का निफ्टी 1,379.40 अंक या 5.93 प्रतिशत के बड़े नुकसान के साथ 21,884.50 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान यह 1,982.45 अंक या 8.52 प्रतिशत गिरकर 21,281.45 अंक पर आ गया। इससे पहले 23 मार्च, 2020 को कोरोना महामारी के कारण लगाए गए लाकडाउन के कारण सेंसेक्स और निफ्टी में करीब 13 प्रतिशत की गिरावट हुई थी। इस गिरावट से निवेशकों की संपत्ति में करीब 31 लाख करोड़ रुपये की कमी आई है और बीएसई में सूचीबद्ध सभी कंपनियों का बाजार पूंजीकरण घटकर 394.83 लाख करोड़ रुपये रह गया है। सोमवार को यह 13.78 लाख करोड़ बढ़कर 425.91 लाख करोड़ के नए उच्च स्तर पर पहुंच गया था। सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों, बैंकों, अदाणी समूह की कंपनियों और रिलायंस इंडस्ट्रीज समेत अधिकांश कंपनियों के शेयरों में बड़ी गिरावट रही है। सोमवार को एक्जिट पोल में फिर राजग सरकार बनने के अनुमान को देखते हुए बाजार करीब तीन प्रतिशत की तेजी के साथ नए रिकार्ड पर था।

नई सरकार से तय होगी बाजार और आर्थिकी की दिशा पेज>>10

जदयू और तेदेपा ने किया साफ, वे राजग और मोदी के साथ

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : लोकसभा चुनाव के नतीजे आने के साथ ही राजग के दो प्रमुख सहयोगी दलों जनता दल यूनाइटेड (जदयू) और तेलुगु देसम पार्टी (तेदेपा) पर डोरे डालने की विपक्षी गठबंधन की कोशिशों के बीच दोनों दलों ने साफ किया है कि वे राजग के साथ हैं और साथ ही रहेंगे। चंद्रबाबू नायडू ने इस बीच प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह से फोन पर बात की है। साथ ही राजग को पूर्ण बहुमत मिलने पर बधाई भी दी है।

केसी त्यागी

चंद्रबाबू नायडू

चुनावी नतीजे आने के बाद तेज हुई राजनीतिक हलचल के बीच जदयू के राष्ट्रीय महासचिव केसी त्यागी ने सबसे पहले अपनी प्रतिक्रिया दी और कहा कि पार्टी पूरी मजबूती से राजग और मोदी के साथ है। पार्टी का यह अंतिम फैसला है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में तीसरी बार राजग सरकार का गठन होगा। जदयू प्रवक्ता राजीव रंजन ने भी साफ किया कि पार्टी राजग के साथ है और रहेगी। प्रधानमंत्री मोदी देश का नेतृत्व करेंगे। तेदेपा ने भी स्पष्ट किया कि वह राजग का अभिन्न हिस्सा है और आगे भी रहेगी। तेदेपा नेता चंद्रबाबू नायडू ने प्रधानमंत्री मोदी व गृह मंत्री अमित शाह से फोन पर चर्चा की और राजग को पूर्ण बहुमत मिलने पर बधाई दी। उन्होंने एक्स पर पोस्ट करके भी कहा, 'धन्यवाद, नरेन्द्र मोदी जी! आंध्र प्रदेश की जनता की ओर से मैं आपको लोकसभा और आंध्र प्रदेश विधानसभा चुनावों में राजग की जीत पर बधाई देता हूं। यह जनादेश हमारे गठबंधन और राज्य के लिए इसके विजन में उनके भरोसे को दर्शाता है।'

पंजाब में आप का मिशन-13 फेल

चंडीगढ़ : पंजाब में आम आदमी पार्टी का मिशन-13 पूरी तरह फेल हो गया है। इसके विपरीत गुटबाजी से जूझ रही कांग्रेस ने सात सीटें जीतकर अपना दम-खम दिखाया है। दोनों पार्टियां विपक्षी गठबंधन आइएनडीआइए की घटक हैं परंतु पंजाब में अलग-अलग चुनाव लड़ीं। पहली बार अपने बूते राज्य की सभी सीटों पर उतरी भाजपा खाता भी नहीं खोल पाई तो शिरोमणि अकाली दल भी कुछ खास नहीं कर पाया। (पेज-4)

दिल्ली में लगातार तीसरी बार सातों सीटों पर खिला कमल

मनोज तिवारी।

रणविजय सिंह, जागरण, नई दिल्ली: लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश सहित कुछ राज्यों में आश्चर्यजनक नतीजों के बावजूद दिल्ली प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ खड़ी रही। कांग्रेस व आम आदमी पार्टी (आप) का गठबंधन भी दिल्ली में भाजपा का विजय रथ नहीं रोक पाया। इस वजह से दिल्ली की सातों लोकसभा सीटों पर लगातार तीसरी बार कमल खिला और भाजपा के सातों उम्मीदवार- मनोज तिवारी, योगेंद्र चंदौलिया, बांसुरी स्वराज, रामवीर विधूड़ी, हर्ष मल्होत्रा, प्रवीण खंडेलवाल और कमलजीत सेहरावत चुनाव जीतने में कामयाब रहे। हालांकि भाजपा प्रत्याशियों की जीत का अंतर पिछले चुनाव से कम रहा।

पिछले चुनाव की तुलना में भाजपा को 2.5% कम वोट मिले पेज>>9

हर्ष मल्होत्रा।

योगेंद्र चंदौलिया।

प्रवीण खंडेलवाल।

बांसुरी स्वराज।

कमलजीत सेहरावत।

रामवीर विधूड़ी।

समन्वय की कमी

2004 के बाद पहली बार चुनावी प्रक्रिया में निष्क्रिय दिखे आरएसएस के स्वयंसेवक, भाजपा का बड़े पैमाने पर बाहरी नेताओं को शामिल कर टिकट देना भी संघ को नहीं आया रास

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से दूरी भी भाजपा को पड़ी भारी

नीलू रंजन • जागरण

नई दिल्ली : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भाजपा का चोली दामन का साथ रहा है। माना जाता रहा है कि भाजपा की उपलब्धियों को जनता तक पहुंचाने और कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने में भी संघ की भूमिका होती है, लेकिन इस बार लोकसभा चुनाव में दोनों दूर-दूर रहे। यूं कहा जा सकता है कि भाजपा ने संघ का सहयोग मांगा ही नहीं। पूरे देश में फैले और आम लोगों के बीच सामाजिक व संपर्क कार्यों में लगे संघ के प्रचारक और स्वयंसेवक चुनाव प्रक्रिया के दौरान पूरी तरह से निष्क्रिय दिखे। वर्ष 2004 के चुनाव में आरएसएस के स्वयंसेवकों की ऐसी निष्क्रियता दिखी थी और इंडिया शाइनिंग के नारे के बावजूद तब भाजपा को सत्ता से बाहर होना पड़ा था।

आरएसएस के एक वरिष्ठ पदाधिकारी के अनुसार, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भाजपा के प्रति स्वयंसेवकों में कोई नाराजगी नहीं है, लेकिन भाजपा ने इस बार संघ के सहयोग के बिना ही 'अबकी बार, 400 पार' के लक्ष्य को हासिल करने का फैसला किया। 2014 और 2019 के आम चुनाव में आरएसएस ने भाजपा उम्मीदवारों को जिताने के लिए पूरी ताकत झोंक दी थी। 2004 में आरएसएस ने अटल बिहारी वाजपेयी सरकार के कई फैसलों के विरोध के कारण चुनाव प्रक्रिया से बाहर रहने का फैसला किया था।

प्रतीकात्मक

उच्च पदस्थ सूत्रों के अनुसार, दूसरे दलों के नेताओं को भाजपा में शामिल करने और उन्हें टिकट देने में भी संघ की राय नहीं ली गई। यही नहीं, दूसरे दलों से आए 100 से अधिक लोगों को टिकट भी दे दिया गया। ऐसे नेताओं के साथ क्षेत्र में सक्रिय स्वयंसेवकों का समन्वय बनाना भी आसान नहीं हुआ। वैसे असम गण परिषद से सर्वानंद सोनेवाल और कांग्रेस से हिमंत बिस्वा सरमा को लाकर भाजपा सफलता की कहानी लिख चुकी है। हालांकि, ये बात भी है कि असम में इन नेताओं को लाने के पहले संघ की राय भी ली गई और वहां दशकों से काम कर रहे संघ के प्रचारकों व स्वयंसेवकों ने उनके नेतृत्व में भाजपा को जिताने में सक्रिय भूमिका भी निभाई थी। मगर धीरे-धीरे भाजपा ने संघ से सलाह लेना पूरी तरह से बंद कर दिया। यहीं नहीं, दूसरे दलों से आए नेताओं को भाजपा ने अपने प्रमुख प्रवक्ता के रूप में पेश किया, जो चैनलों पर पार्टी के चेहरे के रूप में देखे जाते हैं। इन प्रवक्ताओं के साथ भी संघ के स्वयंसेवकों का जुड़ाव नहीं हो पाया।

एक वरिष्ठ पदाधिकारी के अनुसार, एक सामाजिक संगठन के नाते चुनाव के पहले आरएसएस के प्रचारकों ने अपने-अपने क्षेत्रों में प्रबुद्ध लोगों के साथ बैठक जरूर की, लेकिन सीधे तौर पर भाजपा को वोट देने का संदेश नहीं दिया। इसके बजाय उन्हें अपने क्षेत्र के अच्छे उम्मीदवारों को वोट देने को कहा गया।

****

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION
Scan QR CODE to get UPSC Preparation Insights from VisionIAS Topper's Talk
8468022022 WWW.VISIONIAS.IN
UPSC सिविल सेवा परीक्षा 2023 में चयनित सभी उम्मीदवारों को हार्दिक बधाई
हिंदी माध्यम में 35+ चयन CSE 2023 में
from various programs of VISIONIAS
हिन्दी माध्यम टॉपर
1 AIR ADITYA SRIVASTAVA
ABHYAAS PRELIMS 2023, 2022 & 2021, ABHYAAS MAINS 2023 & 2022
2 AIR ANIMESH PRADHAN
ABHYAAS, ALL INDIA GS TEST, SOCIOLOGY TEST, LAKSHYA, INTERVIEW
5 AIR RUHANI
ABHYAAS, INTERVIEW GUIDANCE
53 AIR मोहन लाल
लाइव/ऑनलाइन कक्षाएं भी उपलब्ध
फाउंडेशन कोर्स
सामान्य अध्ययन 2025
प्रारंभिक, मुख्य परीक्षा और निबंध के लिए महत्वपूर्ण सभी टॉपिक का विस्तृत कवरेज
दिल्ली: 11 जून, 9 AM | 14 मई, 9 AM
अधिक जानकारी, रजिस्टर या फ्री काउंसलिंग के लिए हमारे एक्सपर्ट से बात करें
नि:शुल्क डेमो क्लासेस उपलब्ध
लक्ष्य प्रीलिम्स और मेन्स इंटीग्रेटेड मेंटरिंग प्रोग्राम 2025
Lakshya
Starts : 11 JUNE
CSAT CLASSES 2025
व्यक्तिगत मेंटरशिप सपोर्ट
समग्र कवरेज और नवाचारी अध्यापन तकनीक
विस्तृत एवं अद्यतन अध्ययन सामग्री
एकीकृत मूल्यांकन और फीडबैक
तकनीकी सहायता
ENGLISH MEDIUM 7 JUNE 6 PM | हिन्दी माध्यम 13 जून 6 PM
DELHI • 1st floor, Apsara Arcade, Near Gate-7 Karol Bagh Metro Station, Delhi | CONTACT: 8468022022, 9019066066
• GTB Nagar Enquiry and Classroom Centre, Above GTB Nagar Metro Station Gate No. 2, Delhi - 110009
AHMEDABAD | BENGALURU | BHOPAL | CHANDIGARH | GUWAHATI | HYDERABAD | JAIPUR | JODHPUR | LUCKNOW | PRAYAGRAJ | PUNE | RANCHI

जातीय समीकरण को पहचानने में भी भाजपा से हुई चूक, उन सीटों पर हारी जहां से शत-प्रतिशत जी की थी उम्मीद

टिकट बंटवारे में चूकी, नहीं दोहरा पाई पिछला प्रदर्शन

मनोज त्रिपाठी • जागरण

लखनऊ: यूपी में लोकसभा की 80 सीटों के परिणाम भाजपा को सदमे में डालने वाले रहे तो इसके पीछे कई कारण हैं। टिकट बंटवारे में गड़बड़ी के और पांच वर्षों तक सांसदों की निष्क्रियता तो इस परिणाम के मुख्य कारण रहे ही, जातीय समीकरण को पहचानने में भी भाजपा से चूक हुई। इसके चलते भाजपा उन सीटों पर भी चुनाव हार गई, जहां से उसे जीत की शत-प्रतिशत उम्मीद थी।

चुनाव के पहले चरण से ही पेपर लीक मामले को चुनावी मुद्दा बनाकर युवाओं को कांग्रेस व सपा ने अपने पक्ष में करना शुरू कर दिया था। इस मुद्दे को कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, राहुल गांधी, सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव सहित समूचे विपक्ष ने सातों चरणों में हर मौके पर उठाया। दूसरी ओर भाजपा ने इस मामले में अपना पक्ष रखने की जरूरत भी नहीं समझी। युवाओं में यह बड़ा फैक्टर बना और इसका नुकसान भाजपा को उठाना पड़ा। अग्निपथ योजना को भी विपक्ष बड़ा चुनावी फैक्टर बनाने में सफल रहा, जिसकी काट भाजपा नहीं ढूंढ पाई। विपक्ष की ओर से उछाले गए संविधान बदलने और आरक्षण समाप्त करने के मुद्दे को भी भाजपा नहीं संभाल पाई।

टिकट वितरण में भी चूक : इसके अलावा टिकट वितरण में भी चूक हुई। मौजूदा 49 सांसदों को भाजपा ने चुनावी मैदान में उतारा। इनमें से ज्यादातर सांसदों ने पांच वर्षों तक अपने-अपने लोकसभा क्षेत्रों में मतदाताओं से दूरी बनाए रखी। वह केवल मोदी के नाम पर इस बार भी चुनाव जीतने का सपना देख रहे थे। मुफ्त अनाज योजना सहित केंद्र की अन्य योजनाओं से मतदाता जरूर प्रभावित थे, लेकिन कांग्रेस ने पांच की बजाय 10 किलो अनाज मुफ्त में देने की घोषणा कर भाजपा को पीछे ढकेल दिया। सपा की आटा व डाटा मुफ्त देने की योजना का असर भी मतदाताओं पर हुआ।

ज्यादा प्रभावी नहीं रहा राम मंदिर का मुद्दा: लोगों की भावनाओं से जुड़े राम मंदिर के मुद्दे से भाजपा को काफी उम्मीदें थीं। अधिकतर सीटों पर प्रचार के दौरान राम मंदिर के मुद्दे को भाजपा ने उठाया भी, लेकिन इसका चुनावी लाभ पार्टी को नहीं मिल सका।

पन्ना प्रमुखों का प्रयोग भी नहीं हुआ सफल: भारतीय जनता पार्टी ने इस बार लोकसभा चुनाव जीतने के लिए पन्ना प्रमुखों की भी तैनाती की थी। वोटर लिस्ट के हिसाब से हर पन्ने का प्रभारी बनाया गया था। इस बार लोकसभा चुनाव में भाजपा का यह प्रयोग भी सफल नहीं साबित हुआ। गृह मंत्री अमित शाह से लेकर संगठन के स्तर पर पन्ना प्रमुखों से काफी उम्मीदें लगाई गई थीं कि यह मैनेजमेंट चुनाव जीत का बड़ा हथियार साबित होगा, लेकिन प्रमुख लोगों को मतदान केंद्रों तक न ला सके।

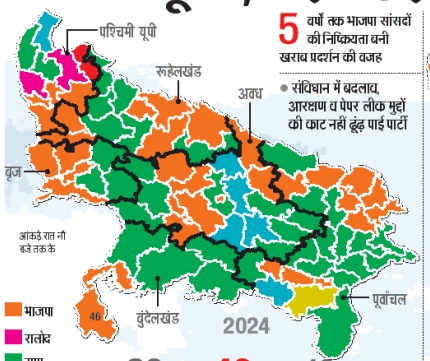

80 सीटों के परिणाम भाजपा को सदमे में डालने वाले रहे

49 मौजूदा सांसदों को भाजपा ने इस बार मैदान में उतारा

10 किलो अनाज मुफ्त में देने की घोषणा कर भाजपा को पीछे ढकेल दिया

5 वर्षों तक भाजपा सांसदों की निष्क्रियता बनी खराब प्रदर्शन की वजह

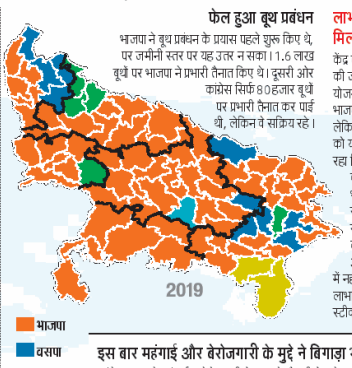

- संविधान में बदलाव, आरक्षण व पेपर लीक मुद्दों की काट नहीं ढूंढ़ पाई पार्टी

फेल हुआ बूथ प्रबंधन

भाजपा ने बूथ प्रबंधन के प्रयास पहले शुरू किए थे, पर जमीनी स्तर पर यह उतर न सका। 1.6 लाख बूथों पर भाजपा ने प्रभारी तैनात किए थे। दूसरी ओर कांग्रेस सिर्फ 80 हजार बूथों पर प्रभारी तैनात कर पाई थी, लेकिन वे सक्रिय रहे।

लाभार्थियों से नहीं मिला कोई लाभ

केंद्र व राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं के लाभार्थियों से भाजपा को बड़ी उम्मीदें थीं, लेकिन विपक्ष मतदाताओं को यह समझाने में सफल रहा कि यह तो सरकार की जिम्मेदारी ही है। भाजपा ने लाभार्थी संपर्क अभियान संचालित किया, लेकिन उसका भी असर चुनाव परिणामों में नहीं दिखाई दिया। लाभार्थी परिवारों के घर पर स्टीकर भी लगाए गए थे।

इस बार महंगाई और बेरोजगारी के मुद्दे ने बिगाड़ा भाजपा का खेल

कांग्रेस-सपा ने महंगाई व बेरोजगारी के मुद्दे पर भाजपा को घेरा, जिसका जवाब भाजपा के पास नहीं था। जरूरी वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि के अलावा बेरोजगारों को नौकरी के मुद्दे पर भाजपा पलटवार न कर सकी। कांग्रेस ने 30 लाख बेरोजगारों को नौकरी देने का मुद्दा उठाया, जो भाजपा के खराब प्रदर्शन पर प्रभावी रहा।

चिर साध पूर्ण होने के बाद भी ढह गया भाजपा का दुर्ग

रमाशरण अवस्थी • जागरण

उत्तर प्रदेश 80 सीटें

वर्ष	भाजपा		सपा		बसपा		कांग्रेस		अपना दल	
	सीट	वोट%	सीट	वोट%	सीट	वोट%	सीट	वोट%	सीट	वोट%
2019	62	49.98	5	18.18	10	19.45	1	6.36	2	1.21
2024	32	41.37	37	33.41	0	9.37	7	9.68	1	0.88

अयोध्या : देश का राजनीतिक परिदृश्य परिवर्तित करने में सक्षम रामनगरी अयोध्या का नतीजा निश्चित तौर पर भाजपा के लिए आत्ममंथन व चिंतन का विषय है। यह परिणाम पार्टी को वही टीस देगा, जो टीस अमेठी हारने पर कांग्रेस को हुई थी। 18वीं लोकसभा के मोर्चे पर भी फैजाबाद से लगातार तीन बार जीत का मिथक नहीं टूटा। जिन लल्लू सिंह पर मिथक तोड़ने का दारोमदार था, वह करीब 55 हजार मतों से हारे।

लल्लू सिंह भाजपा के प्रत्याशी थे, कीर्तिमान रचने का उनका स्वप्न सपा प्रत्याशी अवधेश प्रसाद ने तोड़ा। फैजाबाद से अब तक कोई भी लगातार तीन बार जीत का कीर्तिमान नहीं बना सका है। लल्लू सिंह का दो बार जीत का रिकार्ड भी शानदार था। 2014 में तो उन्होंने दो लाख 81 हजार मतों से जीत हासिल की थी। 2019 के चुनाव में उन्हें जरूर कुछ संघर्ष करना पड़ा, किंतु सामने सपा-बसपा गठबंधन की मजबूत चुनौती को देखते हुए 65,477 मतों से उनकी जीत भी खूब प्रतिष्ठित-प्रशंसित हुई थी।

लल्लू सिंह के लिए इस बार तो राह और भी अनुकूल मानी जा रही थी। रामजन्मभूमि पर पांच सदी के बाद भव्य मंदिर निर्माण का स्वप्न इसी चुनावी वर्ष के पहले महीने में साकार हुआ था। भव्य राम मंदिर के साथ 50 हजार करोड़ की लागत से अयोध्या नित्य श्रेष्ठतम सांस्कृतिक नगरी के स्वरूप में ढल रही है। पांच मई को भाजपा के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का आरोह शिखर पर था, जब भाजपा प्रत्याशी के समर्थन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रामलला का दर्शन कर मंदिर के सामने से ही रामनगरी में रोड शो आरंभ किया। परिणाम आने तक ऐसे आरोह की कलई खुल गई और याद आने लगा कि अयोध्या के कायाकल्प के नाम पर किस ढिठाई से स्थानीय व्यापारियों एवं नागरिकों का दमन किया गया। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के मुकाबले नागरिक अधिकारों की आवाज निर्णायक होकर उभरी।

चुनाव के प्रारंभिक दौर में ही भाजपा प्रत्याशी का वक्तव्य प्रसारित हुआ कि संविधान बदलने के लिए 400 से अधिक सीटों की जरूरत होगी और विपक्ष ने इसी वीडियो को आधार बनाकर यह आरोप गढ़ने में कोई कसर नहीं छोड़ी कि भाजपा संविधान बदलने की तैयारी में है। भाजपा का यह रवैया नेतृत्व के रुख से भी परिभाषित होता रहा और इसकी प्रतिक्रिया में जो संकल्प सज्जित हुए, वह भाजपा प्रत्याशी को भगवा गढ़ में ही सबक सिखाने वाले सिद्ध हुए।

इस बार मुद्दों पर भारी रहा जातियों का समीकरण

जास लखनऊ: उप्र में चुनावी मुद्दे क्षेत्रवार बदलते रहते हैं, लेकिन इस बार के चुनाव में प्रत्याशियों के चयन को लेकर असंतोष हर जगह नजर आया। इसके अलावा जातियों का गठजोड़ मुद्दों पर हावी होता गया। न राम मंदिर का प्रभाव देखने को मिला और न ही ध्रुवीकरण मुद्दा बन पाया। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में संजीव बालियान को टिकट दिए जाने का जो विरोध शुरू हुआ था, उसका संदेश आसपास के क्षेत्रों में गया। इससे भाजपा को दो सीटों का नुकसान उठाना पड़ा। रुहेलखंड के पीलीभीत में भाजपा के जितिन प्रसाद ने जीत दर्ज कर जरूर सम्मान बचाया, लेकिन यहां कई क्षेत्रों में मुस्लिमों के साथ पिछड़ों व दलितों ने सपा-गठबंधन को मजबूती दे दी। ब्रज में हेमामालिनी की जीत इस बात का उदाहरण है कि मतदाताओं से यदि आप जुड़े हैं तो जनता आपके साथ है। अवध में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की सीट भाजपा के लिए मजबूत मानी जाती रही है, लेकिन फैजाबाद में मतदाताओं का भाजपा को नकारना आश्चर्यजनक है।

राहुल ने बरकरार रखी मां सोनिया गांधी की विरासत

पुलक त्रिपाठी • जागरण

- सोनिया गांधी के राज्यसभा जाने के बाद राहुल ने संभाली थी सीट
- अब वायनाड भी जीतने के बाद प्रियंका वाड्रा के लड़ने की चर्चा

राहुल गांधी। सोनिया गांधी।

रायबरेली : रायबरेली के राहुल... कांग्रेस के इस स्लोगन पर रायबरेली की जनता ने भी मुहर लगा दी। राहुल गांधी ने भाजपा प्रत्याशी दिनेश सिंह को करारी शिकस्त देते हुए शानदार जीत दर्ज की। राहुल को करीब सात लाख वोट मिले जबकि दिनेश प्रताप सिंह को तीन लाख ही मिले। राहुल की इस जीत ने मां सोनिया की विरासत को बरकरार रखा। राहुल की वायनाड से भी जीत के बाद चर्चा है कि अब यहां से उपचुनाव में प्रियंका वाड्रा चुनाव लड़ सकती हैं।

कांग्रेस का गढ़ रायबरेली में राहुल के लिए मां सोनिया गांधी की विरासत बचाने की जिम्मेदारी थी। राहुल को शानदार जीत दिलाने के लिए बहन प्रियंका ने प्रचार की कमान स्वयं संभाली। प्रियंका तीन मई को भाई राहुल के नामांकन में साथ रहीं। उसके बाद पांच मई को वह रायबरेली पहुंच गईं। प्रियंका ने प्रचार और जनसंपर्क के जरिये कांग्रेस के पक्ष में बेहद कम समय में जबरदस्त माहौल तैयार कर दिया। वह 18 मई तक रायबरेली में ही डटी रहीं। इन 13 दिनों में महज एक दिन के लिए वह तेलंगाना गईं। प्रवास के 13 दिनों में प्रियंका ने करीब हर दिन दो दर्जन से अधिक नुक्कड़ सभाएं व जनसपंर्क किया।

सोनिया ने कहा था, मैं अपना बेटा सौंप रही हूं

राहुल के समर्थन में कांग्रेस व सपा की साझा रैली हुई। सोनिया के साथ सपा मुखिया अखिलेश यादव भी रायबरेली पहुंचे। उन्होंने राहुल की जीत के लिए सपा कार्यकर्ताओं से आह्वान किया। इसी रैली में सोनिया ने भी अपने भावुक भाषण में कहा था कि 'मैं आपको अपना बेटा सौंप रही हूं'। परिणाम में सोनिया के इस भावुक संदेश का साफ असर दिखा।

2004 से कांग्रेस का दबदबा : रायबरेली में 2004 से कांग्रेस का दबदबा लगातार कायम है। 2019 में भाजपा प्रत्याशी रहे दिनेश प्रताप सिंह को 3,67,740 मिले थे, जबकि सोनिया गांधी 1,67,178 मतों के अंतर से जीत दर्ज की थीं।

अमेठी फिर कांग्रेस के हाथ

दिलीप सिंह • जागरण

17 दिनों में कांग्रेस उम्मीदवार किशोरी लाल ने अमेठी में रचा एक नया इतिहास

अमेठी : 2024 में कांग्रेस या कहें राहुल-प्रियंका के 'हाथ' को अमेठी की जनता का साथ मिल गया। मात्र 17 दिन में उनके उम्मीदवार किशोरी लाल शर्मा ने जीत का नया इतिहास रच दिया।

2019 में तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी को 55,120 मतों से हराकर संसद पहुंचीं केंद्रीय मंत्री स्मृति इरानी को 2024 के रण में भाजपा ने अपनी पहली लिस्ट में दो मार्च को उतार दिया था। वह तब से अमेठी आकर डट गई थीं। वहीं कांग्रेस ने केएल शर्मा को नामांकन के अंतिम दिन तीन मई को मैदान में उतारा। तब ऐसा लगा कि अमेठी का चुनाव एकतरफा स्मृति के पक्ष में चला गया है, मगर ऐसा हुआ नहीं। किशोरी के लिए प्रियंका और राजस्थान के पूर्व सीएम अशोक गहलोत ने मोर्चा संभाला तो राहुल और अखिलेश की बाबा नंद के धाम नंदमहर में हुई चुनावी सभा ने नया माहौल बनाने का काम किया। मात्र 17 दिन के चुनाव प्रचार से किशोरी ने अमेठी का रण जीत लिया।

केएल शर्मा गांधी परिवार के बेहद नजदीकी रहे और राजीव, सोनिया, कैप्टन सतीश शर्मा और राहुल का काम देखते रहे हैं। यह उनके जीवन का पहला चुनाव है।

काशी में तीसरी बार लहराया भगवा, मोदी ने लगाई हैट-ट्रिक

- कांग्रेस प्रत्याशी अजय राय को 1.52 लाख वोटों से दी शिकस्त
- बसपा के अतहर जमाल लारी की झोली में 33,766 वोट आए

जागरण संवाददाता, वाराणसी : काशी एक बार फिर भगवामय हो गई। पीएम मोदी ने वाराणसी संसदीय सीट से जीत की हैट-ट्रिक लगाकर इतिहास रचा। पहले चक्र की गिनती में पीछे रहने के बाद पीएम ने समस्त चक्रवार गणना में बढ़त बनाए रखते हुए छह लाख 12 हजार 970 मत हासिल कर अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस प्रत्याशी अजय राय को एक लाख 52 हजार 513 मतों से शिकस्त दी। अजय राय को कुल 4,60,457 वोट मिले। बसपा इस चुनाव में कुछ खास नहीं कर सकी और अतहर जमाल लारी की झोली में 33,766 वोट आए।

मतगणना सुबह आठ बजे पहड़िया मंडी में शुरू हुई। एक्जिट पोल में भाजपा की बढ़त से उत्साहित कार्यकर्ताओं ने सुबह से डेरा डाल दिया था। आइएनडीआइए के समस्त घटक दलों के कार्यकर्ता व पदाधिकारी परिणाम सुनने को अलसाए मन से भीड़ का हिस्सा बने हुए थे। प्रथम चक्र की गणना की उद्घोषणा जब हुई तो कांग्रेस उम्मीदवार अजय राय 22,805 वोट हासिल कर पीएम मोदी से 5,379 वोटों से आगे थे। यह सुनते ही भाजपा पदाधिकारियों के होश उड़ गए तो आइएनडीआइए कार्यकर्ताओं का उत्साह देखते बन रहा था। लेकिन यह खुशी कुछ पल ही रही। दूसरे चक्र में अजय राय को 14,822 तो पीएम को 24,868 वोट हासिल हुए। मोदी ने इसी चक्र से 4,707 मतों की बढ़त बनाई और अंत में एक लाख 52 हजार 513 वोटों से जीते। जीत के बाद भाजपा कार्यकर्ताओं ने मिठाइयां बांटी।

अंतत: उत्तर प्रदेश में सफल हुई कांग्रेस व समाजवादी पार्टी के गठबंधन की राजनीति

आलोक मिश्र • जागरण

लखनऊ: उत्तर प्रदेश में सपा को भले ही पिछले लोकसभा चुनाव में बसपा का साथ महंगा पड़ा हो, पर इस बार कांग्रेस का हाथ थामकर साइकिल अपनी रफ्तार बढ़ाने में कामयाब रही। विपक्षी गठबंधन के सहारे कांग्रेस भी उप्र में अपना खोया जनाधार बढ़ाने में सफल रही। गठबंधन का लाभ दोनों दलों को हुआ है। सपा व कांग्रेस ने मिलकर इस बार जिस तरह भगवा खेमे को घेरा, उसके पीछे बड़ी ताकत मुस्लिम वोटबैंक की भी रही।

सपा- कांग्रेस के साथ की बात की जाए तो लोस चुनाव से पहले 2017 के विस चुनाव में भी दोनों दलों ने आपसी गठजोड़ का फार्मूला अपनाया था। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी व सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव की जोड़ी तब पहली बार मिलकर चुनावी रण में उतरी थी। 'यूपी को ये साथ पसंद है' नारे के साथ दोनों नेता एक मंच पर आए थे, पर परिणाम मनमाफिक नहीं रहे। सपा 47 व कांग्रेस सात सीटों पर ही जीत हासिल कर सकी थी और उसे सत्ता से बाहर होना पड़ा था।

2019 लोस चुनाव में सपा, बसपा व रालोद के बीच महागठबंधन हुआ, लेकिन तीनों मिलकर भी दलित-पिछड़ों व जाट वोटबैंक को एकजुट नहीं कर पाए थे। 2014 चुनाव में शून्य पर रही बसपा ने 2019 में सपा के सहारे बड़ी छलांग लगाई और 10 सीटें जीती।

इस बार सपा के लिए कांग्रेस पर भरोसा जताना आसान भी नहीं था। शुरुआती दिनों में सीटों के बंटवारे को लेकर दोनों दलों के नेताओं के बीच खींचतान देखने को मिली थी। कांग्रेस उप्र में 17 सीटों पर चुनाव लड़ने को राजी हो गई थी। राहुल व अखिलेश ने संयुक्त सभाएं कर आक्रामक प्रचार किया, जिसके सार्थक परिणाम सामने आए हैं।

...नहीं उतारे थे उम्मीदवार : सपा-कांग्रेस गठबंधन न होने के बाद भी एक-दूसरे के बड़े नेताओं की सीट पर उम्मीदवार न उतारने की परंपरा निभा रहे हैं। 2019 लोस चुनाव दोनों दल अकेले लड़े पर सपा ने अमेठी में राहुल व रायबरेली में सोनिया के समर्थन में प्रत्याशी नहीं उतारे थे। कांग्रेस ने भी मैनपुरी में मुलायम सिंह यादव, आजमगढ़ में अखिलेश यादव और कन्नौज में डिंपल यादव के समर्थन में अपने उम्मीदवार नहीं दिए थे।

लोकसभा चुनाव में कांग्रेस के शानदार प्रदर्शन पर मंगलवार को नई दिल्ली में प्रसन्नता व्यक्त करते पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, वरिष्ठ नेता सोनिया गांधी, प्रियंका गांधी वाड्रा तथा राहुल गांधी • एएनआइ

आइएनडीआइए की बैठक में होगा नए सहयोगी बनाने का फैसला: राहुल

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली: विपक्षी दलों का गठबंधन आइएनडीआइए भले ही 272 के जादुई आंकड़े से अभी काफी दूर है, लेकिन सरकार बनाने की उम्मीदों को इसने पूरी तरह से खारिज नहीं किया है। आइएनडीआइए के घटक दलों की बुधवार को नई दिल्ली में अहम बैठक होगी, जिसमें आगे की रणनीति का फैसला होगा। इसमें यह भी फैसला होगा कि सरकार बनाने के लिए राजग के मौजूदा घटक दल लेकिन पूर्व में आइएनडीआइए के सहयोगी रहे जदयू व तेदेपा से संपर्क किया जाना है या नहीं। यह जानकारी राहुल गांधी ने आम चुनाव-2024 के परिणाम आने के बाद मंगलवार को प्रेसवार्ता में दी। वैसे इसके पहले कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने यह संकेत दिया कि कांग्रेस अपने दूसरे सहयोगी दलों के साथ विपक्ष में बैठ सकती है। राहुल से सरकार गठित करने की संभावनाओं के बारे में जब पूछा गया तो उन्होंने कहा कि हमारी बुधवार को सभी सहयोगी दलों के साथ बैठक होने वाली है। इसमें तेदेपा या जदयू से संपर्क किया जाना है या नहीं, इस पर भी फैसला होगा। राहुल ने कहा कि हम गठबंधन में शामिल हैं और कोई भी फैसला अपने आप नहीं कर सकते। सहयोगी दलों से विमर्श के बाद फैसला होगा कि कोई नया साझेदार बनाया जाना है या नहीं। उन्होंने कहा कि हिंदुस्तान के संविधान को बचाने का काम यहां की गरीब, पिछड़े, आदिवासी व ग्रामीण इलाकों की जनता ने किया है। उन्होंने जातिवार जनगणना और महालक्ष्मी योजना को लेकर किए गए वादे पर आगे काम करने की भी बात कही है।

भाजपा के लिए खतरे की घंटी, कांग्रेस को बूस्टर डोज

अनुराग अग्रवाल • जागरण

- भाजपा को मनोहर लाल का चेहरा बदलने का उठाना पड़ा नुकसान
- हरियाणा में हुड्डा ही अब असली कांग्रेस, सैलजा ने भी दिखाया दम

चंडीगढ़: हरियाणा में लोस चुनाव के नतीजे भाजपा के लिए खतरे की घंटी और कांग्रेस के लिए अच्छे राजनीतिक भविष्य का संकेत हैं। प्रदेश की 10 सीटों में से पांच पर जीत हासिल कर कांग्रेस ने बहुत कुछ पाया, जबकि भाजपा ने पांच सीटें खोकर खोया ही खोया है। भाजपा को जहां सत्ता विरोधी लहर का सामना करना पड़ा है, वहीं सिरसा, हिसार और सोनीपत में प्रत्याशियों के चयन में चूक मानी जा रही है।

कांग्रेस ने जिस तरह से पांच सीटों पर जीत हासिल की, उससे स्पष्ट है कि पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा ही राज्य में वास्तविक कांग्रेस हैं। सिरसा में कुमारी सैलजा की सीट को छोड़कर शेष नौ पर हुड्डा ने अकेले प्रचार किया था। सैलजा ने सिरसा में स्वयं के बूते जीतकर संदेश दिया कि उन्हें चुनाव में हुड्डा की जरूरत नहीं है। कुरुक्षेत्र में आइएनडीआए के उम्मीदवार डा. सुशील गुप्ता के पक्ष में भी हुड्डा के साथ एसआरके (सैलजा, रणदीप और किरण चौधरी) गुट ने भी प्रचार किया था, लेकिन भाजपा के नवीन जिंदल के सामने वह टिक नहीं सके। इससे आम आदमी पार्टी के पैर जमाने के मंसूबों पर भी पानी फिर गया है। दीपेंद्र सिंह हुड्डा ने रोहतक में प्रदेश की सबसे बड़ी जीत हासिल की। इस जीत में दीपेंद्र की स्वयं की मेहनत तो नजर आई ही, साथ ही हुड्डा का रसूख और जन प्रचार भी खूब काम आया।

भाजपा ने चुनाव प्रचार के दौरान मनोहर लाल का मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दिलाया और नायब सिंह सैनी को मुख्यमंत्री बना दिया। पार्टी को राज्य में चेहरा बदलने का फायदा नहीं हुआ, बल्कि नुकसान ही उठाना पड़ा है। ओबीसी चेहरे के रूप में नायब सिंह सैनी को सामने लाने का भाजपा को थोड़ा बहुत लाभ जरूर मिला है। नतीजे साफ हैं कि भाजपा को अपने पुराने कार्यकर्ताओं को घरों से बाहर निकालकर गले लगाना होगा और सत्ता में भागीदारी देनी पड़ेगी।

हरियाणा के चुनाव नतीजे

2019 का परिणाम	
भाजपा	10
कांग्रेस	0
2024 का परिणाम	
भाजपा	05
कांग्रेस	05

2019 का मत प्रतिशत	
भाजपा	58.21
कांग्रेस	28.51
2024 का मत प्रतिशत	
भाजपा	46.06
कांग्रेस	43.73

2024 का परिणाम/रुझान

दक्षिण हरियाणा: भाजपा ने गुड़गांव, फरीदाबाद व भिवानी-महेंद्रगढ़ लोकसभा सीटों पर जीत हासिल की।

मध्य हरियाणा: कांग्रेस ने रोहतक, सिरसा और हिसार लोकसभा सीटों पर जबरदस्त तरीके से जीत का परचम लराया।

उत्तर हरियाणा (जीटी रोड बेल्ट): चार लोकसभा सीटों में से दो करनाल और कुरुक्षेत्र पर भाजपा ने जीत हासिल की, जबकि दो सीटों सोनीपत और अंबाला में कांग्रेस ने जीत का परचम लहराया।

राज्य में भाजपा को कई सीटों पर उठाना पड़ा भितरघात का नुकसान

भाजपा को कई सीटों पर भितरघात का सामना करना पड़ा। सिरसा, हिसार और सोनीपत में पार्टी भितरघात का शिकार हुई। हिसार में भाजपा के रणजीत चौटाला को कुलदीप बिश्नोई, रणबीर गंगवा और कैप्टन अभिमन्यु के साथ कैप्टन भूपेंद्र की नाराजगी का सामना करना पड़ा। हिसार के कार्यकर्ताओं ने रणजीत चौटाला को टिकट देने का विरोध किया। सिरसा में डा. अशोक तंवर को कार्यकर्ताओं ने पसंद नहीं किया। सोनीपत में मोहन लाल बड़ौली खुले तौर पर भितरघात के आरोप संगठन की बैठकों में लगा चुके हैं। रोहतक में डा. अरविंद शर्मा को लोगों से संपर्क नहीं साधने का नुकसान हुआ है। अंबाला में भाजपा की बंतो कटारिया संगठन का सहयोग न मिलने की बात कह चुकी हैं। किसान आंदोलन व संविधान में संशोधन के विपक्ष के प्रचार का भाजपा काट नहीं निकाल सकी। किसान आंदोलन व जाट राजनीति का असर खासकर हुड्डा के पक्ष में गया है।

मोदी के काम व मजबूत संगठन से दिल्ली में लहराया भगवा

संतोष कुमार सिंह • जागरण

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत के संकल्प को साकार करने के लिए दिल्लीवासी एक बार फिर से भाजपा के साथ खड़े हुए हैं। लगातार तीसरी बार दिल्ली की सभी सात लोकसभा सीटों पर भाजपा को जीत मिली है। इस बार पहली बार आम आदमी पार्टी (आप) और कांग्रेस गठबंधन के साथ भाजपा की आमने-सामने की लड़ाई हुई, जिसमें भाजपा की जीत का प्रमुख कारण दिल्ली में मोदी सरकार द्वारा कराए गए विकास कार्य, मोदी की लोकप्रियता और भाजपा का मजबूत संगठन है।

राजधानी में आवागमन सुगम करने के लिए नरेन्द्र मोदी सरकार ने कई एक्सप्रेस-वे और सुरंग सड़क का निर्माण करवाया। जी-20 शिखर सम्मेलन के आयोजन और उस समय हुए विकास कार्यों का असर भी लोकसभा चुनाव में दिखा। दिल्लीवासियों पर इस बार भी मोदी की लोकप्रियता का जादू दिखा। उन्होंने दिल्ली में उत्तर पूर्वी दिल्ली और पश्चिमी दिल्ली में दो चुनावी सभाओं को संबोधित किया था। प्रचंड गर्मी के बाद भी हजारों की संख्या में लोग उन्हें उत्साह के साथ सुनने पहुंचे थे।

इसके साथ ही पार्टी के मजबूत संगठन ने भाजपा प्रत्याशियों की जीत की राह आसान करने में प्रमुख भूमिका निभाई। पार्टी ने प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा के नेतृत्व में मार्च की शुरुआत में प्रत्याशी घोषित होने से कई माह पहले से ही प्रत्येक बूथ को मजबूत करने का काम शुरू कर दिया था। पार्टी ने एकजुट होकर एक इकाई की तरह काम किया, जिसका परिणाम एक बार फिर सातों सीटें जीतने के रूप में सामने आया। भ्रष्टाचार के आरोपों में घिरी हुई आम आदमी पार्टी की सरकार और मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी को पार्टी ने बड़ा मुद्दा बनाया। मुख्यमंत्री आवास में राज्यसभा सदस्य स्वाति मालीवाल के साथ मारपीट और इसके आरोप में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के निजी सहायक विभव कुमार की गिरफ्तारी का मामला भी भाजपा नेताओं ने खूब उछाला। प्रचार के अंतिम दिनों में ये मुद्दे अधिक हावी रहे।

कुल सीटें 7

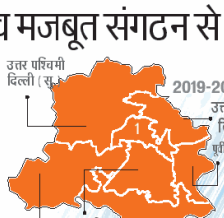

2019 का परिणाम	
भाजपा	7
कांग्रेस	0
आप	0
2024 का परिणाम	
भाजपा	7
कांग्रेस	आप गठबंधन-0

मत प्रतिशत

2019
- भाजपा : 56.85 प्रतिशत
- कांग्रेस : 22.63 प्रतिशत
- आप : 18.20 प्रतिशत

2024
- भाजपा : 54.34
- कांग्रेस : 18.94 प्रतिशत
- आप : 24.14 प्रतिशत

नोट: आंकड़े अभी प्राप्त नहीं हुए हैं

क्षेत्र और सीटें

- नई दिल्ली: एक सीट (नई दिल्ली)
- पुरानी दिल्ली: एक सीट (चांदनी चौक)
- यमुना पार: दो सीटें (पूर्वी दिल्ली व उ.पूर्वी दिल्ली)
- पश्चिमी दिल्ली: एक सीट (पश्चिमी दिल्ली)
- उत्तरी दिल्ली: एक सीट (उत्तर पश्चिमी दिल्ली)
- दक्षिणी दिल्ली: एक सीट (दक्षिणी दिल्ली)

जीते बड़े नाम

- मनोज तिवारी (भाजपा सांसद, भोजपुरी अभिनेता व गायक)
- बांसुरी स्वराज (दिवंगत केंद्रीय मंत्री सुषमा स्वराज की बेटी)
- रामवीर सिंह विधूड़ी (दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष)

****

बिहार में राजग को 30 सीटें, महागठबंधन नौ पर जीता

उत्तर बिहार में राजग का क्लीन स्विप, मगध-शाहाबाद ने भरी महागठबंधन की झोली, लोजपा (रा) ने सभी पांच सीटें जीतीं

कुमार रजत ● जागरण

पटना: राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) ने बिहार में 75 प्रतिशत सीटें जीतकर अपना दबदबा तो बनाए रखा मगर पिछली बार वाला जादू नहीं चला। 2019 के लोकसभा चुनाव में 40 में 39 सीटें जीतने वाले राजग को इस बार 30 सीटों से ही संतोष करना पड़ा। महागठबंधन ने पिछली बार महज किशनगंज की एक सीट जीती थी। इस बार उसने नौ सीटों पर जीत दर्ज की है।

राजग की ओर से भाजपा और जदयू ने क्रमशः 17 और 16 सीटों पर चुनाव लड़ा था। दोनों को 12-12 सीटों पर विजय मिली। चिराग पासवान के लोजपा (रा) ने सभी पांच सीटों पर जीत दर्ज कर 100 प्रतिशत सफलता का रिकार्ड बनाए रखा। महागठबंधन की ओर से राजद ने 23 सीटों पर चुनाव लड़ा मगर महज चार सीटों पर ही जीत हासिल हो सकी। कांग्रेस ने नौ में तीन जबकि भाकपा माले ने तीन में से दो सीट पर जीत दर्ज की। केंद्रीय ऊर्जा मंत्री आरके सिंह को आरा से हार का सामना करना पड़ा है। यह सीट भाजपा से भाकपा माले के सुदामा प्रसाद ने छीन ली है। इसी तरह लगातार दो बार से भाजपा के टिकट पर पाटलिपुत्र से जीत दर्ज कर रहे पूर्व केंद्रीय राज्यमंत्री रामकृपाल यादव को भी हार का सामना करना पड़ा है। लालू प्रसाद की बड़ी बेटी मीसा भारती को तीसरे प्रयास में पाटलिपुत्र की जनता ने जीत का आशीर्वाद दिया है। रविशंकर प्रसाद ने पटना साहिब से जीत दर्ज की है।

सारण से लालू प्रसाद की बेटी रोहिणी आचार्य हार गईं।

मीसा भारती ●

राजीव रूडी ●

रामकृपाल यादव ●

रोहिणी आचार्य ● फाइल फोटो

बिहार 40 सीटों पर

वर्ष	राजग		यूपीए/आइएनडीआइए		अन्य	
	सीट	वोट%	सीट	वोट%	सीट	वोट%
2019	39	54.34	1	27.19	0	18.47
2024	30	49.82	9	39.83	1	12.93

नोट : 2024 में सिर्फ राजग से हम के प्रत्याशी जीतनराम मांझी की जीत हुई है। शेष सभी रुझान हैं। पूर्णिया सीट से निर्दलीय पप्पू यादव जीत गए हैं।

क्षेत्रवार स्थिति

क्षेत्र	राजग		इंडिया		अन्य	
	2019	2024	2019	2024	2019	2024
सीमांचल (4)	3	1	1	2	0	1
कोसी (3)	3	3	0	0	0	0
पूर्वी बिहार (6)	6	6	0	0	0	0
तिरहुत (7)	7	7	0	0	0	0
मिथिलांचल (5)	5	5	0	0	0	0
मगध (7)	7	4	0	3	0	0
शाहाबाद (4)	4	0	0	4	0	0
सारण (4)	4	4	0	0	0	0

लोस चुनाव में लोजपा (रामविलास) के शानदार प्रदर्शन पर मंगलवार को पटना में प्रसन्न पार्टी प्रमुख चिराग पासवान व अन्य ● प्रेट्र

रणनीति की धारणाएं जमीन पर पूरी तरह नहीं उतर पाईं

अरुण अशेष ● जागरण

नित्यानंद ●

पप्पू यादव ●

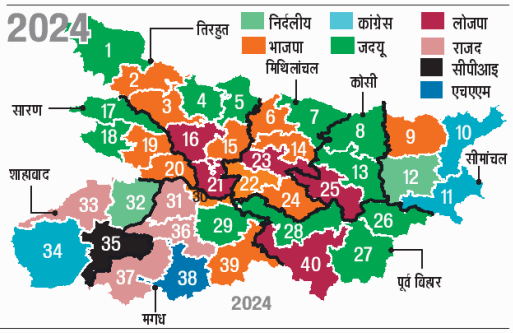

पटना: चुनाव के दिनों में राजनीतिक दलों की ओर से रणनीति के तहत बनाई गई धारणाएं जमीन पर पूरी तरह नहीं उतर पाईं। राजद की अगुवाई वाले महागठबंधन ने बड़े जतन से यह धारणा स्थापित करने की कोशिश की कि इस बार कुशवाहा, वैश्य और निषाद बिरादरी के मतदाता उसके साथ गोलबंद हो गए हैं। महागठबंधन ने 11 यादव के बाद सबसे अधिक सात कुशवाहा को उम्मीदवार बनाया था। निषाद एक थे-अजय निषाद। वह कांग्रेस उम्मीदवार की हैसियत से बुरी तरह मुजफ्फरपुर में हारे। कुशवाहा बिरादरी के सात में से दो उम्मीदवारों की जीत हुई। माले उम्मीदवार राजाराम सिंह की काराकाट से जीते। राजद के अभय कुशवाहा औरंगाबाद से जीते। औरंगाबाद की जीत विशुद्ध रूप से कुशवाहा वोटों की गोलबंदी का परिणाम है। काराकाट में माले की जीत का श्रेय निर्दलीय पवन सिंह को दिया जाना चाहिए। उन्होंने राजग के लिए समर्पित वोटरों के बड़े हिस्से को अपने पक्ष में कर लिया। यहां राजद की सूक्ष्म रणनीति कारगर रही। इसके तहत पवन सिंह के समर्थकों के बीच यह प्रचारित किया गया कि राजद के आधार वोट का एक हिस्सा उन्हें वोट देगा। यह नहीं हुआ।

एक धारणा यह बनाई गई थी कि राजद का माय समीकरण पूरी तरह महागठबंधन के पक्ष में है। वह महागठबंधन के नाम पर किसी जाति के उम्मीदवार को वोट दे देगा। पूर्णिया में पप्पू यादव निर्दलीय चुनाव जीत गए। जबकि राजद नेता तेजस्वी यादव ने पूर्णिया में पप्पू को वोट न देने की अपील अपने समर्थकों से की थी। झंझारपुर में बसपा के गुलाब यादव और नवादा में निर्दलीय विनोद यादव को मिला वोट बताता है कि राजद के कट्टर समर्थकों ने दल या गठबंधन के उम्मीदवारों का आंख मूंद कर साथ नहीं दिया।

उजियापुर से भाजपा के नित्यानंद राय की जीत भी माय समीकरण के वोटरों की राजद के प्रति निष्ठा के दावे पर प्रश्न है। मधुबनी में राजद के अली अशरफ फातमी की हार भी माय समीकरण की एकजुटता के दावे पर संदेह पैदा करता है। एक धारणा यह भी बनाई गई कि सवर्णों में भूमिहार समाज के लोग एकमुश्त महागठबंधन को वोट देंगे। महागठबंधन ने पांच सवर्ण उम्मीदवार उतारे थे। तीन भूमिहार, एक ब्राह्मण और एक राजपूत। लेकिन, महाराजगंज, वैशाली, मुजफ्फरपुर और पश्चिमी चंपारण लोकसभा के परिणाम इसकी गवाही नहीं दे रहे।

पूरे चुनाव अभियान को देखें तो दोनों पक्ष (राजग और महागठबंधन) अति आत्मविश्वास से भरे हुए थे। राजग के जिन सांसदों के बारे में सर्वे में पक्की हार की गारंटी बताई जा रही थी, उन्हें भी उम्मीदवार बनाया गया। यहां यह धारणा काम कर रही थी कि चुनाव तो पीएम मोदी और सीएम नीतीश लड़ रहे हैं। भाजपा जहां हिन्दू-मुस्लिम खेल रही थी, राजद ने अगड़ा-पिछड़ा कार्ड खेलने का अवसर हाथ से नहीं जाने दिया।

उत्तराखंड में पीएम के काम पर मुहर भाजपा का तीसरा क्लीन स्वीप

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नाम और केंद्र सरकार के पिछले 10 वर्षों के काम को मतदाताओं ने दिया समर्थन
- भाजपा लगातार तीसरी बार सभी पांचों सीटें जीतने की ओर, लेकिन इस बार मत प्रतिशत में गिरावट दर्ज

राज्य ब्यूरो, जागरण ● देहरादून : उत्तराखंड में एक बार फिर भाजपा राज्य की पांचों लोकसभा सीटों पर परचम फहराने की दिशा में आगे बढ़ रही हैं। केंद्रीय राज्यमंत्री अजय भट्ट ने नैनीताल-ऊधम सिंह नगर संसदीय सीट से लगातार दूसरी बार जीत दर्ज कर ली है, जबकि गढ़वाल संसदीय सीट से अनिल बलूनी, अल्मोड़ा से अजय टम्टा, हरिद्वार से त्रिवेंद्र सिंह रावत और टिहरी गढ़वाल सीट से महारानी राज्य लक्ष्मी शाह बड़ी जीत की ओर अग्रसर हैं। राज्य में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नाम और पिछले 10 वर्षों के दौरान किए गए विकास कार्यों पर मतदाताओं ने भाजपा को भारी जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई। जहां तक कांग्रेस का सवाल है, पार्टी के हाथ फिर खाली रह गए। कांग्रेस के बड़े नेता स्वयं लोकसभा चुनाव लड़ने से झिझक रहे थे। इसका परिणाम यह हुआ प्रदेश में लगातार तीसरे चुनाव में पार्टी का सूपड़ा साफ होने जा रहा है।

अजय भट्ट ●

उत्तराखंड में प्रथम चरण में 19 अप्रैल को लोकसभा चुनाव के लिए मतदान हुआ। इस चुनाव में मुख्य मुकाबला कांग्रेस और भाजपा के ही बीच ही रहा। पांचों सीटों पर कुल 55 प्रत्याशी मैदान में उतरे थे। मतगणना के अब तक के रुझान से साफ है कि भाजपा लगातार तीसरी बार सभी पांचों सीटों पर विजय पताका फहराने जा रही है। इससे वह राज्य में लगातार तीन लोकसभा चुनाव में जीत दर्ज करने वाली पहली पार्टी भी बन जाएगी। देर शाम सात बजे तक एक ही सीट का परिणाम घोषित हुआ था। नैनीताल-ऊधम सिंह नगर सीट से केंद्रीय राज्यमंत्री अजय भट्ट ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस के प्रकाश जोशी को 3,34,548 मतों से हराया। अजय भट्ट को कुल 7,72,671 मत पड़े। उधर, अल्मोड़ा सीट से भाजपा प्रत्याशी अजय टम्टा जीत की दहलीज पर खड़े हैं। अब तक उन्हें कुल 4,17,535 मत प्राप्त हुए हैं। उनके निकटतम प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस के प्रदीप टम्टा को अब तक 1,91,642 मत मिले हैं। टिहरी सीट से भाजपा प्रत्याशी माला राज्यलक्ष्मी शाह को अब तक 4,55,890 मत और उनके निकटतम प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस के जोत सिंह गुनसोला को 1,87,602 मत प्राप्त हुए हैं।

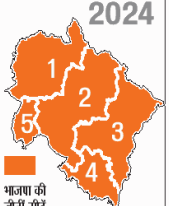

पौड़ी संसदीय सीट पर भाजपा के राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी अनिल बलूनी 4,16,961 मत प्राप्त कर जीत के निकट हैं। उनके निकटतम प्रतिद्वंदी कांग्रेस के गणेश गोदियाल को 2,62,096 मत प्राप्त हुए हैं। हरिद्वार संसदीय सीट से पूर्व मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत भी 6,48,498 मत प्राप्त कर आगे चल रहे हैं। उनके निकटतम प्रतिद्वंदी कांग्रेस के वीरेंद्र रावत को 4,87,406 मत मिले हैं। मतगणना अभी जारी है।

बता दें कि वर्ष 2009 में कांग्रेस की झोली में सभी पांच सीट गई थीं, जबकि इसके बाद वर्ष 2014, 2019 और अब भाजपा ने सभी सीटें जीतने जा रही है। इस ऐतिहासिक प्रदर्शन के बावजूद राज्य में भाजपा के कुल मत प्रतिशत में इस बार गिरावट दर्ज की गई है। वर्ष 2019 में भाजपा के हिस्से आए 61 प्रतिशत मत, जबकि कांग्रेस को 31.4 प्रतिशत मत मिले थे। इस बार राज्य की पांचों सीटों पर अब तक की मतगणना के अनुसार भाजपा को 56.80 प्रतिशत मत मिले हैं और कांग्रेस के हिस्से आए हैं 32.83 प्रतिशत मत। उत्तराखंड राष्ट्रीय मुद्दों के साथ ही कदम बढ़ाता आया है। राज्य का राजनीतिक परिदृश्य यही बयां कर रहा है।

प्रदेश में कुल लोकसभा सीटें-पांच

2019 का परिणाम
सभी पांचों सीटों पर भाजपा की जीत

2024 का परिणाम
सभी पांचों सीटों पर भाजपा की जीत

मत प्रतिशत

दल	2019	2024
भाजपा	61.0	56.80
कांग्रेस	31.4	32.90

(अभी अंतिम आंकड़ें नहीं आए हैं तो मत प्रतिशत अपडेट होगा)

प्रदेश में जीत रहे बड़े नाम
- गढ़वाल से अनिल बलूनी, भाजपा राष्ट्रीय मीडिया प्रमुख व पूर्व राज्यसभा सदस्य
- हरिद्वार से पूर्व मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत
- नैनीताल-ऊधम सिंह नगर से केंद्रीय राज्यमंत्री अजय भट्ट

झारखंड में भाजपा को नुकसान, खूंटी में निशाने से चूका 'अर्जुन' का तीर

राज्य ब्यूरो, जागरण, रांची : झारखंड में लोकसभा चुनाव के परिणाम में भाजपा के पास भले ही सबसे ज्यादा सीटें आईं, लेकिन पिछले चुनाव की तुलना में उसे तीन सीटों का झटका लगा है। इसी के साथ राजग के खाते में 2019 में आई 12 सीटों का आंकड़ा इस बार घटकर नौ सीटों पर पहुंच गया। वहीं आइएनडीआइए को तीन सीटों की बढ़त मिली है। कुल 14 सीटों में भाजपा के खाते में आठ और एक सीट उसकी सहयोगी आजसू को मिली है। वहीं झामुमो को तीन और कांग्रेस को दो सीटें मिली हैं। भाजपा को सबसे बड़ा झटका खूंटी में लगा है, जहां केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा कांग्रेस के कालीचरण मुंडा से चुनाव हार गए। अंतिम चरण की मतगणना तक वह कालीचरण मुंडा से 1,45,921 मतों से पीछे चल रहे थे। केंद्रीय मंत्री अन्नपूर्णा देवी कोडरमा में प्रतिद्वंद्वी माले विधायक विनोद सिंह 2,67, 048 मतों से जीत गई हैं। गोड्डा में निशिकांत दुबे 1,2,373 वोट से कांग्रेस के प्रदीप यादव से हार गए। दुमका में झामुमो प्रमुख शिबू सोरेन की बड़ी बहू भाजपा प्रत्याशी सीता सोरेन 33 हजार वोट से झामुमो के नलिन सोरेन से हार गईं। कांग्रेस छोड़कर भाजपा में आईं गीता कोड़ा सिंहभूम में झामुमो की जोबा मांझी से चुनाव हार गईं।

प्रदेश के क्षेत्र	उत्तरी छोटानागपुर	पलामू प्रमंडल	संताल प्रमंडल	दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल	कोल्हान प्रमंडल
क्षेत्र की कुल लोकसभा सीटें	4	1	3	3	2
	धनबाद, गिरिडीह, कोडरमा, हजारीबाग	पलामू	दुमका, गोड्डा, राजमहल	रांची, खूंटी, लोहरदगा	
2019 का परिणाम					
राजग	4	एक	दो	3	1
आइएनडीआइए	0	0	1	0	1
अन्य	0	0	0	0	0
2024 का परिणाम (उत्तरी छोटानागपुर: 2024 का परिणाम/रुझान)					
राजग	4	1	1	1	1
आइएनडीआइए	0	0	2	2	1
अन्य	0	0	0	0	0

क्षेत्र में जीते बड़े नाम
- निशिकांत दुबे
- अन्नपूर्णा देवी
- वीडी राम

हारने वाले बड़े और चर्चित नाम
- अर्जुन मुंडा
- सीता सोरेन
- गीता कोड़ा

मत प्रतिशत 2019
भाजपा 51.6 प्रतिशत
कांग्रेस 15.8 प्रतिशत
झामुमो 11.7 प्रतिशत

मत प्रतिशत 2024
भाजपा 43.79 प्रतिशत
कांग्रेस 19.24 प्रतिशत
झामुमो 14.59 प्रतिशत

झारखंड 14 सीटों पर

वर्ष	राजग		आइएनडीआइए		अन्य	
	सीट	वोट%	सीट	वोट%	सीट	वोट%
2019	12	0	2	0	0	0
2024	9	0	5	0	0	0

अर्जुन मुंडा ●

निशिकांत ●

सीता सोरेन ●

गीता कोड़ा ●

आदिवासी सुरक्षित सीटों पर नहीं चला भाजपा का जादू

झारखंड में जनजातीय समाज के लिए सुरक्षित सभी पांच सीटों पर भाजपा को हार का सामना करना पड़ा। माना जा रहा है कि कांग्रेस और झामुमो की ओर से चुनाव के दौरान भाजपा को आदिवासियों के हितों के मुद्दे पर लगातार घेरे जाने का असर हुआ और भाजपा के तेज प्रचार अभियान के बाद भी आदिवासियों मतों की गोलबंदी पर उसका असर नहीं पड़ा। हेमंत सोरेन को जेल भेजे जाने की घटना को भी झामुमो ने आदिवासी विरोधी कृत्य बताकर प्रचारित किया था। मतांतरण वाले इलाकों में ईसाई मतों की गोलबंदी भी भाजपा के विरुद्ध गई और इसका लाभ झामुमो और कांग्रेस को गया।

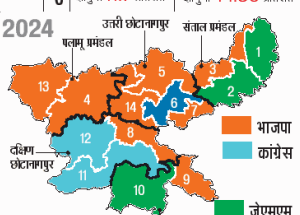

ओडिशा में पहली बार भाजपा सरकार, ढहा नवीन का किला

उत्तम नाथ पाठक ● जागरण

ओडिशा विधानसभा चुनाव में भाजपा की विजय पर मंगलवार को भुवनेश्वर में प्रसन्नता व्यक्त करतीं पार्टी समर्थक ● एएनआइ

जमशेदपुर: उत्तर प्रदेश में आशा अनुरूप सफलता न पा सकी भाजपा के लिए सबसे बड़ी खुशी महाप्रभु जगन्नाथ की भूमि ओडिशा से मिली है। लोकसभा व विधानसभा चुनाव के नतीजों ने भाजपा को यहां दोहरी खुशी दी है। देर रात तक चल रहे चुनावी रुझानों में लोकसभा की 21 सीटों में से 19 सीटों पर भाजपा ने अप्रत्याशित ढंग से अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई है। वहीं पहली बार ओडिशा में अपने बलबूते विधानसभा में बहुमत का आंकड़ा पार करने में भी वो सफल रही। ओडिशा की 147 विधानसभा में 80 सीटों पर भाजपा ने बढ़त लेते हुए प्रदेश में सरकार बनाने के प्रधानमंत्री की घोषणा को सही साबित कर दिया है। ओडिशा में सरकार बनाने के लिए बहुमत का आंकड़ा 74 है। जबकि पिछले ढाई दशक से नवीन पटनायक के नेतृत्व में सत्ता पर काबिज बीजू जनता दल (बीजद) इस बार 50 के अंदर सीटों पर पर सिमट गई। नवीन पटनायक का 24 साल से प्रदेश में मजबूत किला पीएम मोदी व भाजपा के चुनावी बिसात में ढह गया। पीएम ने पिछले दिनों चुनावी सभा के दौरान घोषणा की थी कि 04 जून को भाजपा को बहुमत मिलेगा और 10 जून को भाजपा के तरफ से किसी ओड़िया को यहां का मुख्यमंत्री बनाया जाएगा। यह बात नतीजों ने सही साबित कर दिया। 2019 के विधानसभा चुनाव में बीजद अकेले 113 सीटें जीती थी। प्रदेश में हाशिये पर चल रही कांग्रेस पिछले चुनाव से कुछ सीटें ही बढ़ा पाई वो तीसरे नंबर पर रही सिर्फ 14 के करीब सीटों पर बढ़त ले सकी। वहीं अन्य के खाते में 04 सीटें गई। इसमें एक सीट वाम मोर्चा को मिला है।

इस चुनाव में भाजपा के साथ गठबंधन की बात सीटों पर सहमति नहीं होने के कारण सिरे नहीं चढ़ सकी। लेकिन गठबंधन की चर्चा का सबसे बड़ा खामियाजा बीजद को ही उठाना पड़ा भाजपा के विपक्ष में पड़ने वाले वोट उससे कट गए यह वोट सबसे ज्यादा अल्पसंख्यकों का रहा। जो बीजद में न जाकर कांग्रेस व अन्य पार्टियों में चला गया। वहीं पीएम मोदी के ओडिया अस्मिता की बात उठाने का भी असर दिख रहा है। बीजद में नवीन पटनायक के बाद सबसे मजबूत माने जा रहे वीके पांडियन का सत्ता पर काबिज होने की बात को भाजपा ने काफी प्रमुखता से उठाया। साथ ही नवीन पटनायक के अस्वस्थता व निष्क्रिय होने की बात भी खूब जोर शोर से प्रसारित किया गया। पीएम ने अपनी सभा के दौरान यहां तक कहा था कि नवीन पटनायक अपने राज्य के जिला मुख्यालयों के नाम तक बिना कागज देखे नहीं बता सकते हैं, क्या ऐसा मुख्यमंत्री आपका दुख दर्द बांट सकता है। उनकी जगह कोई और शासन चला रहा है जो ओडिया नहीं है। यह बात इतनी तेजी से फैली की बीच चुनाव में दो बार नवीन पटनायक को खुद मीडिया के सामने आकर सफाई देनी पड़ी और बताना पड़ा की वह पूरी तरह स्वस्थ हैं और किसी के रिमोट कंट्रोल से नहीं चल रहे हैं। पहली बार भाजपा इतनी आक्रमकता के साथ ओडिशा में चुनाव लड़ी। इससे पूर्व नवीन पटनायक के साथ भाजपा का शुरू से ही संबंध सौहार्दपूर्ण और सहज रहा। दोनों पार्टियां समय-समय पर एक दूसरे के साथ खड़ी दिखी। नवीन पटनायक के सीएम बनने के बाद 2009 तक भाजपा व बीजद के बीच गठबंधन सरकार चली, लेकिन उसके बाद राहें जुदा हो गईं।

ओडीशा की 21 सीटों पर नजर

वर्ष	भाजपा	कांग्रेस	बीजद
	सीट	सीट	सीट
2019	8	1	12
2024	19	1	1

दक्षिण ओडिशा

लोकसभा सीट
कोरापुट, नवरंगपुर, बरहमपुर, आसिका, कंधमाल

2019 में

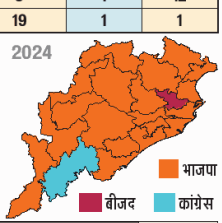

भाजपा	4 सीट
बीजद	0 सीट
कांग्रेस	1 सीट

उत्तर ओडीशा

वर्ष	भाजपा	कांग्रेस	बीजद
	सीट	सीट	सीट
2019	2	0	1
2024	3	0	0

लोकसभा सीट
- मयूरभंज
- बालेश्वर
- केंदुझर

तटीय ओडिशा

वर्ष	भाजपा	कांग्रेस	बीजद
	सीट	सीट	सीट
2019	1	0	7
2024	8	0	0

लोकसभा सीट
- भद्रक ● जाजपुर
- केन्द्रापड़ा ● कटक
- जगतसिंहपुर
- पुरी ● भुवनेश्वर
- ढेंकानाल

क्षेत्रवार स्थिति

पश्चिम ओडिशा: सम्बलपुर, सुंदरगढ़, बरगढ़, बलांगीर, कालाहांडी,

2019 में

भाजपा	5 सीट
बीजद	0
कांग्रेस	0

****

1.80 लाख मतों की अजेय बढ़त शाम आठ बजे तक हमीरपुर संसदीय क्षेत्र से केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने बना रखी थी। वह यहां से लगातार पांचवीं बार जीत रहे हैं। उनके सामने कांग्रेस के सतपाल रायजादा चुनावी मैदान में हैं। अनुराग ठाकुर केंद्र की नरेन्द्र मोदी सरकार में कैबिनेट मंत्री भी हैं

बंगाल में महिलाओं और मुस्लिमों ने तृणमूल पर बरसाई 'ममता'

विशाल श्रेष्ठ ● जागरण

- चुनाव-दर-चुनाव महिला वोटर की संख्या संग मतदान में भागीदारी बढ़ी
- दीदी को आधी आबादी और अल्पसंख्यकों का मिला भरपूर समर्थन

कोलकाता : लोकसभा (लोस) चुनाव के नतीजों ने एक बार फिर स्पष्ट कर दिया है कि बंगाल की राजनीति में महिलाओं व मुस्लिमों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। राज्य में चुनाव-दर-चुनाव महिला मतदाताओं की संख्या के साथ मतदान में उनकी भागीदारी भी बढ़ती गई है। 2021 के विधानसभा (विस) चुनाव में महिलाओं ने मतदान के मामले में पुरुषों को पीछे छोड़ दिया था। 82.35 प्रतिशत महिलाओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया था, जबकि पुरुषों का वोट प्रतिशत 82.24 प्रतिशत रहा था। बंगाल में वर्तमान में कुल 7.58 करोड़ मतदाता हैं, जिनमें 3.85 करोड़ पुरुष तो 3.73 करोड़ महिलाएं हैं। बंगाल में 18-19 आयु वर्ग की महिला मतदाताओं की संख्या 6.57 लाख हो गई है। इस बार 2.52 लाख महिलाएं नई मतदाता के तौर पर जुड़ीं। समग्र तौर पर बंगाल की कुल आबादी का 49 प्रतिशत महिलाएं हैं। इसके एक बड़े हिस्से ने खुलकर तृणमूल कांग्रेस पर 'ममता' बरसाई है।

बेअसर रहा संदेशखाली मुद्दा : भाजपा ने चुनाव में संदेशखाली में महिलाओं के यौन उत्पीड़न के मामले को बड़ा मुद्दा बनाकर आधी आबादी का समर्थन पाने की पूरी कोशिश की। संदेशखाली में प्रतिवाद का चेहरा बनकर उभरीं रेखा पात्र को बशीरहाट संसदीय क्षेत्र से अपना प्रत्याशी भी बनाया। दूसरी तरफ तृणमूल लगातार इसे 'सजाई हुई घटना' करार देती रही। चुनावी नतीजे देखें तो संदेशखाली मुद्दा ही नहीं बन पाया। इसका बशीरहाट समेत समूचे बंगाल में कोई असर नहीं दिखा और रेखा पात्र को भी हार का सामना करना पड़ा।

कारगर साबित हुई लक्ष्मी भंडार योजना : ममता बनर्जी को महिलाओं का समर्थन मिलने की एक बड़ी वजह 'लक्ष्मी भंडार' योजना है। जिसमें सामान्य वर्ग की महिलाओं को प्रतिमाह 1,000 व एससी/एसटी वर्ग की महिलाओं को 1200 रुपये दिए जाते हैं। पिछले विधानसभा चुनाव के बाद यह योजना शुरू की गई थी। लोस चुनाव से ठीक पहले इसे बढ़ाकर क्रमशः 1000 व 1200 रुपये कर दिया गया, जो ममता का मास्टरस्ट्रोक साबित हुआ है।

लोकसभा चुनाव में तृणमूल कांग्रेस के शानदार प्रदर्शन के बाद मंगलवार को कोलकाता में पार्टी कार्यकर्ताओं और समर्थकों ने जमकर जश्न मनाया। एएनआइ

एकतरफा मिला मुस्लिमों का वोट

बंगाल में भाजपा-विरोधी दलों में गठबंधन नहीं हो पाने से मुस्लिमों का वोट बंटने की प्रबल संभावना बनी थी, लेकिन यह एकतरफा तृणमूल की ओर गया है। बंगाल में 30 प्रतिशत से अधिक मुस्लिम मतदाता हैं। 16-17 लोस सीटें ऐसी हैं, जहां वह निर्णायक भूमिका में हैं। मालूम हो कि वाममोर्चा ने मुस्लिम वोट बैंक के बूते ही बंगाल में 34 साल राज किया था। उसके बाद मुसलमान तृणमूल की ओर झुकें तो ममता अब तक तीन बार मुख्यमंत्री बन चुकी हैं। ममता ने बहरमपुर से पूर्व क्रिकेटर यूसुफ पठान को टिकट देकर सबको चौंकाया था। तृणमूल ने कई और मुस्लिम प्रत्याशी भी उतारे थे।

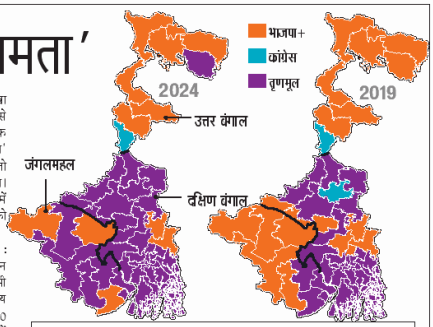

बंगाल में क्षेत्रवार स्थिति

क्षेत्र	टीएमसी		भाजपा		कांग्रेस	
	2019	2024	2019	2024	2019	2024
दक्षिण बंगाल (26)	19	24	06	02	01	00
उत्तर बंगाल (8)	00	01	07	06	01	01
जंगलमहल (8)	03	04	05	04	00	00

भाजपा की अपेक्षा के अनुरूप नहीं आए नतीजे

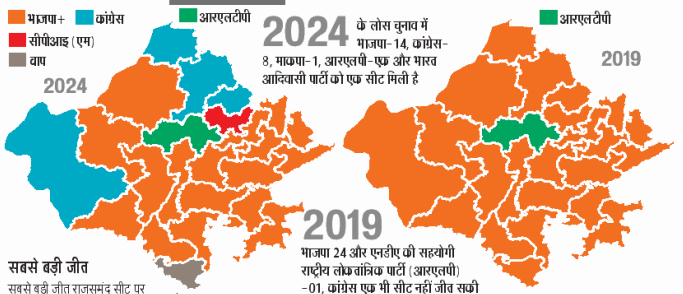

राजस्थान की 25 में 14 लोस सीटों पर ही जीते प्रत्याशी, 11 सीटों पर आइएनडीआइए को मिली विजय

नरेंद्र शर्मा ● जागरण

जयपुर : राजस्थान में भाजपा की अपेक्षा के अनुरूप नतीजे नहीं आए हैं। प्रदेश की 25 में 14 सीटें ही भाजपा जीत सकी है। शेष 11 सीटों पर कांग्रेस और आइएनडीआइए के प्रत्याशी जीते हैं। इनमें आठ सीटों पर कांग्रेस, एक-एक सीट पर माकपा, राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी (आरएलपी) और भारत आदिवासी पार्टी (बाप) के प्रत्याशियों ने विजय पाई है। 2014 में यहां सभी 25 सीटों पर भाजपा की जीत हुई थी। 2019 में 24 सीटों पर भाजपा और एक सीट पर एनडीए के घटक दल आरएलपी का प्रत्याशी जीता था।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के गृह संसदीय क्षेत्र भरतपुर में ही भाजपा प्रत्याशी रामस्वरूप कोली की हार हुई है। यहां कांग्रेस की संजना जाटव जीती हैं। बाड़मेर-जैसलमेर सीट पर भाजपा प्रत्याशी केंद्रीय मंत्री कैलाश चौधरी तीसरे नंबर पर रहे। यहां कांग्रेस के उम्मेदाराव बेनीवाल ने निर्दलीय प्रत्याशी रविंद्र सिंह भाटी को हराया है। चुनाव परिणाम के बाद भाजपा में कुछ नेताओं ने विचार-विमर्श शुरू कर दिया है। ये नेता संगठन और सरकार के नेतृत्व की कार्यप्रणाली को लेकर पार्टी आलाकमान तक अपनी बात पहुंचा सकते हैं। विधानसभा चुनाव में प्रदेश में सरकार बनाने के करीब पांच महीने बाद लोकसभा चुनाव में भाजपा की ऐसी स्थिति होना प्रदेश सत्ता और संगठन के लिए परेशानी का कारण हो सकता है।

कहीं इसलिए तो नहीं हुआ भाजपा को नुकसान : भाजपा के अपेक्षा अनुरूप सीटें नहीं जीतने का प्रमुख कारण जाट और मीणा समाज की नाराजगी को माना जा रहा है। जाट वोट बैंक के प्रभाव वाली सीकर, नागौर, चूरू, झुंझुनूं व बाड़मेर-जैसलमेर जिलों में भाजपा की हार हुई है। राज्य मंत्रिमंडल में जाट विधायकों को उम्मीद से कम महत्व मिलने, चूरू से मौजूदा सांसद राहुल कस्वा का टिकट कटने सहित कई कारणों से जाट समाज भाजपा से नाराज माना जा रहा है। पूर्व नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ का कस्वा का टिकट कटना भी कारण रहा। हालांकि, कस्वा टिकट कटने पर भाजपा छोड़कर कांग्रेस में शामिल हो गए। किसान आंदोलन व अग्निपथ योजना भी जाटों की नाराजगी का कारण माना जा रहा है। जाट मतदाताओं का कांग्रेस को समर्थन मिलने का कारण प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पद पर जाट नेता गोविंद सिंह डोटासरा का होना है। मीणा समाज में भी असंतोष है। विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के मजबूत वोट बैंक रहा मीणा समाज दिग्गज नेता किरोड़ी लाल मीणा के कारण भाजपा के साथ आया था, लेकिन मीणा को सरकार में महत्व कम मिला।

भाजपा का मत प्रतिशत गिरा तो कांग्रेस का बढ़ा : 2014 में नरेन्द्र मोदी लहर के कारण भाजपा के पक्ष में 55.6 प्रतिशत लोगों ने मतदान किया था। कांग्रेस को 30.7 प्रतिशत मत मिले थे। 2019 में भाजपा को 58.14 तो कांग्रेस को 34.2 प्रतिशत वोट मिले थे। इस बार भाजपा ने 49.59 प्रतिशत वोट हासिल किए हैं, जो 2019 की तुलना में 8.55 प्रतिशत कम हैं। कांग्रेस ने 42.35 प्रतिशत वोट हासिल किए हैं।

2024 के लोस चुनाव में भाजपा-14, कांग्रेस-8, माकपा-1, आरएलपी-एक और भारत आदिवासी पार्टी को एक सीट मिली है

2019 भाजपा 24 और एनडीए की सहयोगी राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी (आरएलपी) -01, कांग्रेस एक भी सीट नहीं जीत सकी

सबसे बड़ी जीत

सबसे बड़ी जीत राजसमंद सीट पर भाजपा की विश्वराज कुमारी की हुई है। उन्होंने कांग्रेस के देवराम गुर्जर को तीन लाख, 92 हजार 877 वोटों से हराया है।

सबसे छोटी जीत

जयपुर ग्रामीण सीट से भाजपा के राव राजेंद्र सिंह 1615 वोटों से जीते हैं। उन्होंने कांग्रेस के अनिल चौपड़ा को हराया है।

ये दिग्गज जीते

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला कोटा, केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव, अर्जुन राम मेघवाल बीकानेर व गजेंद्र सिंह शेखावत जोधपुर सीट व भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष सीपी जोशी चित्तौड़गढ़ से भाजपा के टिकट पर चुनाव जीत गए हैं।

ये दिग्गज हारे

केंद्रीय कृषि मंत्री कैलाश चौधरी बाड़मेर-जैसलमेर सीट से कांग्रेस के उम्मेदाराम से हार गए। वहीं पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के पुत्र वैभव गहलोत भाजपा के लूम्बाराम से हार गए।

अशोक गहलोत के पुत्र वैभव दूसरी बार हारे

पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के पुत्र वैभव गहलोत जालौर-सिरोही सीट से भाजपा के लूम्बाराम से चुनाव हार गए। वैभव पिछला चुनाव जोधपुर से केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत से हारे थे।

दुष्यंत सबसे वरिष्ठ सांसद

पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के पुत्र दुष्यंत सिंह झालावाड़ सीट से लगातार पांचवीं बार चुनाव जीते हैं। वह प्रदेश के सबसे वरिष्ठ सांसद हो गए हैं। वसुंधरा भी पूर्व में पांच बार सांसद रह चुकी हैं। दुष्यंत ने कांग्रेस की उर्मिला जैन को तीन लाख, 70 हजार 989 से अधिक वोटों से हराया है।

दल बदलने वालों को कहीं नकारा तो कहीं गले लगाया

प्रदेश की जनता ने इस बार कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल होने वाले दो वरिष्ठ नेताओं को नकार दिया है। इनमें प्रमुख आदिवासी नेता महेंद्र मालवीय बांसवाड़ा-डूंगरपुर सीट से चुनाव हार गए। उन्हें बाप के युवा नेता राजकुमार रोत ने हराया है। मालवीय अशोक गहलोत सरकार में कैबिनेट मंत्री और कांग्रेस कार्य समिति के सदस्य रहे थे। चुनाव से ठीक पहले वह कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हुए थे। कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हुईं ज्योति मिर्धा नागौर सीट से आरएलपी के हनुमान बेनीवाल से हार गईं। वहीं दो बार सांसद रहे राहुल कस्वा टिकट नहीं मिलने से नाराज होकर भाजपा छोड़कर कांग्रेस में शामिल हो गए थे। कांग्रेस ने उन्हें टिकट दिया और वह चुनाव जीत भी गए। कस्वा ने भाजपा प्रत्याशी देवेंद्र झाझड़िया को हराया है।

> प्रत्येक सीट की हार-जीत की समीक्षा की जाएगी। जनता का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रति विश्वास जताने पर आभार।
>
> -**सीपी जोशी**, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष

> समूचा चुनाव प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पूरी तरह अपने ऊपर केंद्रित किया। मोदी की गारंटी, फिर से मोरी सरकार जैसे जुमले भाजपा शब्द से ज्यादा सुनाई दिए।
>
> -**अशोक गहलोत**, पूर्व मुख्यमंत्री (एक्स पर पोस्ट)

उपचुनाव में भी लगा झटका

भाजपा को बागीदौरा विस सीट पर हुए उपचुनाव में झटका लगा है। यहां से बाप के जयकृष्ण पटेल चुनाव जीते हैं। उन्होंने भाजपा के संतोष तांबोलिया को 52 हजार वोटों से हराया है। कांग्रेस ने यहां बाप प्रत्याशी को समर्थन दिया था।

राष्ट्रीय मुद्दों पर रहा हिमालय का जनादेश

राज्य ब्यूरो, जागरण ● शिमला : चीन से सटे हिमाचल प्रदेश में मतदाता चारों संसदीय क्षेत्रों में राष्ट्रीय मुद्दों पर केंद्रित रहा। यही कारण है कि इस हिमालयी प्रदेश में भाजपा ने 2014 के संसदीय चुनाव से जारी चारों सीटें जीतने का क्रम बरकरार रखा। हमीरपुर से अनुराग ठाकुर पांचवीं बार, जबकि इस बार कठिन सीट समझे जाते शिमला संसदीय क्षेत्र में निवर्तमान सांसद सुरेश कश्यप दूसरी बार विजयी रहे। अभिनेत्री कंगना रनौत का पहला चुनाव ही सफल रहा। वह छह बार के मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह के पुत्र और राज्य के लोक निर्माण मंत्री विक्रमादित्य सिंह को 74755 हजार मतों से हराने में सफल रहीं। कांगड़ा में कांग्रेस के बड़े नेता आनंद शर्मा को करीब ढाई लाख मतों से भाजपा के आम कार्यकर्ता डा. राजीव भारद्वाज ने हराया।

प्रधानमंत्री मोदी, अमित शाह, योगी आदित्यनाथ और नितिन गडकरी ने प्रचार को धार दी। चीन सीमा का विकास, वन रैंक वन पेंशन और राम मंदिर आदि मुद्दों का प्रभाव दिखा। भाजपा का यह आख्यान भी सुना गया कि यदि आइएनडीआइए सत्ता में आया तो वह पिछड़ों के आरक्षण पर अपने वोट बैंक के लिए कैंची चलाएगा। कांग्रेस के महंगाई, बेरोजगारी, संविधान को खतरा आदि उठाए विषय प्रभावहीन रहे। अग्निवीर योजना को बदलने की बात कांग्रेस ने की तो भाजपा ने उसका समुचित जवाब दिया। सीमावर्ती क्षेत्रों के विकास में यूपीए और एनडीए कार्यकाल की तुलना कर डा. एस जयशंकर ने विमर्श को और तीखा किया। सर्वाधिक चहल पहल मंडी संसदीय क्षेत्र में रही जहां कंगना रनौत और विक्रमादित्य के बीच तीखे बोल चले। अंततः मंडी जिले में इसे बेटियों के सम्मान के साथ भी जोड़ा गया और पलड़ा, आरंभ में कमजोर समझी जाती कंगना के पक्ष में झुका। चारों सीटों पर भाजपा की लीड अवश्य कम हुई है। यह तब है, जब भाजपा प्रत्याशी चयन और प्रचार में कांग्रेस से आगे थी।

इस सबके बीच हिमाचल प्रदेश का इसी मतदाता का व्यवहार छह विधानसभा क्षेत्रों के उपचुनाव में कुछ अलग दिखा। यहां एक वोट पीएम को, एक वोट सीएम को वाला नारा सिद्ध होता दिखा।

चार क्षेत्रों में कांग्रेस के प्रत्याशी जीते, जबकि दो में वे भाजपा प्रत्याशी जीते जो राज्यसभा चुनाव के बाद भाजपा में आए थे। धर्मशाला से सुधीर शर्मा और हमीरपुर के बड़सर से इंद्रदत्त लखनपाल ही सीट बचा सके। मतदाता ने यहां स्थानीय मुद्दों, प्रत्याशी के किए धरे और प्रदेश सरकार के अगले साढ़े तीन वर्ष के कार्यकाल को देख कर ऐसा जनादेश दिया। एक संदेश यह भी है कि मतदाता को आया राम गया राम अधिक पसंद नहीं। हिमाचल प्रदेश विधानसभा में अब कांग्रेस की संख्या 38, जबकि भाजपा की 27 हो गई है। प्रदेश सरकार सुरक्षित दिख रही है। शायद यही कांग्रेस का यहां उद्देश्य था, इसीलिए लोकसभा चुनाव में कांग्रेस उतना श्रम करती नहीं दिखी जितना उसने विधानसभा उपचुनाव में किया। इसका चुनाव परिणाम में असर भी दिखा है।

प्रदेश में हैं कुल चार लोकसभा सीटें

हिमाचल प्रदेश के मंडी में मंगलवार को लोकसभा चुनाव में विजयी हुईं भाजपा प्रत्याशी कंगना रनौत का मुंह मीठा करातीं उनकी मां। एएनआइ

2019 के चुनाव परिणाम में यहां सभी सीटें भाजपा जीती थीं

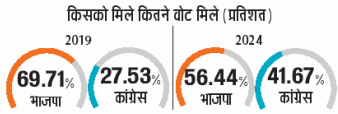

2024 के परिणाम/रुझान- में सभी सीटें भाजपा के खाते में जाती दिख रहीं

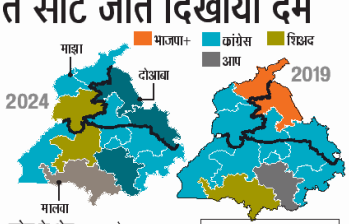

प्रदेश में जीते बड़े नाम
अनुराग ठाकुर : हमीरपुर से पांचवीं बार
कंगना रनौत : मंडी से पहली बार

हार गए बड़े नाम
कांग्रेस : आनंद शर्मा
कांग्रेस : विक्रमादित्य सिंह

किसको मिले कितने वोट मिले (प्रतिशत)

(अभी अंतिम आंकड़ें नहीं आए हैं तो मत प्रतिशत अपडेट होगा)

पंजाब में आप का मिशन 13 हुआ फेल, कांग्रेस ने सात सीटें जीत दिखाया दम

इन्द्रप्रीत सिंह ● जागरण

चंडीगढ़ : पंजाब में आम आदमी पार्टी का मिशन-13 फेल हो गया है। इसके विपरित कांग्रेस ने सात सीटें जीतकर एक बार फिर अपना दम दिखाया है। दोनों पार्टियां आइएनडीए के घटक हैं, परंतु पंजाब में अलग-अलग चुनाव लड़े। पहली बार अपने बूते राज्य की सभी सीटों पर उतरी भाजपा खाता भी नहीं खोल पाई तो शिरोमणि अकाली दल भी कुछ खास नहीं कर पाया।

पंजाब से स्टार प्रचारक रहे मुख्यमंत्री भगवंत मान को उम्मीद थी कि तीन सौ यूनिट निशुल्क बिजली देने का उनका वादा वोट में बदल जाएगा, परंतु ऐसा नहीं हुआ। आप मात्र तीन सीटें जीत पाईं। मान ने अपने पांच मंत्रियों और चार विधायकों को मैदान में उतारा था, उनमें केवल एक मंत्री और एक विधायक ही जीत पाया। माना जा रहा है कि आप को कमजोर शासन का खामियाजा मिला है। संदेश साफ है कि केवल मुफ्त की रेवड़ियां देकर ही लोगों को पूरी तरह नहीं बांधा जा सकता। कांग्रेस ने वर्ष 2019 में जीती आठ सीटों के मुकाबले इस बार सात सीटें जीती हैं। उसे एक सीट का घाटा हुआ है। दोबारा जमीन हासिल करने के लिए संघर्ष कर रहे शिरोमणि अकाली दल की प्रत्याशी हरसिमरत कौर बादल ने चौथी बार सीट हासिल की, लेकिन शिअद 10 सीटों पर जमानत गंवा बैठा। केवल अमृतसर और फिरोजपुर में ही उसके प्रत्याशी जमानत बचा सके। निर्दलीय चुनाव लड़े अलगाववादी प्रत्याशियों ने उसको काफी नुकसान पहुंचा गए।

पंथक वोट बैंक शिअद से खिसककर इन दो उम्मीदवारों की ओर चला गया। वोट शेयर भी 2022 के विधानसभा में 18 प्रतिशत के मुकाबले मात्र 13.41 प्रतिशत रह गया है। भाजपा की उपलब्धि यह रही कि उसका वोट प्रतिशत 2019 के 9.63 प्रतिशत से बढ़कर 18.55 प्रतिशत हो गया है। 2019 के चुनाव में भाजपा ने होशियारपुर और गुरदासपुर की सीटें जीत ली थीं।

प्रदेश के क्षेत्र (माझा, दोआबा, मालवा)

3 माझा क्षेत्र की कुल लोकसभा सीटें

3 दोआबा क्षेत्र की कुल लोकसभा सीटें

7 मालवा क्षेत्र की कुल लोस सीटें

2019 का परिणाम

माझा	कांग्रेस दो, भाजपा एक
दोआबा	कांग्रेस दो, भाजपा एक
मालवा	आप एक, शिअद दो, कांग्रेस चार

2024 : परिणाम/रुझान

माझा	कांग्रेस ने एक पर जीत और एक पर आगे, एक सीट पर आजाद प्रत्याशी आगे
दोआबा	कांग्रेस एक जीती, आप दो पर आगे
मालवा	आप एक तो, कांग्रेस तीन सीटे जीती, एक पर आगे, शिअद एक पर विजयी, आजाद एक पर आगे

शिवसेना-भाजपा के सिर फुटौव्वल में कांग्रेस और पवार ने मारी बाजी

ओमप्रकाश तिवारी ● जागरण

- स्ट्राइक रेट में शिवसेना (यूबीटी) की स्थिति भाजपा से बेहतर
- सबसे खराब स्थिति चाचा को छोड़कर आए अजीत पवार की रही

मुंबई: पूरे देश को चकित करने वाले चुनाव परिणामों में महाराष्ट्र की भूमिका भी अहम रही है। यहां लगभग 35 साल तक गठबंधन में चुनाव लड़ने वाले दो दलों भाजपा और शिवसेना में 2019 में हुई अनबन का सीधा लाभ कांग्रेस और शरद पवार की पार्टी राकांपा (शरदचंद्र पवार) को हुआ है। इस चुनाव में कांग्रेस जहां सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है, वहीं राकांपा (शरदचंद्र पवार) ने भी स्ट्राइक रेट के हिसाब से अपना अब तक का सबसे बेहतर प्रदर्शन कर दिखाया है।

शिवसेना और राकांपा दोनों दलों को दो साल के अंदर ही बड़ी टूट का सामना करना पड़ा था। इस टूट में दोनों दलों के दो तिहाई से अधिक विधायक (शिवसेना के दो तिहाई सांसद भी) तो पार्टी छोड़कर गए ही, चुनाव आयोग ने उनका चुनाव चिह्न एवं पार्टी का नाम भी उनसे छीनकर उन्हीं से टूटे गुट को दे दिया। यानी दोनों दलों को यह चुनाव नए नाम एवं नए चुनाव चिह्न पर लड़ना पड़ा। इसका नुकसान भी उन्हें हुआ। इसके बावजूद ये दोनों दल शिवसेना (यूबीटी) एवं राकांपा (शरदचंद्र पवार) कांग्रेस के साथ मिलकर अपेक्षाकृत अधिक संगठित दिख रही महायुति (भाजपा, शिवसेना (शिंदे) एवं राकांपा (अजीत) का गठबंधन) को धूल चटाने में सफल रहे। महायुति जहां 17 सीटों पर अटक गई, वहीं महाविकास आघाड़ी के तीनों दल मिलकर 30 सीटें लाने में सफल रहे।

दोनों गठबंधनों में शामिल तीन-तीन दलों का अलग-अलग प्रदर्शन देखा जाए तो कांग्रेस 2009 के बाद पहली बार न सिर्फ दहाई के अंक में पहुंची बल्कि, सबसे बड़ी पार्टी भी बनकर उभरी। 2014 में तो वह सिर्फ दो सीटें, और 2019 में सिर्फ एक सीट ही जीत सकी थी, जबकि उनचुनाव में वह क्रमशः 26 एवं 25 सीटों पर चुनाव लड़ी थी। इस बार तो वह सिर्फ 17 सीटों पर चुनाव लड़कर 12 सीटें जीती हैं। यानी उसका स्ट्राइक रेट भी बहुत बढ़िया रहा है। लगभग यही स्थिति शरद पवार के नेतृत्व वाली राकांपा (शरदचंद्र पवार) की रही है। पवार के हिस्से में तो सिर्फ 10 सीटें ही आई थीं। वह उसमें से सात सीटें जीतने में सफल रहे। इससे पहले उनकी पार्टी का सबसे बेहतर प्रदर्शन 2004 में रहा था। तब वह 20 से अधिक सीटों पर लड़कर नौ सीटें जीते थे। अतः उनका इस बार का स्ट्राइक रेट 2004 से भी अच्छा रहा है।

असल नुकसान हुआ तो भाजपा और शिवसेना (यूबीटी) का। 35 साल तक एक-दूसरे के पूरक रहे इन दोनों दलों को क्रमशः 11 एवं 10 सीटों से ही संतोष करना पड़ा है। भाजपा 28 सीटों पर लड़कर 11 सीटें जीत सकी है। वहीं शिवसेना (यूबीटी) 21 सीटों पर लड़कर 10 सीटें जीती हैं। 2014 एवं 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा 23 एवं शिवसेना (अविभाजित) 18 सीटें जीती थीं। लेकिन स्ट्राइक रेट के मामले में शिवसेना (यूबीटी) की स्थिति इस बार भाजपा से बेहतर रही है। सबसे खराब स्थिति करीब सालभर पहले अपने चाचा को छोड़कर आए अजीत पवार की रही। वह हिस्से की चार सीटों में एक प्रदेश अध्यक्ष सुनील तटकरे की ही जीत सके हैं। उनकी पत्नी सुनेत्रा पवार ननद एवं शरद पवार की पुत्री सुप्रिया सुले से हार गई हैं। शिवसेना से अलग हुए सीएम एकनाथ शिंदे 15 सीटों पर लड़कर छह सीटें ही जीत सके। हार में बड़ी भूमिका प्रत्याशियों के गलत चयन ने निभाई है।

लोकसभा चुनाव में शिवसेना (यूबीटी) के प्रदर्शन पर मंगलवार को मुंबई में खुशी मनाते पार्टी कार्यकर्ता ● एएनआइ

2024 में एनडीए 17 सीटें जीती है और आइएनडीआइए (महाविकास आघाड़ी) को 29 सीट मिली है

48 सीटें महाराष्ट्र में कुल हैं, 2019 के परिणाम में भाजपा को 23 और शिवसेना को 18 और कांग्रेस को एक मिली थी

मंदिर-मस्जिद की राजनीति को जनता ने नकारा : शरद पवार

राज्य ब्यूरो ● जागरण मुंबई : राकांपा (शरदचंद्र पवार) के अध्यक्ष शरद पवार ने चुनाव परिणाम आने के बाद कहा कि देश की जनता ने मंदिर-मस्जिद की राजनीति को नकार दिया है। हमें विश्वास था कि जनता राम मंदिर निर्माण को प्रोपेगंडा की तरह इस्तेमाल करने को स्वीकार नहीं करेगी। अब जो परिणाम आ रहे हैं, उससे यह सिद्ध भी हो गया है।

महाराष्ट्र के रुझानों में संप्रग (महाराष्ट्र में महाविकास आघाड़ी) की स्थिति मजबूत दिखते ही मीडिया से बात करते हुए शरद पवार ने कहा कि महाराष्ट्र में जो परिणाम आ रहे हैं, उसका तो हमें अनुमान था। किंतु हिंदी पट्टी के राज्यों को लेकर हम चिंतित थे। उत्तर प्रदेश में ऐसे परिणाम आएंगे, इस बारे में कोई सोच भी नहीं सकता था। लेकिन, उत्तर प्रदेश की जनता ने एक नई दिशा दिखा दी है।

शरद पवार ने इस बात से इन्कार किया कि उनकी राजग के घटक दलों के नेता नीतीश कुमार या चंद्रबाबू नायडू से कोई बात हुई है। उन्होंने कहा कि परिणाम आने के बाद मेरी सिर्फ मल्लिकार्जुन खरगे एवं सीताराम येचुरी से बात हुई है। बुधवार को दिल्ली में बैठक होगी।

शरद पवार

****

सत्ताधारी दल ने सभी **29 सीटें जीतीं,** कांग्रेस से कमल नाथ के बेटे की छिंदवाड़ा सीट भी छिनि

भगवा हुआ मध्य प्रदेश, भाजपा का क्लीन स्वीप

- पूर्व सीएम शिवराज सिंह चौहान ने आठ लाख से अधिक वोटों से पाई विजय
- गुना लोकसभा सीट से केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया भी चुनाव जीत गए
- राजगढ़ सीट पर कांग्रेस प्रत्याशी और पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह हारे

राज्य ब्यूरो, नईदुनिया भोपाल: मध्य प्रदेश में करीब छह महीने पहले हुए विधानसभा चुनाव में ऐतिहासिक विजय पाने के बाद भाजपा ने पहली बार प्रदेश की सभी 29 लोकसभा सीटों पर जीत पाई है। स्वतंत्रता के बाद कांग्रेस ने वर्ष 1984 में क्लीन स्वीप किया था। इस बार भाजपा सभी सीटों पर जीती है, जिससे स्पष्ट है कि प्रदेश के सभी क्षेत्रों में पार्टी ने शानदार प्रदर्शन किया है।

भाजपा की बड़ी उपलब्धि महाकोशल अंचल की छिंदवाड़ा सीट पर जीत रही। वर्ष 2019 में यहां कांग्रेस जीती थी। वर्ष 1980 से दिग्गज कांग्रेस नेता कमल नाथ का गढ़ रही यह सीट छिंदवाड़ा से उनके पुत्र नकुल नाथ चुनाव हार गए हैं। वहीं, मध्य भारत अंचल की राजगढ़ सीट पर कांग्रेस प्रत्याशी और पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह को भी पराजय का सामना करना पड़ा। 33 वर्ष बाद उन्हें यहां हार का सामना करना पड़ा। मध्य भारत अंचल की ही विदिशा सीट से पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान आठ लाख से अधिक वोटों से चुनाव जीत गए। ग्वालियर-चंबल अंचल की हाट सीट गुना से केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया भी चुनाव जीत गए। बुंदेलखंड अंचल की खजुराहो सीट से भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष विष्णु दत्त शर्मा ने जीत दर्ज की है। अच्छी पकड़ वाले ग्वालियर-चंबल अंचल में कांग्रेस को करारी हार मिली है। पार्टी की यहां सभी उम्मीदें धराशायी हो गईं।

लोस चुनाव में मप्र में भाजपा द्वारा क्लीन स्वीप पर भोपाल में कैबिनेट के सदस्यों के साथ खुशी मनाते सीएम मोहन यादव ● एएनआइ

इस लोकसभा चुनाव में

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सात जनसभाएं और दो रोड-शो

जबलपुर (रोड-शो), बालाघाट, पिपरिया (होशंगाबाद), दमोह, सागर, हरदा (बैतूल), भोपाल (रोड-शो), मुरैना और खरगोन। सभी सीटें भाजपा की झोली में।

राहुल गांधी ने पांच सभाएं की थीं

मंडला, शहडोल, भिंड, खरगोन और रतलाम- सभी में कांग्रेस हारी

मध्य प्रदेश में क्षेत्रवार स्थिति

क्षेत्र	राजग		संप्रग/आइएनडीआइए	
	2019	2024	2019	2024
मध्य भारत (पांच)	5	5	0	0
मालवा- निमाड़ (आठ)	8	8	0	0
ग्वालियर-चंबल (चार)	4	4	0	0
विंध्य (चार)	4	4	0	0
महाकोशल (चार)	3	4	1	0
बुंदेलखंड (चार)	4	4	0	0

मप्र में भाजपा और कांग्रेस को प्राप्त मत प्रतिशत

वर्ष	कुल	राजग		यूपीए/आइएनडीआइए	
		सीट	वोट%	सीट	वोट%
2019	29	28	58	1	34.50
2024	29	29	59.27	0	32.44

मप्र में इस बार भी गेम चेंजर साबित हुई लाड़ली बहना योजना

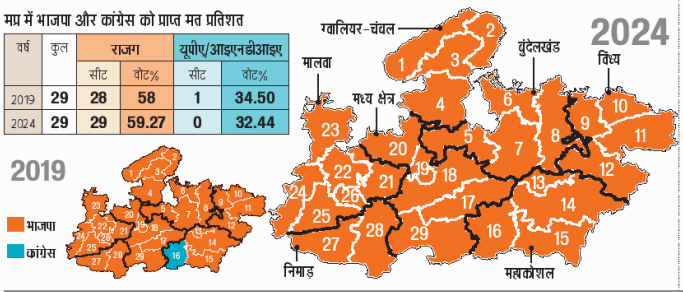

सद्गुरु शरण ● नईदुनिया

शिवराज सिंह चौहान ● फाइल फोटो

इंदौर: तीन दिसंबर, 2023 से चार जून, 2024 के बीच मध्य प्रदेश में कुछ नहीं बदला। चुनाव के नतीजे बता रहे हैं कि आज भी लोगों के मन में मोदी हैं तो मीठी यादों में मामा यानी पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान। भाजपा के करीब दो दशक के शासनकाल में प्रदेश का जिस तरह चौतरफा विकास हुआ, नतीजों में उसके प्रति कृतज्ञता दिखती है। इसके अलावा चौहान की लाड़ली बहनों और भांजियों ने तो विस चुनाव के बाद लगातार दूसरी बार लोस चुनाव में भी भाजपा को समर्थन दिया है। भाजपा का क्लीन स्वीप इसी का परिणाम है। बेशक सीएम डा. मोहन यादव के ताजा एवं निर्दोष चेहरे ने भाजपा के लिए लोगों के मन में मोह और मिठास बढ़ा दी।

मप्र का मन और चुनाव नतीजे समझने के लिए छिंदवाड़ा और राजगढ़ की मानसिकता को समझना जरूरी है। छिंदवाड़ा यानी मध्य प्रदेश में कांग्रेस के पोस्टर ब्वाय कमल नाथ का किला। भाजपा इसकी नींव वर्ष 2019 की प्रचंड मोदी लहर में भी नहीं हिला पाई थी। तब कमल नाथ के पुत्र नकुल नाथ चुनाव जीते थे। भाजपा ने करीब छह महीने पहले हुए विस चुनाव में भी इस किले की दीवारों पर पूरी ताकत से प्रहार किए, लेकिन छिंदवाड़ा की सारी विधानसभा सीटें कांग्रेस ही जीती। इस बार भी नकुल नाथ ही कांग्रेस उम्मीदवार थे। चुनौती भांपकर अनुभवी कमल नाथ मतदान हो जाने तक छिंदवाड़ा में ही डटे रहे। भाजपा ने अपने सामान्य कार्यकर्ता बंटी विवेक साहू को मैदान में उतारा, जिन्होंने नकुल नाथ को चित्त कर दिया। कमल नाथ का किला ढहाने का भाजपा का सपना अंततः पूरा हो गया। इसे बुजुर्ग कमल नाथ के राजनीतिक जीवन का अवसान माना जा रहा है।... और अब बात राजगढ़ की। यह कांग्रेस के कद्दावर नेता दिग्विजय सिंह की परंपरागत सीट और मजबूत किला माना जाता था। दिग्विजय लंबे अंतराल के बाद लोस चुनाव मैदान में उतरे। उन्होंने पहले दिन से ही सहानुभूति कार्ड चला। इसे अपना अंतिम चुनाव बताकर मतदाताओं से अपने अहसानों का बदला मांगा, पर किसी ने उनकी नहीं सुनी। कमल नाथ और दिग्विजय सिंह का हश्र यह बताने को काफी है कि मप्र के मन पर किस तरह भाजपा का रंग चढ़ा हुआ है।

इसमें कोई शक नहीं कि इन चुनाव नतीजों में पीएम मोदी की विश्वसनीयता का सर्वाधिक योगदान है। इसके बावजूद पूर्व सीएम चौहान की भूमिका नजरअंदाज नहीं की जा सकती। उनके मुख्यमंत्रित्वकाल की जिस लाड़ली बहना योजना को विधानसभा चुनाव में गेम चेंजर माना गया था, उसका व्यापक प्रभाव लोकसभा चुनाव नतीजों में भी नजर आ रहा है। इस योजना के तहत राज्य सरकार एक करोड़, तीस लाख महिलाओं को प्रतिमाह 1250 रुपये सम्मान राशि प्रदान करती है। इसी योजना की काट के लिए कांग्रेस ने अपने घोषणा-पत्र में वादा कर रखा है कि सत्ता में आने पर उसकी सरकार महिलाओं को प्रतिवर्ष एक लाख रुपये देगी। भाजपा की सफलता की यह कहानी मोहन यादव के जिक्र के बिना अधूरी ही रह जाएगी। उन्हें मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठे छह महीने भी नहीं हुए। जाहिर है, उनसे किसी बड़ी उपलब्धि की अपेक्षा नहीं की जा सकती यद्यपि अपनी संतुलित कार्यशैली और निर्विवाद छवि के बल पर वह भाजपा के प्रति मतदाताओं के विश्वास को बरकरार रखने में सहायक साबित हुए।

जम्मू-कश्मीर में टूटा अब्दुल्ला व मुफ्ती परिवारों का तिलिस्म

मतगणना के दौरान मंगलवार को श्रीनगर में खुशी मनाते भाजपा कार्यकर्ता ● प्रेट्र

जागरण संवाददाता, जम्मू कश्मीर: जम्मू-कश्मीर के लिए चुनाव कई मायने में अहम रहा। मतदान प्रतिशत बढ़ने के साथ-साथ उम्मीदवारों की भागेदारी भी चुनाव में बढ़ी और सही मायने में लोकतंत्र की जीत होती दिखाई दी। मतदाताओं ने सबसे बड़ा झटका कश्मीर में अब्दुल्ला और मुफ्ती परिवार को दिया और उमर अब्दुल्ला और महबूबा मुफ्ती बड़े अंतर से चुनाव हार गए। साफ है कि दोनों परिवार बदली परिस्थितियों में जनता का विश्वास नहीं जीत पाए। अपना गढ़ श्रीनगर छोड़कर बारामुला जाने का फैसला उमर अब्दुल्ला के लिए आत्मघाती साबित हुआ और वह टेरर फंडिंग मामले में जेल में बंद इंजीनियर रशीद शेख से चुनाव हार गए। भले ही नेकां श्रीनगर व अनंतनाग-राजौरी सीट जीत गई पर इसे भी अब्दुल्ला परिवारों की जीत नहीं कहा जा सकता। अनंतनाग चुनाव में गुज्जरों के पीर मियां अल्ताफ को मैदान में उतारकर बड़ा दांव खेला था और उस परिवार के अनुयायियों के उनके पक्ष में खड़े होने से चुनाव एकतरफा हो गया। इल्तिजा मुफ्ती ने रोड शो कर मां महबूबा का चुनाव उठाने का प्रयास किया पर परिणाम देखकर स्पष्ट है कि रोड शो की भीड़ वोट में नहीं बदल सकी।

जम्मू क्षेत्र की दोनों सीटों पर भाजपा ने हैट-ट्रिक बना साबित कर दिया कि जम्मू का गढ़ उसका सुरक्षित है और कांग्रेस के जोरदार प्रचार के बावजूद दोनों सीटें आसानी से भाजपा निकालने में सफल रही। जम्मू सीट पर भाजपा के जुगल किशोर शर्मा लगातार तीसरी बार बड़े अंतर से जीतने में सफल रहे। वहीं, केंद्रीय मंत्री डा. जितेंद्र सिंह को भी ऊधमपुर सीट पर कांग्रेस से चुनौती मिलती दिख रही थी पर अंत में उन्होंने आसान जीत दर्ज कर ली। भाजपा यहां मोदी के नाम, काम और विश्वास के सहारे मैदान में थी।

2019 में उस समय लद्दाख जम्मू-कश्मीर का हिस्सा था और भाजपा ने सभी छह सीटों पर चुनाव लड़ा था।

लद्दाख : क्षेत्र की जंग में लेह पर भारी रहा कारगिल

लद्दाख सीट पर कारगिल बनाम लेह की लड़ाई में इस बार कारगिल भारी साबित हुआ। हर बार यहां लड़ाई इसी मोड़ पर आ जाती है। निर्दलीय मोहम्मद हनीफा जान ने लद्दाख में आसान जीत दर्ज कर ली है। यहां मौजूदा सांसद जामयांग सेरिंग नांग्याल का टिकट काट प्रत्याशी बदलने का भी भाजपा को फायदा नहीं मिला और उसके प्रत्याशी ताशी ग्यालसन तीसरे स्थान पर खिसक गए।

भाजपा | नेशनल कान्फ्रेंस | निर्दलीय | गुलाम जम्मू-कश्मीर

डबल इंजन से विकास की उम्मीद वाला परिणाम

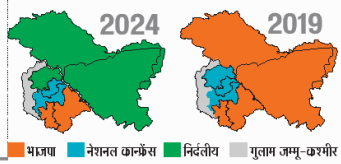

छत्तीसगढ़ का रण

सतीश चंद्र श्रीवास्तव ● नईदुनिया

रायपुर : लोकसभा चुनाव परिणाम से स्पष्ट संकेत है कि छत्तीसगढ़ के मतदाताओं ने डबल इंजन की सरकार में विकास की उम्मीद के साथ मतदान किया। अपने छह महीने के कार्यकाल में प्रदेश के पहले आदिवासी मुख्यमंत्री काफी हद तक जनता का भरोसा जीतने में सफल रहे। विधानसभा चुनाव के संकल्प-पत्र के कार्यान्वयन का इसमें महत्वपूर्ण योगदान रहा। साथ ही यह भी माना जा सकता है कि कांग्रेस की गुटबाजी और भ्रष्टाचार के आरोपितों की उम्मीदवारी ने भी 11 में 10 सीटों पर भाजपा की राह को आसान बनाया। कांग्रेस के नेता व नेता प्रतिपक्ष डा. चरणदास महंत की पत्नी डा. ज्योत्सना महंत ने कोरबा से जीत पाई है। उन्होंने भाजपा की पूर्व राज्यसभा सदस्य डा. सरोज पांडेय को पराजित किया है।

लोस चुनाव में भाजपा ने वर्ष 2019 के नौ में से सिर्फ दो सांसदों, दुर्ग के विजय बघेल और राजनांदगांव के संतोष पांडेय, को ही 2024 में अवसर दिया और दोनों ही सफल रहे। भाजपा नेतृत्व ने राज्य और केंद्र में सरकार बनने पर नक्सलवाद के पूर्ण सफाये के साथ ही शिक्षा, चिकित्सा, रोजगार और ढांचागत सुविधाओं में गुणात्तमक सुधार का वादा किया था। पार्टी के शीर्ष नेताओं ने कई सभाएं कर प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर प्रदेश में विकास, रोजगार और उद्योग की संभावाओं के लिए संदेश दिया। सरल व्यवहार के साथ दृढ़ संकल्प वाले मुख्यमंत्री साय ने भी 130 से अधिक सभाओं के माध्यम से 2047 के विकसित छत्तीसगढ़ का लक्ष्य जनता तक पहुंचाने का प्रयास किया। उल्लेखनीय है कि 2018 में 68 सीटें जीतकर प्रदेश की सत्ता पर काबिज भूपेश बघेल 2019 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को प्रदेश की सिर्फ दो सीटें ही जिताने में सफल रहे थे।

जीत की प्रमुख वजह : प्रदेश में भाजपा की जीत सुनिश्चित कराने में लोस चुनाव की घोषणा से पहले ही उम्मीदवारों की घोषणा ने भी अहम योगदान किया। साय और प्रदेश अध्यक्ष किरण देव सिंह के नेतृत्व में संगठन ने बेहतर तालमेल के साथ काम किया तो कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज बस्तर से टिकट कटने के बाद लगभग अलग-थलग पड़ गए। राहुल गांधी, प्रियंका गांधी वाड्रा और मल्लिकार्जुन खरगे की छह चुनावी सभाएं भी प्रभाव छोड़ने ने सफल नहीं रहीं। इधर, पीएम मोदी ने अकेले चार सभाएं कीं। इसके अलावा अमित शाह, जेपी नड्डा, उप्र के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ समेत अन्य नेताओं की 17 सभाओं ने भाजपा के पक्ष में माहौल को मजबूती दी। प्रदेश के 34 प्रतिशत आदिवासियों के बीच मुख्यमंत्री विष्णु देव साय का नाम भरोसे का पर्याय बनता जा रहा है। सनातन विचारधारा वाले साय मतांतरण, ईसाई मिशनरियों और नक्सलियों के विरुद्ध दृष्टि और कार्यनीति के लिए भी जाने जाने लगे हैं। यही कारण रहा कि छह महीने पहले सत्ता पर काबिज डबल इंजन की सरकार को भी जनता का पुरजोर समर्थन मिला।

लोकसभा चुनाव के परिणाम के क्रम में मंगलवार को रायपुर में छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय का मुंह मीठा कराते प्रदेश भाजपा अध्यक्ष किरण सिंह देव ● नईदुनिया

इस लोकसभा चुनाव में

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की चार जनसभाएं

8 अप्रैल को आमाबाल (बस्तर), 23 अप्रैल को सक्ती (जांजगीर चांपा) इसी दिन 23 अप्रैल को ही श्यामतराई (धमतरी) व 24 अप्रैल को पीएम मोदी ने अंबिकापुर (सरगुजा) में सभा ली।

सभी चार सीटों पर भाजपा की जीत

राहुल गांधी ने दो सभा ली

बस्तर, बिलासपुर- दोनों में कांग्रेस हारी

11 में से 10 सीटों पर भाजपा ने पाई जीत, पिछली बार नौ पर जीती थी

2 सांसदों को छोड़ भाजपा ने सभी सीटों पर नए को दिया था मौका

भूपेश बघेल ● फाइल फोटो

कवासी लखमा ● फाइल फोटो

ये दिग्गज नेता हारे

कांग्रेस ने पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को राजनांदगांव, कवासी लखमा को बस्तर और देवेंद्र यादव को बिलासपुर संसदीय क्षेत्र से चुनाव मैदान में उतारा था। तीनों के नाम 540 करोड़ रुपये के कोयला परिवहन घोटाला, 2,100 करोड़ के आबकारी घोटाला और हजारों करोड़ रुपये के महादेव सट्टा एप से जुड़े भ्रष्टाचार में शामिल हैं। इसी तरह विधायक और मंत्री रहते हुए पराजित शिवकुमार डाहरिया, ताम्रध्वज साहू और विकास उपाध्याय को कांग्रेस ने क्रमशः जांजगीर चांपा, महासमुंद और रायपुर संसदीय क्षेत्र से उम्मीदवार बनाया। साय के नेतृत्व को स्वीकार करते हुए जनता ने इन सभी को नकार दिया। भाजपा से पूर्व राज्यसभा सदस्य डा. सरोज पांडेय भी चुनाव हार गईं।

छग में भाजपा और कांग्रेस को प्राप्त मत प्रतिशत

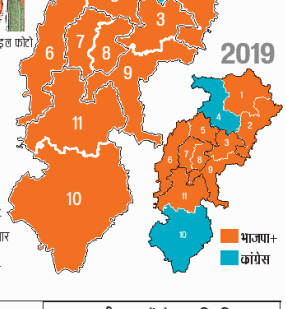

वर्ष	कुल	राजग		यूपीए/आइएनडीआइए	
		सीट	वोट%	सीट	वोट%
2019	11	9	50.70	2	40.90
2024	11	10	52.62	1	41.08

छत्तीसगढ़ में क्षेत्रवार स्थिति

क्षेत्र	राजग		संप्रग/आइएनडीआइए	
	2019	2024	2019	2024
उत्तर क्षेत्र (2)	2	2	0	0
दक्षिण क्षेत्र (2)	1	2	1	0
मध्य क्षेत्र (7)	6	6	1	1

भाजपा के गढ़ गांधीनगर में शाह ने तोड़ा रिकार्ड

राज्य ब्यूरो, गांधीनगर : गुजरात की गांधीनगर लोकसभा सीट को भाजपा का गढ़ माना जाता है। पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी, पूर्व उप प्रधानमंत्री लाल कृष्ण आडवाणी जैसे दिग्गज इस सीट से चुनाव जीतकर संसद पहुंच चुके हैं। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने इस सीट पर अब तक के सभी रिकार्ड को ध्वस्त करते हुए 744716 मतों के अंतर से जीत दर्ज की। उन्हें 76.48 प्रतिशत मत मिले। शाह ने गांधीनगर लोकसभा को देश की सबसे विकसित लोकसभा बनाने के संकल्प के साथ करीब 22,500 करोड़ रुपये के विकास कार्य कराए। शाह के अलावा कांग्रेस की सोनल बेन को 266256 मत मिले।

इसके अलावा बसपा के उम्मीदवार मो. दानिश को 7394 मत, राइट टू रिकाल पार्टी के राहुल मेहता को 1001 तथा 10 निर्दलीय को एक हजार से कम मत मिले। गांधीनगर सीट से पूर्व उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी छह बार 1991,1998,1999,2004,2009 और 2014 में सांसद चुने गए। 2014 के चुनाव में उन्हें सर्वाधित 68 प्रतिशत वोट मिले थे। इससे पहले पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को इसी सीट से 66.3 प्रतिशत वोट मिले थे। जबकि, गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री शंकर सिंह वाघेला को करीब इतने ही 66.2 प्रतिशत मत मिले थे। शाह को कुल 1010972 मत मिले।

76.48 प्रतिशत मत मिले, 744716 मतों के अंतर से जीते शाह

गुजरात में भाजपा की मजबूत पकड़ बरकरार

शत्रुघ्न शर्मा ● जागरण

गांधीनगर : गुजरात की 26 लोकसभा सीटों में से 25 पर भाजपा ने अपना कब्जा बरकरार रखा, लेकिन भाजपा सभी सीटों पर जीत की हैट्रिक लगाने से चूक गई। उत्तर गुजरात की बनासकांठा सीट पर कांग्रेस की गेनीबेन ठाकोर ने कशमकश भरे मुकाबले में 30 हजार से अधिक मतों से बाजी मार ली। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने पिछला रिकार्ड तोड़ते हुए 7.44 लाख मतों के अंतर से गांधीनगर सीट पर दूसरी बार चुनाव जीता।

गांधीनगर लोकसभा सीट से भाजपा उम्मीदवार अमित शाह को 10,10,972 मत (76.68 प्रतिशत) मिले, जबकि कांग्रेस की सोनल पटेल को 2,66,256 मत (20 प्रतिशत) ही मिल सके। भाजपा ने यह सीट 10 लाख मतों के अंतर से जीतने का दावा किया था। उत्तर गुजरात की बनासकांठा सीट सर्वाधिक चर्चा में रही। यहां से कांग्रेस की गेनीबेन ठाकोर ने भाजपा की डा. रेखा बेन चौधरी को 30,406 मतों से पराजित किया। ठेठ देसी अंदाज में अपने ससुराल में घूंघट निकालकर वोट मांगती गेनी बेन को मतदाताओं ने वोटों के साथ ही क्राउड फंडिंग के जरिये करीब 27 लाख रुपये भी दिए। गुजरात की इस एक सीट पर हार का गम भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सीआर पाटिल व अन्य नेताओं के चेहरे पर भी देखने को मिला। पाटिल ने कहा, यहां हमारी मेहनत में कमी रह गई, थोडे अंतर से भाजपा यह सीट हार गई। वर्ष 2014 व 2019 के चुनाव में भाजपा ने गुजरात की सभी 26 सीटों पर जीत हासिल की थी। 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने सात मई को मतदान से पहले ही सूरत सीट निर्विरोध जीत ली थी।

लोकसभा चुनाव की घोषणा के पहले भाजपा ने सभी 26 सीटों को पांच-पांच लाख मतों के अंतर से जीतने का दावा किया था। राजे-रजवाड़ों को लेकर जो विवादित बयान दिया था, उससे राजकोट, जामनगर, आणंद व सुरेंद्रनगर सीटों पर भाजपा को नुकसान का अंदाज था, लेकिन सभी अटकलों को धता-बताते हुए केंद्रीय मंत्री परशोत्तम रूपाला ने राजकोट में 4.84 लाख मतों से जीत दर्ज की। उनके विरुद्ध कांग्रेस ने पूर्व अध्यक्ष एवं पूर्व नेता प्रतिपक्ष परेश धनाणी को मैदान में उतारा था। केंद्रीय मंत्री मनसुख मांडविया पोरबंदर सीट पर 3.5 लाख मतों के अंतर से आगे थे। आणंद से कांग्रेस उम्मीदवार एवं पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अमित चावड़ा करीब 90 हजार मतों से चुनाव हार गए।

गांधीनगर में मंगलवार को लोकसभा चुनाव की मतगणना के क्रम में प्रसन्नता व्यक्त करते गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल एवं अन्य ● प्रेट्र

पाटिल ने फिर बनाया रिकार्ड

गुजरात भाजपा अध्यक्ष सीआर पाटिल ने 2019 में नवसारी सीट पर देश में सबसे अधिक 6,69,668 मतों से जीत दर्ज की थी, इस बार उन्होंने रिकार्ड 7,68,799 मतों के अंतर से जीत दर्ज की। उनके सामने कांग्रेस के नैषध देसाई को 2,54,567 मत ही मिले जो करीब 19 प्रतिशत रहे, जबकि पाटिल को 77 प्रतिशत से अधिक मत मिले।

गुजरात में भाजपा और कांग्रेस को प्राप्त मत प्रतिशत

वर्ष	कुल	राजग		कांग्रेस	
		सीट	वोट%	सीट	वोट%
2019	26	26	62.21	0	32.11
2024	26	25	61.86	1	33.93

26 लोकसभा सीटों में से 25 पर भाजपा ने अपना कब्जा बरकरार रखा

गुजरात में क्षेत्रवार स्थिति

क्षेत्र	राजग		संप्रग/आइएनडीआइए	
	2019	2024	2019	2024
सौराष्ट्र कच्छ	8	8	0	0
उत्तर गुजरात	7	7	0	1
मध्य गुजरात	6	6	0	0
दक्षिण गुजरात	5	5	0	0

(अभी अंतिम आंकड़ें नहीं आए हैं। अपडेट होगा)

****

दैनिक जागरण

जीवन में कुछ भी स्थायी नहीं

गठबंधन युग की वापसी

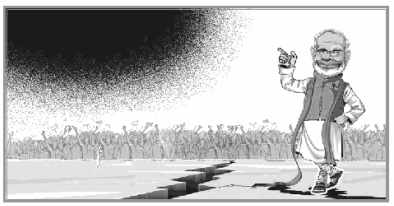

लोकसभा के चुनाव नतीजों ने एक्जिट पोल के निष्कर्षों के साथ अन्य अनेक अनुमानों को भी गलत साबित किया। परिणाम कई दृष्टि से अप्रत्याशित हैं, लेकिन लोकतंत्र की यही खूबसूरती है। जनता के मन में क्या है, इसकी थाह लेना कठिन होता है। नतीजों ने बताया कि जो भाजपा अपने सहयोगी दलों के साथ चार सौ पार का नारा लगा रही थी, उसके लिए तीन सौ पार जाना भी चुनौती बन गया। स्वयं भाजपा 272 के आंकड़े से पीछे रह गई। यह उसके लिए एक झटका है। उसे यह झटका लगा उसके अपने गढ़ उत्तर प्रदेश में भी। इसके साथ ही महाराष्ट्र, राजस्थान, हरियाणा और बंगाल में भी वह अपेक्षित प्रदर्शन नहीं कर सकी। उसके लिए यह तो अच्छा रहा कि ओडिशा, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश आदि में उसने उल्लेखनीय प्रदर्शन किया और गुजरात एवं मध्य प्रदेश में चमत्कार सा कर दिखाया, अन्यथा वह और भी पीछे रह जाती। चुनाव नतीजों से यह स्पष्ट है कि कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों ने आशा से कहीं अधिक बेहतर प्रदर्शन किया। जहां कांग्रेस ने अपनी सीटें अच्छी-खासी बढ़ा लीं, वहीं समाजवादी पार्टी, डीएमके, तृणमूल कांग्रेस ने भी अपेक्षा से बेहतर प्रदर्शन कर भाजपा को चौंकाया।

चुनाव नतीजों ने कांग्रेस और उसके साथ खड़े दलों को राजनीतिक बल देने के साथ उनके मनोबल को भी बढ़ाने का काम किया है। कांग्रेस वापसी की राह पर आती दिख रही है और इसका श्रेय जाता है उसकी ओर से बनाए गए नैरेटिव को। निःसंदेह भाजपा ने भी अपना नैरेटिव स्थापित करने की कोशिश की, लेकिन वह पूरे देश में उतना प्रभावी नहीं रहा। वह अपने पक्ष में वैसा कोई राष्ट्रीय विमर्श खड़ा नहीं कर सकी, जैसा पिछले आम चुनाव में बालाकोट हमले के कारण खड़ा करने में सफल रही थी। जहां भाजपा ने रेवड़ी संस्कृति से दूर रहना तय किया, वहीं विपक्ष ने इस संस्कृति को जोर-शोर से अपनाया और भुनाया भी। इसके अलावा कांग्रेस और सहयोगी दलों ने भाजपा की ओर से आरक्षण खत्म करने और संविधान बदलने की जो हवा बनाई, वह भी कुछ राज्यों और विशेष रूप से उत्तर प्रदेश में असर करती दिखी। भाजपा को सबसे बड़ा झटका उत्तर प्रदेश में ही लगा। इसका कारण कमजोर प्रत्याशी और नेताओं की आपसी खींचतान भी दिखती है और जाति-पंथ की राजनीति भी। केंद्रीय मुद्दे के अभाव में स्थानीय मुद्दे भी कहीं अधिक असरकारी हो गए और इसी कारण अलग-अलग राज्यों में हार-जीत के कारण भी भिन्न-भिन्न दिख रहे हैं। विपक्षी दल तो जनता को लोकलुभावन वादों से लुभाने में सफल रहे, लेकिन भाजपा विकसित भारत और देश को तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने जैसे वादों से जनता के एक वर्ग और विशेष रूप से निर्धन-वंचित तबके को उतना आकर्षित नहीं कर सकी। इस तबके को इन वादों में अपने लिए कुछ खास न दिखाई दिया हो तो हैरानी नहीं।

> बहुमत के साथ सहयोगी दलों संग सरकार चलाना अलग बात है और उन पर निर्भर होकर शासन करना अलग बात

भाजपा के लिए यह संतोष की बात है कि ओडिशा की बागडोर उसके हाथ आ गई और आंध्र में उसके सहयोगी चंद्रबाबू नायडू सरकार बनाने जा रहे हैं, लेकिन इसके बावजूद वह लोकसभा में संख्याबल के लिहाज से कमजोर हुई है। अब केंद्रीय स्तर पर गठबंधन राजनीति और वह भी मजबूरियों वाली राजनीति फिर से एक आवश्यकता बन गई है। बहुमत के साथ सहयोगी दलों संग सरकार चलाना अलग बात है और उन पर निर्भर होकर शासन करना अलग बात। इस बार प्रधानमंत्री मोदी के सामने गठबंधन सरकार चलाने की मजबूरी होगी। इसके चलते निर्णायक प्रधानमंत्री की उनकी छवि पर असर पड़ सकता है और इसका प्रभाव शासन संचालन में दिख सकता है। अब भाजपा को अपनी प्राथमिकताओं से भी समझौता करना पड़ सकता है, क्योंकि उसे अपने एजेंडे को लागू करने के लिए सहयोगी दलों पर निर्भर रहना होगा। गठबंधन सरकार की कुछ मजबूरियां होती हैं। उनका लाभ सहयोगी दल ही नहीं, बल्कि विपक्षी दल भी उठाते हैं। विपक्ष की ताकत बढ़ जाने से से भावी सरकार को उसके साथ कहीं अधिक सहयोग और समन्वय का परिचय देना होगा। यह परिचय देने के लिए विपक्ष को भी तैयार रहना चाहिए।

चुनौतियों भरी तीसरी पारी

डा. एके वर्मा

अबकी बार मोदी को घटक दलों, खासतौर से नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू पर विशेष ध्यान देना होगा, जिससे सरकार में अस्थिरता न आने पाए

लोकसभा चुनावों में भाजपा सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी और राजग को बहुमत प्राप्त हुआ। जवाहरलाल नेहरू के बाद नरेन्द्र मोदी पहले प्रधानमंत्री हैं, जो तीसरी बार सत्ता में आने जा रहे हैं। वह चार सौ पार के लक्ष्य से काफी पीछे रह गए, पर उन्होंने जबरदस्त चुनाव-प्रचार किया और इसी कारण भाजपा ने ओडिशा, मध्य प्रदेश, हिमाचल, दिल्ली, बिहार, त्रिपुरा और असम आदि में बेहतर प्रदर्शन किया, मगर उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान और बंगाल जैसे कुछ बड़े राज्यों में उसका प्रदर्शन निराशाजनक रहा। 2014 के बाद पहली बार भाजपा को अपने बलबूते पूर्ण बहुमत यानी 272 सीटें नहीं मिलीं। इसके बाद भी यह नहीं भूलना चाहिए कि मोदी सरकार को दस वर्ष के सत्ताविरोधी रुझान का सामना करना पड़ रहा था। यह तय है कि भाजपा को घटक दलों पर कुछ ज्यादा ही आश्रित रहना पड़ेगा।

चुनाव परिणामों ने भारतीय लोकतंत्र को विजयी बनाया है। वैश्विक स्तर पर और विपक्ष द्वारा एक नैरेटिव गढ़ा गया था कि भारत में लोकतंत्र खत्म हो गया है। विपक्षी गठबंधन ने तो चुनाव आयोग को ही कठघरे में खड़ा कर दिया। अनेक सवाल ईवीएम पर उठाए गए, पर चुनाव परिणामों ने उन सभी पर विराम लगा दिया। विपक्षी दलों का प्रदर्शन शानदार रहा और यदि वे संसद में एकजुट रहे तो भारतीय लोकतंत्र को सशक्त विपक्ष मिलेगा।

मोदी सरकार का तीसरी बार सत्ता में आना इसका संकेत है कि जनता ने विपक्ष के बजाय उसकी नीतियों को स्वीकृति दी। नतीजे भाजपा को अखिल भारतीय स्वरूप प्रदान करते हैं, क्योंकि उसने दक्षिण में कर्नाटक के अतिरिक्त अन्य राज्यों में भी अपनी पैठ बनाई। नतीजे विपक्ष की कामयाबी दर्शाने के बाद भी उसकी नकारात्मक राजनीति एवं आरोपात्मक मोदी-विरोधी विमर्श को खारिज करते हैं। वास्तव में ये नतीजे भारतीय लोकतंत्र के सशक्त होने का प्रमाण हैं, जिसके बारे में विपक्ष द्वारा भ्रांतियां फैलाई गईं। वहीं, भाजपा के कमजोर प्रदर्शन के बाद भी मोदी की 'त्रिशूल रणनीति' काम आई, जो सुशासन एवं लोक-कल्याणकारी विकास, समावेशी राजनीति तथा जातीय-अस्मिता को वर्ग-राजनीति से संबद्ध करने से बनी है। इसने भारतीय राजनीति के व्याकरण को बदल डाला। दस वर्षों में मोदी की जन-कल्याणकारी योजनाओं का लाभ जनता को बिना भेदभाव मिला।

भारतीय राजनीति शुरू से ही जातीय अस्मिता के मकड़जाल में फंसी रही, लेकिन मोदी ने उसे वर्ग राजनीति से जोड़ा। उन्होंने महिलाओं, युवाओं, सीमांत किसानों और गरीबों-चार वर्गों का पुनर्सृजन किया और उन्हें जातीय-अस्मिता से संबद्ध कर सामाजिक-संरचना में वर्ग चेतना का संचार किया। आज देश 'भाजपा-सिस्टम' की ओर जा रहा है, ठीक वैसे ही जैसे स्वतंत्रता बाद 'कांग्रेस-सिस्टम' की ओर गया था, जिसमें कांग्रेस की सामाजिक संरचना का विस्तार सभी राज्यों में हो गया था, लेकिन इस बार विपक्ष के विमर्श से उत्तर प्रदेश जैसे बड़े राज्य में पिछड़ी जातियों और दलितों में भी आरक्षण और संविधान को लेकर एक शंका पैदा हो गई और वे भाजपा से दूर हो गए। चार सौ पार नारे ने भी इस भय को हवा दी कि इतनी बड़ी संख्या में सीटें जीतकर भाजपा कहीं संविधान न बदल दे। भाजपा और मोदी उन्हें यह नहीं समझा सके कि आखिर चार सौ से ज्यादा सीटें क्यों चाहिए? यह मनोवैज्ञानिक दबाव मोदी की तमाम लोक-कल्याणकारी योजनाओं पर भारी पड़ा। मोदी सरकार द्वारा 80 करोड़ लोगों को मुफ्त राशन देने का अर्थ विपक्ष ने यह बताया कि देश में बहुत गरीबी है, जबकि 80 करोड़ लोग जान रहे थे कि उनके घर कोई भूखा नहीं सोएगा। मोदी सरकार ने आयुष्मान से स्वास्थ्य सुरक्षा, नल से जल द्वारा जल सुरक्षा, फसल बीमा योजना से फसलों की सुरक्षा, जनधन योजना, किसान सम्मान निधि और डीबीटी से वित्तीय सुरक्षा, स्वच्छ भारत योजना से महिला सुरक्षा और अन्य योजनाओं से जो 'सुरक्षा कवच' गरीबों के लिए निर्मित किया, वह इस मनोवैज्ञानिक भय के सामने उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में कुछ काम न आया कि यह सरकार फिर सत्ता में आई तो आरक्षण खतरे में पड़ सकता है।

अवधेश राजपूत

दक्षिणी राज्यों तेलंगाना, आंध्र में तो भाजपा का प्रदर्शन अच्छा रहा, लेकिन राजस्थान में अंतर्कलह और टिकट आवंटन के कारण भितरघात से पार्टी का प्रदर्शन उतना अच्छा नहीं रहा। महाराष्ट्र में भी भाजपा के प्रयोग अपना प्रभाव न छोड़ सके। सबसे चौंकाने वाले परिणाम बंगाल के रहे, जहां ममता बनर्जी ने वर्चस्व बनाए रखा और भाजपा अपना जनाधार न बढ़ा सकी। इसके विपरीत ओडिशा विधानसभा और लोकसभा में भाजपा का शानदार प्रदर्शन रहा और लंबे समय बाद नवीन पटनायक को विस्थापित कर वह अपनी सरकार बनाएगी। आंध्र में भी चंद्रबाबू नायडू की टीडीपी और जनसेना से गठबंधन कर भाजपा ने लोकसभा और विधानसभा में शानदार प्रदर्शन किया।

यूपी में अखिलेश यादव और राहुल गांधी ने मिलकर उम्दा प्रदर्शन किया। उन्होंने न केवल अपनी सीटें अप्रत्याशित रूप से बढ़ाईं, बल्कि अपना जनाधार भी बढ़ाया। उन्होंने 2017 वाली दो-लड़कों की छवि को तोड़ा और जनता का विश्वास हासिल किया। यह आगामी विधानसभा चुनावों में प्रभावी हो सकता है। जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद-370 हटने के बाद जनता की उत्साहपूर्ण सहभागिता और उमर अब्दुल्ला एवं महबूबा मुफ्ती का हारना लोकतंत्र के लिए सकारात्मक संदेश है, लेकिन पंजाब में खालिस्तान समर्थकों का चुनाव जीतना शुभ संकेत नहीं।

भारतीय राजनीति में कुछ अपवादों को छोड़कर वामपंथ केंद्रित सरकारों का वर्चस्व रहा, लेकिन 2014 से दक्षिणपंथी सरकारों का दबदबा बढ़ा। इस विचारधारामूलक संक्रमण के कारण राजनीति में उथलपुथल है और विपक्ष को लोकतंत्र और संविधान पर खतरा दिखाई देता है, लेकिन भाजपा अभी भी मजबूत स्थिति बनाए रख सकती है। इसमें उसका संगठन, जनसंपर्क, कुशल चुनाव एवं बूथ प्रबंधन तथा कार्यकर्ताओं की निष्ठा उत्तरदायी होगी। चूंकि तीसरी बार सत्ता में आने जा रहे मोदी के सामने चुनौतियां अधिक होंगी, इसलिए उन्हें न केवल व्यक्तिगत समर्पण, वरन अपने सांसदों और विधायकों के जनसंपर्क और जनसमर्पण को सुनिश्चित करना पड़ेगा। मोदी को राजग के घटक दलों-खासतौर से नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू पर विशेष ध्यान देना होगा, जिससे सरकार में किसी प्रकार की अस्थिरता न आए।

(लेखक सेंटर फार द स्टडी आफ सोसायटी एंड पालिटिक्स के निदेशक एवं राजनीतिक विश्लेषक हैं)

response@jagran.com

विपक्ष को मिली राजनीतिक संजीवनी

राज कुमार सिंह

विपक्षी दल अगर थोड़ी बेहतर तैयारी और रणनीति से चुनाव लड़े होते तो सत्ता भी उनके हाथ लग सकती थी

विपक्षी दलों के कदम भले ही सत्ता की देहरी से काफी दूर रह गए हों, लेकिन उन्हें राजनीतिक संजीवनी जरूर मिल गई। भाजपा का चार सौ पार का नारा भोथरा साबित हुआ, लेकिन उसके नेतृत्व वाला गठबंधन बहुमत को पार कर गया है। परिणाम में अंततः जीत ही मायने रखती है, जो चाहे एक ही वोट से क्यों न हो। चुनावी बिगुल बजते समय एक ओर केंद्र और अधिकांश राज्यों की सत्ता संभालने वाली भाजपा जैसी शक्तिशाली पार्टी थी तो दूसरी ओर लुंजपुंज विपक्ष। संसाधनों से लेकर मनोबल तक, किसी भी मोर्चे पर यह मुकाबला बराबरी का नहीं दिख रहा था। इसके बावजूद अगर कांग्रेस दस साल बाद सौ के करीब और विपक्षी मोर्चा आइएनडीआइए लगभग 200 का आंकड़ा छू पाने में सफल रहा, तो निश्चय ही यह प्रदर्शन न केवल उनके लिए संजीवनी साबित होगा, बल्कि लोकतंत्र को भी मजबूती देगा।

पिछले चुनाव में 303 सीटें जीतने वाली भाजपा के विरुद्ध विपक्ष किस हद तक पस्त था, इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि 55 साल तक केंद्रीय सत्ता पर काबिज रही कांग्रेस का दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, उत्तराखंड और हिमाचल में खाता तक नहीं खुल पाया। पिछले चुनाव में उत्तर प्रदेश में सपा-बसपा गठबंधन 15 सीटें जीत कर कुछ चुनौती देता नजर आया, लेकिन इस चुनाव में बसपा का हाथी पता नहीं कौन सी पलटी मार गया। अन्य विपक्षी दलों की हालत भी अच्छी नहीं थी। महाराष्ट्र में शिवसेना ने राजग छोड़ कांग्रेस और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के साथ मिलकर उद्धव ठाकरे के नेतृत्व में सरकार अवश्य बना ली, पर तीन साल में सरकार गिरने के अलावा शिवसेना और राकांपा भी टूट गईं। दो साल पहले तक लगता नहीं था कि 2024 के आम चुनाव में भी विपक्ष मोदी की भाजपा को कोई चुनौती दे पाएगा, लेकिन 2023 में विपक्षी एकता की कवायद से समीकरण बदले। बेशक सूत्रधार वही नीतीश कुमार बने, जो लंबे समय तक भाजपा के साथ मिलकर बिहार में सरकार चलाते रहे और मोदी विरोध में भी उन्होंने राजग से मुंह मोड़ लिया था। एकता की कवायद का ही परिणाम रहा कि दो-चार नहीं, 28 दलों ने आइएनडीआइए नाम से नए मोर्चे का एलान किया।

राहुल गांधी संग अखिलेश यादव। प्रेट्र

आइएनडीआइए बनने के बाद अपने रजत जयंती वर्ष में राजग एकाएक न सिर्फ सक्रिय हुआ, बल्कि कुनबा बढ़ाता भी नजर आया। कुनबा विस्तार ने अंततः केंद्रीय सत्ता के खेल में कितनी निर्णायक भूमिका निभाई, यह अलग विश्लेषण का विषय है, लेकिन आइएनडीआइए उसके मुकाबले लड़खड़ा गया। इसके लिए आइएनडीआइए किसी और को दोषी भी नहीं ठहरा सकता। शायद चुनाव परिणामों के बाद विपक्ष को अहसास हुआ हो कि उसे परस्पर शह-मात के आत्मघाती खेल के चलते ही सत्ता के बजाय सिर्फ संजीवनी से संतोष करना पड़ा। कर्नाटक की सत्ता भाजपा से छीन चुकी कांग्रेस को लगा कि अगर राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ भी जीत गई तो आइएनडीआइए के अन्य घटक दल उसके इशारों पर चलने को मजबूर हो जाएंगे। इसीलिए उसने इन विधानसभा चुनावों में अन्य घटक दलों से तालमेल तो दूर, बात तक करने की जरूरत नहीं समझी। एक-दूसरे के विरुद्ध उम्मीदवार उतारे, परस्पर कटुता भी बढ़ी। कांग्रेस अप्रत्याशित रूप से तेलंगाना विधानसभा चुनाव तो जीत गई, लेकिन राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में भाजपा के विरुद्ध नहीं टिक पाई। बेशक विपक्षी दलों के अस्तित्व पर ही मंडराते संकट के मद्देनजर आइएनडीआइए एक बार फिर सक्रिय हुआ। हालांकि इस बीच उपजे अविश्वास का लाभ उठाकर भाजपा नीतीश कुमार और जयंत चौधरी को राजग से जोड़ने में सफल रही। देश के दो बड़े राज्यों में दो प्रमुख मित्र दलों के पालाबदल से भी आइएनडीआइए ने सबक नहीं सीखा और पीएम का चेहरा तो दूर, संयोजक और साझा न्यूनतम कार्यक्रम बिना ही चुनाव मैदान में उतरा।

गठबंधन की गांठें ढीली होने के बावजूद इन लोकसभा चुनावों में विपक्ष ने जैसा प्रदर्शन किया, वह बताता है कि दूरदर्शिता और बेहतर राजनीतिक समझदारी से काम लिया गया होता तो शायद दिल्ली दूर नहीं रह जाती। अगर सपा-कांग्रेस मिलकर उत्तर प्रदेश में भाजपा को जोरदार झटका दे सकते हैं तो जयंत चौधरी और नीतीश कुमार के भी साथ होने पर क्या होता? अगर किसी तरह मायावती की बसपा को आइएनडीआइए साध लेता, तब क्या पूरा खेल ही नहीं पलट जाता? आखिर महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे की शिवसेना, शरद पवार की राकांपा तथा कांग्रेस मिलकर भाजपा गठबंधन को रोकने में सफल हो ही गए। कुछ लोगों को लगता है कि बंगाल में तृणमूल कांग्रेस भी आइएनडीआइए से मिलकर चुनाव लड़ती तो बेहतर होता, पर ममता का अलग लड़ने का फैसला रणनीतिक रूप से सही था। दिल्ली में सीट बंटवारे के बावजूद कांग्रेस और आप ने पंजाब में अलग-अलग लड़कर भी सही किया। अलग-अलग लड़ने से बंगाल और पंजाब में सत्ता से असंतुष्ट मतदाताओं को भाजपा के अलावा भी एक विकल्प मिल गया। फिर भी इस सच से मुंह नहीं चुराया जा सकता कि सत्ता के बजाय संजीवनी पर ही संतोष करने को मजबूर विपक्ष अपनी इस विडंबना के लिए स्वयं जिम्मेदार है। अगर उसने नामकरण के बाद आइएनडीआइए को वास्तव में राजनीतिक जमीन पर साकार किया होता और संयोजक और साझा न्यूनतम कार्यक्रम तय करते हुए संयुक्त चुनाव अभियान चलाया होता तो संजीवनी के बजाय सत्ता उसके हाथ लग सकती थी।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

भरोसा

हर नया दिन हमारे समक्ष एक नया अवसर लेकर आता है। नया दिन यह वादा करता है कि हम किसी भी समय और किसी भी स्तर पर जीवन को नया रूप दे सकते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि हम अपनी गलतियों से कुछ सीख लें। इसके लिए स्वयं से प्रश्न करने होंगे। जेम्स थरबर ने कहा है कि सारे उत्तर सही जानने से अच्छा है कुछ प्रश्नों को सही रूप में जान लेना। काम शुरू करने से पहले सोच-विचार करना अच्छी बात है, लेकिन सोचते ही रह जाना सही नहीं है। क्या, कहां, कौन, कब और कैसे, इन सवालों में ही उलझकर कदम ही न बढ़ाना कहीं नहीं ले जाता। इससे अकर्मण्यता की स्थिति बनती है। शम्स तबरेज कहते हैं, 'यह जानने की कोशिश बेकार है कि कौन सी राह कहां ले जाएगी? बस पहले कदम के बारे में सोचें। बाकी अपने आप हो जाएगा।'

व्यक्ति को अपना दृष्टिकोण सकारात्मक बनाने के लिए जीवन का गणित बदलना होता है। जीवन को नई दिशा देने के लिए कांटों की ही नहीं, अपितु फूलों की गणना भी जरूरी होती है। अगर जीवन भर कांटे-ही-कांटे देखते रहें तो फूल भी कांटे बन जाते हैं। हकीकत यह है कि हंसी व आंसू दोनों अपने ही भीतर हैं। सोच को सकारात्मक बना लें तो जीवन रसमय बन जाएगा। इसीलिए कहा भी गया है कि 'रहस्य यह नहीं है कि दुनिया कैसी है, बल्कि यह है कि दुनिया ऐसी है।'

जीवन में बेहतरीन होना शेष है। कई खूबसूरत पल आगे की राह में हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। हमारी कई उम्मीदों को उड़ान भरनी है। कई आश्चर्यों से साक्षात्कार होना शेष है। कई सुख हाथ पसारे हुए हमारा स्वागत करने के लिए तैयार होते हैं, परंतु समस्या यह है कि हम अन्यमनस्कता में जिए जा रहे हैं। दुनिया हमारी ओर मुंह किए खड़ी है और हम अन्यत्र उदास बने खड़े हैं। अपने भरोसे को मजबूत बनाएं, दुनिया में बहुत कुछ आपके लिए है।

ललित गर्ग

वेनेजुएला हुआ ग्लेशियर-विहीन

सुधीर कुमार

> हंबोल्ट ग्लेशियर के भी खत्म हो जाने से वेनेजुएला ग्लेशियर-विहीन देश बन गया है।

वेनेजुएला हाल ही में अपने सभी ग्लेशियर खोने वाला दुनिया का पहला देश बन गया है। इंटरनेशनल क्लाइमेट एंड क्रायोस्फीयर इनिशिएटिव ने इसकी पुष्टि करते हुए कहा कि वेनेजुएला का अंतिम ग्लेशियर हंबोल्ट ग्लोबल वार्मिंग के कारण सिकुड़कर इतना छोटा हो गया कि अब वह ग्लेशियर होने के मानक को पूरा नहीं करता। यह चिंताजनक घटना है, क्योंकि कभी वेनेजुएला में छह ग्लेशियर होते थे, लेकिन ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन के कारण इनका आकार कम होता गया और 2011 तक इनमें से पांच ग्लेशियर पूरी तरह से समाप्त हो गए थे। अब हंबोल्ट ग्लेशियर के भी खत्म हो जाने से यह देश ग्लेशियर विहीन हो गया है।

इस घटना ने पूरी दुनिया का ध्यान खींचा है और जलवायु परिवर्तन के खतरों के प्रति जागरूकता बढ़ाई है। ग्लेशियरों का पिघलना न केवल पर्यावरणीय संतुलन के लिए, बल्कि स्थानीय और वैश्विक जल प्रणालियों के लिए भी गंभीर समस्या है। ग्लेशियरों का पिघलना समुद्र स्तर में वृद्धि, जल आपूर्ति में कमी और विभिन्न पारिस्थितिकी प्रणालियों में बदलाव ला सकता है। इस घटना ने वैश्विक समुदाय को यह सोचने पर मजबूर किया है कि जलवायु परिवर्तन की समस्याओं से निपटने के लिए तत्काल और ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। यदि इसी प्रकार ग्लेशियरों का पिघलना जारी रहा, तो यह पूरी पृथ्वी पर गहरा प्रभाव डाल सकता है, जिससे न केवल प्राकृतिक वातावरण, बल्कि मानव समाज भी प्रभावित होगा।

ग्लेशियर जीवन की निरंतरता और पारिस्थितिकी-तंत्र के संतुलन के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। ये बर्फ की विशाल चादरें होती हैं, जो धीमी गति से एक स्थान से दूसरे स्थान पर खिसकती रहती हैं। ग्लेशियर सूर्य की अलावा गर्मी को अंतरिक्ष में परावर्तित कर ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव को कम करते हैं। ग्लेशियर पृथ्वी के लिए एक तरह से 'रेफ्रिजरेटर' की तरह कार्य करते हैं, जिससे पृथ्वी के तापमान में स्थिरता बनी रहती है। ग्लेशियर विश्व के ताजे पानी का महत्वपूर्ण स्रोत हैं। गर्मियों में जब ग्लेशियर पिघलते हैं, तो वे नदियों और झीलों में पानी की आपूर्ति करते हैं, जिससे कृषि, पीने के पानी और जलविद्युत उत्पादन में सहायता मिलती है। ग्लेशियर एक प्रमुख कार्बन-अवशोषक की भूमिका भी निभाते हैं। इससे जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने में मदद मिलती है।

जलवायु परिवर्तन के कारण कई ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं, जिससे कई पर्यावरणीय, सामाजिक और आर्थिक दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। समुद्र जलस्तर में वृद्धि के साथ तटीय आबादी के समक्ष जलप्लावन और विस्थापन का खतरा मंडरा रहा है। ग्लेशियर-विहीन होने या उसके आकार में कमी चिंताजनक है। कार्बन उत्सर्जन में कमी लाकर ग्लेशियरों को विलुप्त होने से बचाया जा सकता है।

(लेखक बीएचयू में शोधार्थी हैं)

एक साथ चुनाव पर हो विचार

'चुनावों का सही समय' शीर्षक से प्रकाशित संपादकीय टिप्पणी में निर्वाचन आयोग की स्वीकारोक्ति के साथ बिल्कुल सही दृष्टिकोण रखा गया है कि देश में चुनाव अनुकूल समय में ही कराए जाने चाहिए। भीषण गर्मी के समय में चुनाव कराना न तो मतदानकर्मियों और सुरक्षाकर्मियों के लिए उचित है और न ही मतदाताओं के लिए। इससे मतदान के प्रतिशत पर भी असर पड़ता है। ऐसे में निर्वाचन आयोग के साथ ही राजनीतिक दलों को कोई ऐसा स्वीकार्य समाधान तलाशना होगा कि चुनाव आदर्श परिस्थितियों में संपन्न हो सकें। इसके अतिरिक्त प्रवासी मतदाताओं के लिए किसी प्रकार के रिमोट मतदान या आनलाइन मतदान की भी कोई कारगर व्यवस्था बनाना भी आवश्यक हो गया है, क्योंकि देश में बड़ी संख्या में लोग मतदान के लिए उन स्थानों पर नहीं जा पाते, जहां उनका वोट होता है। इसके साथ ही संपादकीय में यह सुझाव भी उचित ही दिया गया है कि देश में एक साथ चुनाव का समय आ गया है। जब लोकसभा और विधानसभा के चुनाव एक साथ होंगे तब संभव है कि प्रवासी मतदाता भी अपने मूल स्थान पर जाने का मन बनाएं, क्योंकि इससे एक बार में ही दो सरकारों के लिए वे मतदान करने में सक्षम हो सकेंगे। इससे मतदान प्रतिशत भी बढ़ेगा।

केशव तिवारी, आजमगढ़

चुनावों के बाद की राजनीति

'चुनावों के बाद की राजनीति' शीर्षक आलेख में हृदयनारायण दीक्षित ने 18वीं लोकसभा से देश की

मेलबाक्स

उन्नति की आशा करते हुए भारत को विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में सभी देशवासियों को इस अभियान से जुड़ जाने का आह्वान किया है। इतिहास हर देश को एक ऐसा दौर देता है, जब वह अपनी विकास यात्रा को कई गुना आगे बढ़ाता है। यह भारत के लिए भी स्वर्णिम युग ही है। हमारे आसपास ऐसे कई देशों के उदाहरण हैं, जिन्होंने एक निश्चित समय में इसी तरह की छलांग लगाकर स्वयं को विकसित किया है। यह भारत के लिए भी सही समय है। हमें इस स्वर्णिम युग के हर पल का लाभ उठाना है। हर युवा किसी न किसी विशेषता के साथ आता है। उनके विचारों में चाहे कितनी ही विविधता क्यों न हो, उन्हें विकसित भारत के निर्माण की धारा से जोड़ना होगा। हमें देश में ऐसी पीढ़ी तैयार करनी होगी, जो आने वाले सालों में देश में नेता बने, जो देश का नेतृत्व करे और उसे एक दिशा दे। हमें देश के लिए ऐसे युवा पौधे को तैयार करना है, जो राष्ट्रहित को सबसे ऊपर रखे, अपने कर्तव्यों को सबसे ऊपर रखे। हमें केवल शिक्षा और कौशल तक सीमित नहीं रहना है। आज दुनिया की आबादी तेजी से बढ़ती जा रही है और भारत युवा शक्ति से सशक्त हो रहा है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि भारत कामकाजी उम्र की आबादी के मामले में अगले 25-30 वर्षों तक आगे रहेगा। यही वजह है कि पूरी दुनिया भारत के युवाओं की तरफ देखती है। युवा शक्ति परिवर्तन की कारक है और परिवर्तन के लाभार्थी भी हैं।

युगल किशोर राही, ग्रेटर नोएडा।

मोदी के समर्थन में जनादेश

मंगलवार को 'चुनावों के बाद की राजनीति' लेख पढ़ा। चुनावों के बाद राजनीति नहीं, बल्कि देश के हित में काम होने चाहिए। देश ने एक बार फिर से केंद्र की मोदी सरकार पर भरोसा जताया है और लगातार तीसरी बार फिर से नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री पद पर बिठाने के लिए जनादेश दिया है। जो प्रत्याशी चुनाव जीते हैं, उन्हें जीत की बहुत बहुत बधाई और उम्मीद है कि बिना किसी राजनीतिक भेदभाव के अब वह जनता के लिए काम करेंगे और जो चुनाव हार गए उन्हें मंथन करना चाहिए। लोकतंत्र की मजबूती के लिए मजबूत विपक्ष भी जरूरी है। लोकतंत्र में जनता सर्वोपरि होती है, उसके मन की बात को समझना बहुत मुश्किल समझा जाता है। अब लोग राजनीतिक तौर पर जागरूक हो चुके हैं। उम्मीद है कि प्रधानमंत्री मोदी फिर से देश के विकास के लिए अधूरी योजनाओं को पूरा करने के प्रयास करेंगे और नई योजनाओं की शुरूआत करेंगे, विदेशों से संबंध मजबूत करेंगे।

राजेश कुमार चौहान, जालंधर

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल: mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।
****

23 करोड़ लोगों को गरीबी रेखा से ऊपर उठाने में सफल रही है केंद्र की मोदी सरकार पिछले एक दशक के दौरान। वैसे बहुआयामी गरीबी से पीड़ित लोगों की संख्या भी वर्ष 2023 तक 12 करोड़ के आसपास बनी हुई है।

हर्ष वर्धन त्रिपाठी
राजनीतिक विश्लेषक

मोदी सरकार

तीसरे कार्यकाल में बदलेगी राजनीति

लोकसभा चुनाव परिणाम से यह स्पष्ट हो गया है कि नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी लगातार तीसरी बार केंद्र में सरकार बनाने जा रही है। यह ऐतिहासिक उपलब्धि इसलिए भी है, क्योंकि जवाहरलाल नेहरू के अलावा कोई भी प्रधानमंत्री अब तक यह करिश्मा नहीं कर पाया है। इस जनादेश से यह भी साबित होता है कि नरेन्द्र मोदी समूचे भारतवर्ष के एक सर्वमान्य नेता के तौर पर उभरे हैं, जिनके नेतृत्व में पिछले एक दशक से देश प्रगति के पथ पर अग्रसर है

अपने तीसरे कार्यकाल में नरेन्द्र मोदी को गठबंधन सरकार के कारण कुछ चुनौतियों का भी सामना करना पड़ सकता है। फाइल

वर्ष 2024 लोकसभा चुनावों का परिणाम आने से ठीक एक दिन पहले समाचार पत्रों में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का लेख छपा था। पीएम मोदी ने यह लेख कन्याकुमारी में ध्यान साधना के बाद वहां से लौटते हुए लिखा था। प्रधानमंत्री की चिट्ठी की शुरुआत चुनाव प्रचार के अपने अनुभव से हुई थी। पीएम मोदी ने कन्याकुमारी में अपनी साधना का उल्लेख करते हुए लिखा, 'मुझे भारत माता के चरणों में बैठने का अवसर मिला। उन शुरुआती पलों में चुनाव का कोलाहल मन मस्तिष्क में गूंज रहा था। रैलियों, रोड शो में देखे हुए अनगिनत चेहरे मेरी आंखों के सामने आ रहे थे। माताओं-बहनों-बेटियों के असीम प्रेम का वह ज्वार, उनका आशीर्वाद, उनकी आंखों में मेरे लिए वो विश्वास, वो दुलार सबकुछ मैं आत्मसात कर रहा था।'

प्रधानमंत्री मोदी का मन भले बाह्य जगत से पूरी तरह से अलिप्त हो गया था, लेकिन देश की जनता को ऐसे ही व्यक्ति की तलाश थी जो देश के लोगों के जीवन में बेहतरी के लिए अलिप्त भाव से काम करे। यही वजह रही कि चार जून 2024 भारतीय राजनीति की एक ऐसी तारीख बन गई थी जो इतिहास की किसी भी राजनीतिक तारीख से महत्वपूर्ण हो चली थी। नरेन्द्र मोदी लगातार तीसरी बार भारत के प्रधानमंत्री बनने जा रहे थे। हालांकि इस बार मोदी को मिला जनादेश 2014 और 2019 से इस मायने में अलग था कि इस बार उन्हें पूर्ण बहुमत नहीं मिल सका था, लेकिन मोदी का तीसरी बार प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बने रहना देश प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के लगातार तीन बार प्रधानमंत्री बनने से भी बड़े महत्व का था। भारतीय राजनीति में देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के अलावा कोई भी तीन बार लगातार पीएम की कुर्सी पर नहीं बैठ सका था। नेहरू के सामने ऐसी परिस्थितियां, चुनौतियां नहीं थीं जो भाजपा के नेता के तौर पर मोदी के सामने थीं। नेहरू के सामने विपक्ष इस भाव में खड़ा रहता था कि एक महान नेता के सामने हमें शालीन व्यवहार करना है। एक ऐसा नेता जिस पर महात्मा गांधी का आशीर्वाद था और नेहरू उस कांग्रेस पार्टी के नेता के तौर पर थे, जिस पार्टी को भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की पार्टी के तौर पर देखा जाता था।

देश के दूसरे राजनीतिक दल इन वजहों से वैसे ही नेहरू के सामने बहुत छोटे दिखते थे। विपक्षी नेताओं की योग्यता भी उन्हें जनता के बीच नेहरू के सामने प्राथमिकता में नहीं ला पाती थीं, जबकि मोदी के ऊपर पहले दिन से संघ के प्रचारक होने की वजह से आधारहीन आरोप लगते थे कि नरेन्द्र मोदी सांप्रदायिक हैं। मोदी के सार्वजनिक जीवन में किसी तरह का कोई दाग न होने के बावजूद उनका उपहास कांग्रेसी उड़ाते थे और देश के बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग पहले गुजरात के मुख्यमंत्री के तौर पर और फिर दो बार देश के प्रधानमंत्री के तौर पर भारत की जनता के बड़े वर्ग का विश्वास जीतने के बाद भी मोदी को नेहरू के सामने तुलना में कहीं रखने को ही तैयार नहीं था। देश का संविधान खत्म हो जाएगा, आरक्षण समाप्त हो जाएगा, इस भ्रमजाल को फैलाने में राहुल गांधी की अगुआई वाला विपक्ष कामयाब रहा और मोदी को देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में ही बड़ा झटका लग गया था। इस वजह से राजग भले पूर्ण बहुमत के आंकड़े के पार हो गया था, लेकिन अकेले भाजपा की सीटें 272 के जादुई आंकड़े से नीचे रह गईं।

हालांकि उत्तर प्रदेश में बड़ा झटका और बंगाल, राजस्थान, हरियाणा में छोटे झटके झेलने के बावजूद भाजपा ने बिहार में अपने गठजोड़ के साथ पकड़ मजबूत बना रखी थी और ओडिशा व आंध्र प्रदेश में अप्रत्याशित सफलता प्राप्त करने जा रही थी। पूर्वोत्तर में 2014 और फिर 2019 में ही मोदी की अगुआई वाली भाजपा विजय मुद्रा में आ गई थी, लेकिन मोदी को दक्षिण विजय भी करना था। ओडिशा और आंध्र प्रदेश में लोकसभा के साथ ही विधानसभा के भी चुनाव हुए हैं। आंध्र प्रदेश में अंतिम समय में तेलुगु देशम पार्टी के साथ समझौता करना और ओडिशा में अंतिम समय में बीजू जनता दल से समझौता तोड़ना कारगर रहा था।

अब 2024 के लोकसभा चुनावों में भाजपा देशव्यापी पार्टी हो चुकी थी। कर्नाटक और तेलंगाना में विधानसभा चुनाव जीतने के बावजूद कांग्रेस को लोकसभा चुनाव में वैसी सफलता नहीं मिल सकी, जिसकी उम्मीद उसके कई प्रमुख नेताओं को रही होगी। भाजपा और कांग्रेस को तेलंगाना में बराबर सीटें मिलना दिखा रहा था कि देश के हर राज्य में मोदी की भाजपा उतनी ही स्वीकार्य है, जितनी नेहरू की कांग्रेस। तमिलनाडु जैसे राज्य में द्रविड़ राजनीति के सामने भाजपा अभी भी उस तरह से अपनी शक्ति बढ़ाने में नाकामयाब रही थी। हालांकि एक भी सीट न जीत पाने के बावजूद भाजपा अपना मत प्रतिशत लगभग तीन गुना बढ़ाने में कामयाब हो गई।

केरल की राजनीति में भाजपा के लिए स्थान बन पाना कठिन हो रहा था, लेकिन लगभग पूरे देश में भाजपा अब अकेली पार्टी रह गई थी, जिसे सही मायने में राष्ट्रीय पार्टी कहा जा सकता था। ऐसी स्थिति नेहरू, इंदिरा और राजीव के समय ही कांग्रेस की हो पाई थी। उसमें यह भी समझना आवश्यक है कि नेहरू स्वतंत्रता आंदोलन पर सवार होकर देश के प्रधानमंत्री बने थे, इंदिरा जवाहर लाल नेहरू की बेटी होकर शक्तिशाली बनीं थीं और राजीव गांधी अपनी मां इंदिरा की हत्या के शोक में डूबे देश के भावातिरेक में प्रधानमंत्री बने थे। नरेन्द्र मोदी लगातार तीन बार देश के पीएम बनने वाले ऐसे नेता बन गए, जिन्होंने देश के हर हिस्से से स्वयं को जोड़ते हुए पूरे देश को एक करने का कार्य किया। ऐसे में देश का हर कोना ब्रांड मोदी के साथ था। जातीयता और क्षेत्रीयता के उभार के बीच किसी राजनेता को इस तरह से पूरे देश में स्वीकार्यता मिलेगी, इसकी कल्पना भी शायद ही किसी को रही हो, लेकिन उत्तर प्रदेश में हुई हार ने बेहद शक्तिशाली ब्रांड मोदी के तले कमजोर हो चले स्थानीय नेतृत्व की सीमाओं को भी सामने लाकर रख दिया था। टिकट वितरण में निर्दयता से जिताऊ प्रत्याशी खोजने का काम भी भाजपा इस बार 2014 और 2019 की तरह नहीं कर सकी थी।

कुल मिलाकर मोदी की अगुआई वाले राजग की तीसरी बार जीत ने यह तो तय कर दिया था कि नरेन्द्र मोदी देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू की तरह पूरे देश में सर्व स्वीकार्य थे, लेकिन आज की राजनीति में जिस तरह से पूरा विपक्ष अराजकतावादी राजनीति कर रहा था और अंतरराष्ट्रीय साजिशों के जरिये भारत को कमजोर करने की कोशिश हो रही थी, उसमें मिला यह जनादेश पिछले दो जनादेशों से बहुत चुनौतीपूर्ण था और एक बड़ा प्रश्न भी था कि अल्पमत की सरकार चलाने के लिए मोदी क्या अपनी राजनीति बदलेंगे या फिर मोदी जस के तस रहेंगे और देश की राजनीति को नए सिरे से अपने लिहाज से ही बदल देंगे।

डा. स्वदेश सिंह
प्राध्यापक, दिल्ली विश्वविद्यालय

बढ़ते सामाजिक दायरे का मिला लाभ

राजनीति में सभी हमेशा साथ नहीं रहते। कोई समूह किसी न किसी कारण से पार्टी से नाराज हो सकता है। इसलिए यदि आपको लगातार सत्ता में बने रहना है तो नए समूहों को अपने साथ जोड़ते रहना पड़ेगा और साथ ही नया समूह गढ़ना भी पड़ेगा। नरेन्द्र मोदी इसे भलीभांति समझते हैं। इसीलिए वे अपने साथ नए-नए सामाजिक समूह तो जोड़ते ही हैं, राजनीतिक क्षेत्र में नए समूह भी गढ़ते रहते हैं। इस बार का लक्ष्य ही उन्होंने 50 प्रतिशत से ज्यादा मत पाने का रख लिया था। उसी को लक्ष्य बनाकर प्रयास करते रहे। शायद इसीलिए भाजपा 40 प्रतिशत मतों का आंकड़ा पार करती दिख रही है। हालांकि सीटों का आंकड़ा 272 नहीं पहुंच सका।

नए समूह जोड़ने और गढ़ने से नरेन्द्र मोदी को दो लाभ होते हैं। एक तो उनका वोट प्रतिशत बढ़ता है, दूसरा वो नए मिथक गढ़ते हैं जिससे पुराने विमर्श कमजोर पड़ते हैं। पुराने मिथकों को तोड़कर ही नई इबारत लिखी जाती है। मोदी इस बात को भलीभांति जानते हैं। हाल के वर्षों में जातिवाद, क्षेत्रवाद, अल्पसंख्यक तुष्टीकरण के तिलिस्म को या तो मोदी ने तोड़कर रख दिया है या कमजोर किया है। जातिवाद और क्षेत्रवाद से ऊपर राष्ट्रवाद का विमर्श ले आए और तुष्टीकरण की राजनीति को हिंदुत्व और सामाजिक न्याय के विमर्श से कमजोर कर दिया। भाजपा को एक समय तक हिंदी पट्टी वाली शहरी क्षेत्र की ब्राह्मण-बनिया पार्टी माना जाता था, लेकिन मोदी काल में पार्टी उन इलाकों में भी मजबूत बन गई है, जहां उसका अस्तित्व नहीं था या नगण्य था। मोदी ने सामाजिक दायरा बढ़ाने के लिए पार्टी के अंदर भी एक नया सामाजिक गठबंधन बनाया। अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग जातीय समूहों को साथ लेकर पार्टी का दायरा बढ़ाया। मोदी ने पार्टी के बाहर जाकर भी राजनीतिक गठबंधन किया। हालांकि राज्य में वोट तो बहुत आए, लेकिन अपेक्षित सफलता नहीं मिली। बिहार में नीतीश, कुशवाहा, चिराग और मांझी को साथ लेकर एक बड़ा गठबंधन बनाया जो राजद-कांग्रेस पर भारी पड़ा। ऐसे ही अन्य राज्यों में भी मोदी नए सामाजिक समूहों को भाजपा के साथ जोड़ने में सफल रहे। मोदी ने पहले कार्यकाल में आंबेडकर को केंद्र में रखकर दलित समाज को विश्वास दिलाया कि भाजपा उनकी ही पार्टी है तो दूसरे कार्यकाल में आदिवासी राष्ट्रपति बनाकर, बिरसा मुंडा जैसे आइकन के इर्द-गिर्द अभियान चलाकर भाजपा को आदिवासी समाज की पार्टी बनाने में सफल रहे।

एक तरफ उन्होंने पारंपरिक सामाजिक समूहों को अपनी तरफ तो लुभाया ही, वहीं कुछ नए सामाजिक समूहों का निर्माण करने की भी कोशिश की और वह काफी हद तक सफल भी हुए। मोदी ने जाति, क्षेत्र और धर्म के दायरे से बाहर जाकर महिला, किसान, युवा और गरीब को भारत की चार नई जातियां बताया। अगर पिछले दस साल की मोदी सरकार की नीतियों पर ध्यान दें तो पाएंगे सरकार की नीतियां इन चार समूहों पर विशेष रूप से केंद्रित थीं। इसी तरह दिव्यांगों के लिए मोदी सरकार लगातार काम करती रही। 18 से 22 साल के करीब दो करोड़ मतदाताओं के लिए अलग से रणनीति बनाई गई और उन पर विशेष काम हुआ। विकसित भारत एंबेसडर जैसे कार्यक्रम चलाकर इन नव-युवाओं को रिझाने की कोशिश हुई। हाल के वर्षों में एक नया विमर्श लाभार्थी राजनीति का भी खड़ा हुआ, जिसे भाजपा ने एक नया समूह बनाने की कोशिश हुई। भाजपा के नेता भाषणों में बोलते नजर आए कि आपको चुनाव से एक दिन पहले कुछ पैसे नहीं, बल्कि पूरे पांच साल लाभ चाहिए तो कमल पर बटन दबाइए। शायद लोगों को मोदी की योजनाओं का सीधा लाभ मिला भी, इसलिए बड़ी संख्या में भाजपा को समाज के हर तबके का मत मिला।

हिमाचल प्रदेश के हालिया दौरे पर मोदी को एक घर पर स्थानीय प्रत्याशी का पोस्टर दिखा जिस पर भाजपा के लिए वोट की अपील थी। साथ ही में घर के बारे में जानकारी देता दीवार पर एक प्रिंट था, जिसमें मकान की लागत डेढ़ लाख रुपये का भी जिक्र था। घर राजकुमारी नाम की एक महिला का था जो 2022 में प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण की लाभार्थी बनी थी। मोदी सरकार का दावा है कि उन्होंने ऐसे चार करोड़ आवास पिछले दस साल में बनाए हैं। ऐसी दर्जनों और भी स्कीमें हैं जिनका लाभ सीधे लोगों तक पहुंचा है। अपनी योजनाओं को लोगों तक सीधे पंहुचाकर प्रधानमंत्री मोदी ने लाभार्थियों का एक बहुत बड़ा वर्ग खड़ा किया है जिसे कम से कम लीकेज के साथ मोदी सरकार की योजनाओं का लाभ आम जन तक पहुंच रहा है। मोदी सरकार का दावा है कि ऐसे 50 करोड़ से अधिक लोग हैं जिन्हें पिछले दस सालों में सरकार की स्कीमों से लाभ पहुंचा है। इस लोकसभा चुनावों में भाजपा ने अपना समर्थन तो कायम रखा, लेकिन उन्हें सीटों में तब्दील नहीं कर पाए। अपने सामाजिक दायरे को बढ़ाकर और नए समूह गढ़ने का प्रयास करके भाजपा ने मत प्रतिशत को तो ठीक कर लिया और ओडिशा में पहली बार सरकार बनाने में सफल हुई, लेकिन कुछ समीकरणों के कारण लोकसभा में पिछली बार की सीटें नहीं दोहरा पाई।

पोस्ट

ओडिशा में नवीन पटनायक युग का अवसान हो गया। भाजपा वहां सरकार बनाएगी। बीजद के साथ गठबंधन न करने का दांव कारगर रहा।
सुनंदा वशिष्ठ@sunandavashisht

अब राजनीति में पूर्ण वर्चस्व वाली स्थिति नहीं रहेगी। नई सरकार को नियंत्रण और संतुलन के साथ चलना होगा।
विक्रम चंद्रा@vikramchandra

अयोध्या में भाजपा के हारने का कारण मुझे समझ नहीं आ रहा है। यहां के लोगों को मंदिर, एयरपोर्ट, सड़कें, पर्यटन और रोजगार सब मिला, लेकिन फिर भी हरा दिया। कनुप्रिया@kanupriiya

क्या एग्जिट पोल झूठे थे या उसमें प्रतिभागियों ने ही पोल करने वालों को गफलत में रखा या फिर पोल करने वालों ने गलत पद्धति अपनाई? असल में एग्जिट पोल के रुझानों से राजग का बेहतर प्रदर्शन भी खराब लग रहा है।
चेतन भगत@chetan_bhagat

लोकतंत्र की जीत हुई। भारत की जनता ने दिखा दिया कि उसे हमेशा हल्के में नहीं लिया जा सकता। इसी के साथ क्या ईवीएम और चुनाव आयोग पर अंगुलियां उठाने वाले अब सार्वजनिक रूप से अपनी गलती स्वीकार करेंगे?
तवलीन सिंह@tavleen_singh

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या चुनाव आयोग को खुद पर झूठे आरोप लगाने वालों को दंडित करना चाहिए?

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या नरेन्द्र मोदी गठबंधन सरकार को सफलतापूर्वक चला सकने में सक्षम साबित होंगे?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

मतदाता ने जो दिया करो उसे स्वीकार,
चाहे उसने जीत दी या दी उसने हार।
या दी उसने हार न बिल्कुल मुंह लटकाएं,
झाड़ पोंछकर धूल काम पर फिर लग जाएं।
लोकतंत्र में 'लोक' सभी का एक विधाता,
देता सबक सिखाय सभी को है मतदाता!
- ओमप्रकाश तिवारी

डा. अनिता राठौर
वरिष्ठ स्तंभकार

सहयोगियों पर भी रहेगा दारोमदार

मंगलवार की सुबह जब 18वीं लोकसभा चुनावों के रुझान आने शुरू हुए तो एक कार्टून बहुप्रसारित हुआ, जिसमें लिखा था, 'रुझानों में तो एग्जिट पोल पीछे चल रहे हैं।' यह तीखे व्यंग्य के साथ ही कड़वा सच भी था। एक जून को आम चुनाव के सातवें एवं अंतिम चरण का मतदान पूर्ण होने के बाद जब इलेक्ट्रानिक मीडिया ने अपने अपने एग्जिट पोल का आंकड़ा देना शुरू किया, तो सभी ने भाजपा के नेतृत्व वाले राजग को साढ़े तीन सौ से चार सौ तक सीटें दी थीं, जिससे अगले दिन सेंसेक्स ने तीन हजार अंकों की उछाल लगा दी। लेकिन जब चार जून को रुझान आने शुरू हुए तो स्पष्ट हो गया कि एग्जिट पोल तो असल नतीजों के आसपास भी नहीं थे। हां, यह बात अवश्य सामने आई कि आइएनडीआइए ने अच्छा संघर्षपूर्ण प्रदर्शन किया है और भाजपा, राजग में अपने सहयोगी दलों के सहारे लगातार तीसरी बार केंद्र में सरकार बनाने में सक्षम थी। लेकिन अचानक सियासी गलियारों में दो नामों की चर्चा बहुत अधिक होने लगी है। एक है, बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और दूसरे तेलुगु देसम पार्टी के मुखिया चंद्रबाबू नायडू, जिन्होंने न केवल आंध्र प्रदेश विधानसभा चुनाव में बहुमत हासिल करके शानदार वापसी की है, बल्कि अपने राज्य के लोकसभा चुनावों में भी शानदार प्रदर्शन किया है। मंगलवार को संध्या नौ बजे तक रुझान यह था कि एनडीए ने 290 सीटों पर बढ़त बना रखी थी और आइएनडीआइए के खाते में 230 सीटें दिख रही थीं। इसमें दोनों ही गठबंधनों की जीती हुई सीटें भी शामिल हैं।

नीतीश और नायडू का महत्व अचानक इसलिए बढ़ गया है, क्योंकि सरकार बनाने में उनकी भूमिका की अहमियत बढ़ गई है। दोनों या दोनों में से कोई एक फिलहाल या निकट भविष्य में राजग का साथ छोड़ेगा, यह कहना तो कठिन है, लेकिन इतना तय है कि इन दोनों नेताओं की बारगेनिंग पावर बहुत अधिक बढ़ गई है और ये इतने मंझे हुए नेता हैं कि किसी भी अवसर को अपने हाथ से निकलने नहीं देंगे।

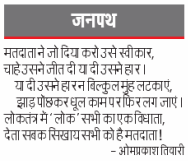

नेहरू के बाद नरेन्द्र मोदी बनाएंगे केंद्र में लगातार तीसरी बार सरकार। फाइल

इसलिए दिल्ली और पटना के गलियारों में चर्चा तो यहां तक है कि नीतीश उप-प्रधानमंत्री पद पर नजर लगाए हुए हैं। वैसे राजनीतिक विश्लेषक यह भी कयास लगा रहे हैं कि नीतीश कुमार यदि भविष्य की राजनीति को देखते हुए आइएनडीआइए के साथ एक बार फिर चले गए तो ऐसे में राजग की स्थिति तुलनात्मक रूप से कमजोर हो सकती है। हालांकि इस बात की संभावना कम ही है, क्योंकि वर्तमान हालात देखते हुए भाजपा उन्हें अपने साथ बनाए रखने के लिए पूरा जोर लगाएगी। दूसरी ओर भाजपा की भी कोशिश है कि विपक्ष के कुछ दलों को राजग में शामिल कर लिया जाए। उद्धव ठाकरे की शिव सेना का नाम इस सिलसिले में विशेष रूप से लिया जा रहा है। अकाली दल को भी वापस राजग में लाने का प्रयास है।

चुनावी मुद्दा : इस चुनाव में सबसे ज्वलंत मुद्दा बेरोजगारी का था, इसलिए नई सरकार के समक्ष मुख्य चुनौती रोजगार बाजार की दुर्दशा को दूर करना होगा। जाब्स की गुणवत्ता में जबरदस्त पतन आया है। पिछले पांच वर्षों के दौरान शहरी क्षेत्रों में भी उन लोगों की संख्या बढ़ी है जिन्हें स्वरोजगार की श्रेणी में रखा जाता है। आज भारत का बुनियादी आर्थिक व सामाजिक संकट यह है कि बड़ी तादाद में कार्यबल ऐसे बेकार के जाब्स में फंसा हुआ है जिनमें बहुत मामूली वेतन मिलता है। फेडरलिज्म को भी मजबूत करने की आवश्यकता है, विशेषकर इसलिए कि वे परंपराएं कमजोर हुई हैं, जो इसका आधार बनी हुई थीं। मसलन, कुछ राज्यों ने केंद्र सरकार के साथ संसाधनों की शेयरिंग पर मतभेद को लेकर सुप्रीम कोर्ट में दस्तक दी है। इस पृष्ठभूमि में टकराव का एक अन्य बिंदु संसदीय सीटों का संभावित परिसीमन है, जो राज्यों के बीच सत्ता संतुलन को बदल देगा। इस क्षेत्र में केंद्र सरकार को बहुत ही ध्यानपूर्वक चलना होगा।

अंतरराष्ट्रीय रणनीति : पिछले कुछ दशकों के दौरान चीन अमेरिका का मुख्य रणनीतिक प्रतिद्वंद्वी बनकर उभरा है। शीत युद्ध युग के विपरीत, भारत का चीन के साथ अनसुलझा सीमा विवाद है, जबकि उसके बढ़ते बाजार का हर कोई लाभ उठाना चाहता है। ऐसे में नई सरकार को इस पर भी गंभीरता से विचार करना होगा। इसी के साथ भारत को अपनी व्यापार नीति पर भी पुनर्विचार करना होगा, जिसने सुरक्षात्मक रुख अपनाया हुआ है, जबकि भू-राजनीति ने नए अवसर खोल दिए हैं। (ईआरसी)

मंथन

विपक्ष की रेवड़ियों के मुकाबले मोदी पर भरोसा

डा. अश्विनी महाजन
प्रोफेसर, पीजीडीएवी कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

वर्ष 2024 का आम चुनाव बेहद दिलचस्प रहा है। हालांकि भाजपा स्वयं की अपेक्षा से कम सीटें ही पा सकी है, लेकिन एनडीए को सरकार बनाने का जनादेश जरूर मिला है। एक ओर नरेन्द्र मोदी की अगुआई वाली एनडीए पिछले दस वर्षों के अपने काम और प्रदर्शन पर वोट मांग रही थी, वहीं दूसरी ओर विपक्षी दलों का गठबंधन मोदी सरकार के दौरान महंगाई और बेरोजगारी के मुद्दों को लेकर मतदाताओं के बीच जा रहा था। एक तरफ नरेन्द्र मोदी 'जीवन को आसान बनाने' की गारंटी और अपनी नीतियों के साथ लोगों तक पहुंच रहे थे, जिसमें गरीबों के लिए आवास, गरीबों को मुफ्त राशन, 70 साल से अधिक उम्र के लोगों के लिए आयुष्मान भारत कार्यक्रम के तहत मुफ्त इलाज, किसान सम्मान निधि और दूसरी कल्याणकारी योजनाओं को जारी रखना शामिल था।

लेकिन कांग्रेस जो कि विपक्षी गठबंधन की मुख्य पार्टी थी, वह पिछले चुनावों की तरह ही हर गरीब परिवार को एक लाख रुपये की राशि, न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की कानूनी गारंटी, जाति आधारित सर्वेक्षण करके धन का पुनर्वितरण (जनसंख्या के अनुसार) आदि की गारंटी के साथ चुनावी मैदान में थी। यह साबित करता है कि भारत की जनता ने नरेन्द्र मोदी के दस साल के कार्यकाल के दौरान अपनाई गई नीतियों का समर्थन करके एनडीए को विजयी बनाया है, हालांकि उस भारी बहुमत के साथ नहीं, जिसका दावा सत्तारूढ़ गठबंधन कर रहा था, खासकर तीन बड़े राज्यों उत्तर प्रदेश, राजस्थान और हरियाणा में।

लाभार्थियों का समर्थन : हम देखते हैं कि मोदी के कार्यकाल में गरीबों के लिए बड़ी संख्या में कल्याणकारी योजनाएं शुरू की गईं, जिनके लाभार्थियों ने स्वाभाविक रूप से मोदी का समर्थन किया है। लाभार्थियों की बात करें तो चार करोड़ गरीब परिवारों के लिए पक्के मकानों का निर्माण, नरेन्द्र मोदी सरकार की एक बड़ी उपलब्धि मानी जाती है।

कांग्रेस की मुफ्त की गारंटियों के बजाय अधिकांश मतदाता ने भाजपा के प्रति जताया भरोसा। फाइल

समझा जा सकता है कि इस योजना ने उन गरीब परिवारों की कुशलता और जीवन स्तर को बढ़ाने में योगदान दिया है। स्वाभाविक रूप से एनडीए को इन लाभार्थियों का समर्थन मिला है। इसके साथ ही गरीबी के कारण एलपीजी कनेक्शन से वंचित 10 करोड़ महिलाओं को उज्ज्वला योजना के तहत न केवल धुएं से मुक्ति मिली है, बल्कि उनके जीवन स्तर में भी बड़ा बदलाव आया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इन लाभार्थियों ने भी नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाले गठबंधन का समर्थन किया है।

कांग्रेस की योजना वोट नहीं दिला पाई : इससे पहले भी कांग्रेस ने किसानों के 70 हजार करोड़ रुपये के कर्ज माफ किए थे और 2024 में भी इसी तरह की घोषणा की गई थी। वर्ष 2019 के चुनाव में कांग्रेस ने चुनाव जीतने के बाद हर गरीब परिवार को सालाना 72 हजार रुपये देने का वादा किया था और तब भी कांग्रेस को लोकसभा में केवल 52 सीटें ही मिलीं। यानी तब भी लोगों ने कांग्रेस की नकद वितरण योजना को नकार दिया था। इस बार कांग्रेस ने चुनाव के दौरान हर गरीब परिवार को सालाना एक लाख रुपये देने का वादा किया था और इसका खूब प्रचार भी किया था। हालांकि कांग्रेस के इस वादे के क्रियान्वयन को लेकर लोगों में काफी संदेह था और कांग्रेस की सीटें 52 से बढ़कर सरकार में शामिल होने के लिए जादुई संख्या से काफी कम सौ के आसपास ही रहीं।

नई सरकार की प्राथमिकताएं : देश ने 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने का संकल्प लिया है। यह सच है कि पिछले एक दशक में भारत की जीडीपी दो लाख करोड़ डालर से बढ़कर लगभग चार लाख करोड़ डालर हो गई है, लेकिन यह भी सच है कि हमारे देश में अमीर और गरीब के बीच असमानता कायम है। हालांकि अत्यधिक गरीबी में काफी कमी आई है, लेकिन नरेन्द्र मोदी सरकार के पहले नौ वर्षों में 25 करोड़ लोगों को गरीबी रेखा से ऊपर उठाने के बावजूद बहुआयामी गरीबी से पीड़ित लोगों की संख्या वर्ष 2023 तक 12 करोड़ बनी हुई थी।

यह सही है कि राजकोषीय सूझबूझ के कारण सरकार का पूंजी निवेश बढ़ रहा है, देश में बड़ी मात्रा में बुनियादी ढांचे का निर्माण हो रहा है, जिससे देश में लाजिस्टिक्स लागत को कम करने और आम लोगों के जीवन को आसान बनाने में सफलता मिल रही है। दूसरी ओर, तकनीक का उपयोग करके आनलाइन लेन-देन दुनिया में कहीं और की तुलना में भारत में कहीं अधिक हो रहा है। सरकार अधिक से अधिक पेटेंट देने में भी सफल रही है और अंततः वर्ष 2014 में केवल 4227 पेटेंट की तुलना में वर्ष 2024 में 1.03 लाख पेटेंट दिए गए, जो देश में नवाचार में विकास को दर्शाता है। हालांकि उत्पादों के निर्माण में हमारी निर्भरता अभी भी विदेशों पर बनी हुई है। आत्मनिर्भर भारत नीति के तहत देश में विनिर्माण उत्पादन बढ़ाने के प्रयास भी फलीभूत हो रहे हैं, लेकिन इस दिशा में और अधिक प्रयासों की आवश्यकता होगी, ताकि भारत पूरी तरह से आत्मनिर्भर बन सके। देश में बढ़ती आबादी के लिए रोजगार के अवसर भी पैदा करने होंगे। साथ ही, ग्रामीण औद्योगीकरण को बढ़ावा देने और कृषि तथा उससे जुड़ी गतिविधियों को विकसित करके ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन को बेहतर बनाने के प्रयास करने होंगे।

****

आंध्र प्रदेश में नायडू ने पूरी की प्रतिज्ञा, सत्तारूढ़ जगन की पार्टी का सूपड़ा साफ

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : आंध्र प्रदेश में चंद्रबाबू नायडू की तेलुगु देशम पार्टी (तेदेपा) की लोकसभा और विधानसभा चुनाव में देखने लायक जीत ने राजनीतिक उठापटक का एक नया अध्याय रचा है। मुख्यमंत्री के रूप में अपने पिछले कार्यकाल में कौशल विकास निगम में एक बड़े घोटाले के आरोप में कुछ महीने पहले ही आंध्र प्रदेश की सीआइडी द्वारा गिरफ्तार किए गए नायडू चौथी बार राज्य के सीएम बनने जा रहे हैं। इस सफलता के साथ नायडू ने तीन साल पहले ली गई अपनी वह प्रतिज्ञा भी पूरी कर ली, जिसमें उन्होंने विधानसभा में सीएम के रूप में ही लौटने का एलान किया था। नायडू विधानसभा में विपक्ष के नेता के रूप में सत्तारूढ़ दल की ओर से की जा रहीं व्यक्तिगत टिप्पणियों से आहत थे।

25 में से 21 लोकसभा सीटों पर तेदेपा की अगुवाई में राजग ने बढ़त बनाई है

16 लोकसभा सीटों पर नायडू की तेदेपा को अकेले बढ़त बनाने में सफलता मिली है

नायडू को पिछले साल नौ सितंबर को घोटाले के सिलसिले में सीआइडी ने गिरफ्तार किया था। इसके बाद उन्हें करीब दो माह जेल में बिताने पड़े थे। अब वह राष्ट्रीय राजनीति में भी एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी बनकर उभरे हैं। नायडू की तेदेपा की अगुआई में राजग ने राज्य की 25 में से 21 लोकसभा सीटों पर बढ़त बनाई है। इसमें इनमें सहयोगी दल जन सेना पार्टी की दो सीटें और भाजपा की तीन सीटें भी शामिल हैं। तेदेपा को अकेले 16 सीटों पर

भाजपा की आंध्र प्रदेश इकाई के प्रभारी सिद्धार्थ नाथ सिंह ने मंगलवार को तेदेपा प्रमुख एन. चंद्रबाबू नायडू से भेंट कर विस चुनाव में विजय के लिए बधाई दी● एएनआइ

बढ़त मिली है। समाचार लिखे जाने तक तेदेपा एक सीट जीत चुकी थी जबकि 15 में वह बढ़त बनाए हुए थी। इसी तरह भाजपा दो सीट जीत चुकी है जबकि एक में वह बढ़त बनाए हुए थी। वाईएसआरसीपी चार सीटों पर बढ़त बनाए हुए थी।

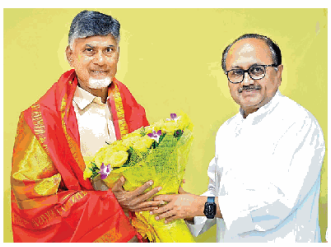

आंध्र में लोकसभा चुनावों के साथ ही विधानसभा के चुनाव भी हुए। पिछली बार केवल 23 सीटों पर सिमट जाने वाली तेदेपा ने 175 में से अकेले दम पर 135 पर बढ़त बनाई है। समाचार लिखे जाने तक 73 सीटें वह जीत चुकी थी जबकि 62 पर आगे थी। उसके नेतृत्व वाले राजग ने 164 सीटों पर बढ़त बना जगन मोहन रेड्डी की वाईएसआरसीपी सरकार के शासन का पूरी तरह सफाया कर दिया है। जगन ने ही नायडू की कौशल विकास निगम घोटाले के सिलसिले में गिरफ्तारी कराई थी। राजग में शामिल जन सेना ने 21 सीटों पर चुनाव लड़ा था, जिनमें से उसे सभी पर कामयाबी मिलती नजर आ रही है। वह 13 सीटें जीत चुकी है जबकि आठ पर बढ़त बनाए हुए है। भाजपा ने दस सीटों पर अपने प्रत्याशी उतारे और उसे आठ सीटों पर कामयाबी मिलती दिख रही है। पांच सीटें वह जीत चुकी है जबकि तीन पर उसके उम्मीदवार बढ़त बनाए हुए हैं।

जगन की पार्टी वाईएसआरसीपी ने पिछले विधानसभा चुनाव में 151 सीटें जीतकर नायडू के राजनीति करियर का एक तरह से अंत कर दिया था, लेकिन नायडू ने इस बार हिसाब बराबर कर दिया है। इस बार जगन की पार्टी को केवल 11 सीटें हासिल होती दिख रही हैं। वह तीन सीटें जीत चुकी है जबकि आठ पर उसके प्रत्याशी बढ़त में हैं। जगन की पार्टी को इसका अंदाज ही नहीं था कि उसके खिलाफ सत्ता विरोधी लहर है। उनकी पार्टी का हाल यह हुआ है कि केवल खुद जगन और उनके मंत्रिमंडल के वरिष्ठ सहयोगी बोचा सत्यनारायण ही अपनी साख बचाने में कामयाब हो सके।

दूरदर्शी साबित हुए हैं मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू

आंध्र की सत्ता में उल्लेखनीय वापसी करने वाले चंद्रबाबू नायडू करीब 40 साल से राजनीति में सक्रिय हैं और एक समय अविभाजित आंध्र प्रदेश के सीएम के रूप में अपने विकास माडल के लिए वह पूरी दुनिया में मशहूर हो गए थे। 74 वर्षीय नायडू का पांच साल पहले राजनीतिक करियर खत्म मान लिया गया था। उन्होंने तिरुपति में श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय में छात्र नेता के रूप में अपने राजनीतिक करियर की शुरुआत की। वह कांग्रेस में शामिल हुए और राज्य में कैबिनेट मंत्री भी बने। इसके बाद वह कांग्रेस छोड़कर एनटी रामाराव की तेदेपा में शामिल हो गए। तेदेपा की स्थापना करने वाले रामाराव के नायडू दामाद हैं। वह पहली बार 1995 में राज्य के मुख्यमंत्री बने। सीएम के रूप में उनके दो पहले कार्यकाल (2004 तक) अविभाजित आंध्र प्रदेश में थे। उनका तीसरा कार्यकाल 2014 में शुरू हुआ और तब तक आंध्र से तेलंगाना अलग हो चुका था। हैदराबाद को साइबर हब के रूप में स्थापित करने का श्रेय नायडू को ही जाता है। इसी से उनकी ख्याति देश-दुनिया तक फैली। अमरावती को आंध्र प्रदेश की राजधानी बनाने की पहल उन्होंने इसी कार्यकाल में की थी, लेकिन 2019 में सत्ता से बाहर होने के बाद यह प्रोजेक्ट ठंडे बस्ते में चला गया। यहां ये भी बता दें कि पिछली सदी के नौवें दशक में नायडू ने केंद्र सरकार के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा गठित राजग सरकार को तेदेपा ने बाहर से समर्थन दिया था।

सिक्किम की एकमात्र सीट पर दोबारा एसकेएम की जीत

जागरण संवाददाता, गंगटोक: दो दिन पहले लगातार दूसरी बार विधानसभा चुनाव में बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले सिक्किम क्रांतिकारी मोर्चा ने लोकसभा चुनाव में भी सफलता का सिलसिला जारी रखा है। सिक्किम की एकमात्र सीट से उसके उम्मीदवार इंद्र हांग सुब्बा दूसरी बार सांसद चुने गए हैं। उन्हें कुल 1,64,369 मत प्राप्त हुए हैं। इंद्र हांग सुब्बा ने सीएपी उम्मीदवार भरत बस्नेत को 80,803 मतों से मात दी है।

इंद्र हांग सुब्बा ●

प्रमुख प्रतिद्वंद्वी सिक्किम डेमोक्रेटिक फ्रंट (एसडीएफ) के प्रेम दास राई को 77,171 और सिटीजन एक्शन पार्टी के प्रत्याशी भरत बस्नेत को 83,566 मत मिले हैं। पिछले कार्यकाल में भाजपा गठबंधन में रहते हुए नागरिकता संशोधन अधिनियम के विरुद्ध मत देकर चर्चा में रहे सुब्बा को इस बार एसकेएम ने टिकट दिया था। दूसरी ओर भाजपा के दिनेश चन्द्र नेपाल को 19,035 मत और कांग्रेस के उम्मीदवार गोपाल छेत्री को 2,241 मत मिले हैं।

अमेठी में स्मृति का फ्लाप शो, अर्जुन का नहीं लगा निशाना

नितिन गडकरी, राजनाथ सिंह और सिंधिया की आसान जीत

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली: कई मायने में अप्रत्याशित रहे लोकसभा चुनावों ने नरेन्द्र मोदी सरकार के तमाम मंत्रियों को भी गहरा राजनीतिक सबक दिया है। अपने काम, छवि और प्रभाव के दम पर जहां कई मंत्रियों ने धमाकेदार जीत हासिल की, वहीं पिछली बार अमेठी में राहुल गांधी को हराकर दमदार योद्धा की ख्याति हासिल करने वाली केंद्रीय मंत्री स्मृति इरानी इस बार इसी निर्वाचन क्षेत्र से कांग्रेस के उम्मीदवार किशोरी लाल शर्मा से पराजित हो गईं। यही हाल केंद्रीय मंत्री महेन्द्र नाथ पांडेय, अर्जुन मुंडा और कौशल किशोर का भी हुआ।

लोकसभा चुनाव में उतरे प्रधानमंत्री मोदी के मंत्रिमंडल सहयोगियों में आसान और स्वाभाविक जीत हासिल करने वालों में गृह मंत्री अमित शाह, सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह शामिल हैं। पर्यावरण मंत्री भूपेन्द्र यादव, शिक्षा एवं कौशल विकास मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, जल संसाधन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, वाणिज्य और खाद्य एवं उपभोक्ता मामलों के मंत्री पीयूष

16 हजार मतों से शशि थरूर ने केंद्रीय मंत्री राजीव चंद्रशेखर को तिरुअनंतपुरम सीट से हराया

1.80 लाख मतों से केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने हमीरपुर सीट से जीत दर्ज की

स्मृति इरानी ●

अर्जुन मुंडा ●

गोयल ने भी अपने प्रतिद्वंद्वी पर जीत हासिल की। आरामदायक जीत हासिल करने वाले केंद्रीय मंत्रियों में ज्योतिरादित्य सिंधिया भी शामिल हैं, जो गुना से पांच लाख से अधिक वोटों से जीते हैं।

स्मृति इरानी की तरह जनजातीय मामलों के मंत्री अर्जुन मुंडा की झारखंड के खूंटी निर्वाचन क्षेत्र से कांग्रेस के कालीचरण मुंडा के हाथों पराजय ने भाजपा को बड़ा झटका दिया। केरल के तिरुअनंतपुरम में केंद्रीय मंत्री राजीव चंद्रशेखर कांग्रेस के शशि थरूर से नजदीकी मुकाबले में लगभग 16 हजार वोटों से शिकस्त खा बैठे। गृह राज्यमंत्री अजय मिश्र टेनी पर सपा के उत्कर्ष मिश्र खीरी में भारी पड़े। टेनी उस समय राष्ट्रीय सुर्खियों में आए थे, जब उनके पुत्र को अक्टूबर 2021 में लखीमपुर में हुई हिंसा के सिलसिले में गिरफ्तार किया गया था। अरुणाचल प्रदेश वेस्ट से केंद्रीय मंत्री किरण रिजिजू ने भी आसानी से जीत हासिल की। हिमाचल प्रदेश में हमीरपुर निर्वाचन क्षेत्र से सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने लगभग 1.80 लाख वोटों से विजय प्राप्त की। वह हमीरपुर से रिकार्ड पांचवीं बार जीते हैं।

लोकसभा से निकाली गईं महुआ मोइत्रा भी जीतीं

राज्य ब्यूरो, जागरण ● कोलकाता: बंगाल के नदिया जिले की कृष्णानगर लोकसभा सीट से टीएमसी उम्मीदवार महुआ मोइत्रा ने जीत दर्ज की है। उन्होंने भाजपा प्रत्याशी अमृता राय को पटखनी दी है। उद्योगपति से उपहार व पैसे लेकर संसद में सवाल पूछने के मामले में लोकसभा की सदस्यता गंवाने वाली महुआ मोइत्रा को ममता ने फिर से टिकट देकर यह बताने की कोशिश की थी कि पीएम मोदी का विरोध करने के चलते उन्हें संसद से निकाला गया था और वह फिर से चुनकर लोकसभा जाएंगी। यही नहीं ममता ने अपनी पार्टी के प्रत्याशियों की सूची जारी करने से कई माह पहले ही घोषणा कर दी थीं कि महुआ फिर से कृष्णानगर से लड़ेंगी।

महुआ मोइत्रा ●

लोकसभा चुनाव के लिए अपना प्रचार अभियान की शुरुआत भी ममता ने 31 मार्च को कृष्णानगर से किया था। इससे साफ हो जाता है कि तृणमूल सुप्रीमो के लिए यह सीट कितनी अहम थी। वहीं भाजपा शीर्ष नेतृत्व ने ममता और महुआ को कृष्णानगर में ही मात देने के लिए एक अलग रणनीति अपनाई थी और कृष्णानगर राजघराने की ही राजमाता अमृता राय को प्रत्याशी बनाया था। प्रत्याशी बनाए जाने की घोषणा के बाद पीएम मोदी ने अमृता राय से टेलीफोन पर बात की थी। साथ ही राज्य की जिन दो लोकसभा सीटों पर पीएम मोदी ने एक नहीं बल्कि दो-दो बार रैलियां की थीं, उनमें कृष्णानगर सीट शामिल है।

महुआ ने कहा-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी झूठे हैं

यदि महुआ हार जातीं तो पूरे प्रदेश में यह संदेश जाता कि लोगों ने महुआ के भ्रष्टाचार पर मुहर लगा दी है, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। टीएमसी ने कहा है कि लोगों ने महुआ को वोट देकर बता दिया कि वह गलत नहीं हैं और यह सब भाजपा की प्रतिशोध वाली राजनीति है। जीत के बाद महुआ ने पीएम मोदी पर हमला बोला और कहा कि वह झूठे हैं। मैं बंगाल के लोगों और पूरे देश को सलाम करती हूं जिन्होंने भाजपा के अहंकार के खिलाफ वोट दिया है। राजनीतिक जानकारों का कहना है कि महुआ की जीत भाजपा विरोधी गठबंधन के लिए भी महत्वपूर्ण है।

संदेशों से भरा नतीजा

त्वरित टिप्पणी
आशुतोष झा

- परिणामों ने साफ किया कि चुनाव में होती है तड़के की जरूरत
- कांग्रेस ने यह किया भी और बार-बार जमीन पर उसे दोहराया भी

नई दिल्ली: लोकसभा चुनाव के नतीजों ने एक साथ कई सवालों के जवाब दे दिए हैं तो कुछ नए सवाल भी खड़े कर दिए हैं। साथ ही यह स्पष्ट कर दिया है कि लगातार तीसरी बार सत्ता में आने की लड़ाई में भी जनता का सबसे ज्यादा भरोसा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर ही है और इसीलिए जितना आंकड़ा संयुक्त रूप से पूरा विपक्ष नहीं ला सका, उतना अकेले भाजपा लाने में सफल रही, हालांकि बहुमत के आंकड़े से पीछे रह गई। खासकर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के बयान के बाद यह भी स्पष्ट हो गया कि विपक्ष में मोदी भय व्याप्त था।

नतीजों ने यह भी साफ कर दिया है कि चुनाव में तड़के की जरूरत होती है। यानी जनता के सामने कुछ सजे सजाए मनभावन व्यंजन परोसने पड़ते हैं, जो इस बार भाजपा ने नहीं किया, लेकिन कांग्रेस ने किया भी और बार-बार जमीन पर उसे दोहराया भी। नतीजे ने यह भी बता दिया कि अतिविश्वास खतरनाक होता है। जो नए सवाल खड़े किए हैं वे ये कि क्या जनता जमीनी काम के बजाय भावनात्मक मुद्दों पर ज्यादा वोट करती है? क्या बड़े सुधारों को लेकर वोटर उत्साही नहीं होते। एक बड़ा सवाल यह भी है कि पिछले 10 वर्ष में राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय मुद्दों के आसपास सिमटा लोकसभा चुनाव क्या फिर से क्षेत्रीयता के शिकंजे में आने वाला है। लेकिन, सबसे बड़ा संदेश यह है कि चुनावी रणनीति में सब पर भारी रहने वाली भाजपा को कई विषयों पर आत्ममंथन करना पड़ेगा।

यह चुनाव 400 पार के नारे से शुरू हुआ था, जो जाहिर तौर पर विपक्ष के ऊपर मानसिक दबाव बनाने के लिए था। वह तो खैर नहीं हुआ। तीसरी बार में भाजपा बहुमत से भी नीचे आ गई। हालांकि, मोदी के नेतृत्व में जितनी सीटें आईं, वह हार नहीं मानी जाएगी, क्योंकि इस चुनाव में उन्होंने विपक्षी गठबंधन की तरह न तो लोकलुभावन योजनाओं की घोषणा की और न ही बालाकोट व राममंदिर जैसे विषयों को मुद्दा बनाने की कोशिश की। शायद प्रधानमंत्री मोदी यह मान बैठे थे कि भारत का वोटर बहुत परिपक्व हो चुका है। वह देश की अर्थव्यवस्था को समझ सकता है, वह वर्तमान के लाभ के साथ-साथ भविष्य के लिए सोच सकता है। भाजपा के लोग जनता को यह समझाने में असफल रहे।

स्थिति थोड़ी और बेहतर हो सकती थी, अगर कुछ बातों का ख्याल रखा जाता। पहला- उम्मीदवारों के चयन में थोड़ा और परिश्रम होता, क्योंकि बड़ी संख्या में भाजपा उम्मीदवारों को लेकर रोष था और वे पूरी तरह मोदी के चेहरे पर आश्रित थे। दूसरा- विपक्ष के नैरेटिव के विरुद्ध स्पष्टता लाई जाती। विपक्ष यह नैरेटिव बनाता रहा कि भाजपा अमीरों की पार्टी है। तीसरा-केवल भविष्य की स्वर्णिम राह दिखाने के बजाय कुछ कल्याणकारी योजनाओं की घोषणा की जाती। कांग्रेस को मिली बड़ी उछाल के पीछे एक बड़ा कारण है महिलाओं और युवाओं को सालाना एक-एक लाख रुपये देने का वादा। भाजपा यह भूल गई कि पिछले दो चुनावों में उनकी ओर से भी बड़े वादे किए गए थे या योजनाएं चलाई गई थीं। हाल में जिन राज्यों में भाजपा चुनाव जीती, वहां भी यह तड़का लगाया गया था। चौथा-पार्टी के अंदर कुछ नेताओं की महत्वाकांक्षा। कुछ राज्यों में इसका असर सबको दिखा। पांचवां-अगर कार्यकर्ताओं को इस अतिविश्वास से सचेत किया जाता कि 400 पार का नारा मनोवैज्ञानिक दबाव के लिए है, जमीन पर हर सीट के लिए काम करना ही होगा तो संभवतः भाजपा फिर से बहुमत को छूती दिखती।

सरकार जाहिर तौर पर राजग की बनेगी, लेकिन विपक्ष आज जिस मजबूत स्थिति में दिख रहा है, उन्हें भी हारा हुआ नहीं माना जाएगा। उनका मनोबल बढ़ा हुआ है और आने वाले विधानसभा चुनावों में यह दिखेगा भी। 2014 के बाद विपक्ष पहली बार ऐसी स्थिति में है, जहां उसका दबाव नजरअंदाज नहीं किया जा सकेगा। खासतौर से तब, जब पीएम मोदी को दबाव में काम करने का अनुभव व आदत नहीं रही है और टीडीपी व जदयू जैसे बड़े दल ऐसे हैं, जो बड़े बारगेनर माने जाते हैं। दरअसल, वोटरों ने ऐसा नतीजा दिया है, जहां सहयोगी दलों का साथ अनिवार्य होगा। माना जा रहा था कि मोदी 3.0 और बड़े सुधारों का काल होगा, लेकिन जो हालात बने हैं, उसमें सुधार का बहुत स्थान नहीं है, क्योंकि सुधार सख्त कदम की मांग करता है और बहुमत की सरकार जरूरी होती है। 10 वर्ष बाद फिर से जनता ने ऐसा नतीजा दिया, जहां राष्ट्रीय सोच और हित पर क्षेत्रीयता भारी पड़ सकती है।

कांग्रेस ने 20 साल बाद दर्ज की नगालैंड सीट पर जीत

राहुल गांधी के साथ एस. सुपोंगमेरेन जमीर ● इंटरनेट मीडिया

कोहिमा, प्रेट्र: कांग्रेस ने 20 साल बाद नगालैंड की एकमात्र लोकसभा सीट जीत हासिल की। हालांकि राज्य में कांग्रेस का एक भी विधायक नहीं है। 2014 से कांग्रेस के टिकट पर कोई भी उम्मीदवार विधानसभा नहीं पहुंच सका है।

लोकसभा चुनाव रिटर्निंग अधिकारी सुशील कुमार पटेल ने बताया कि कांग्रेस उम्मीदवार एस. सुपोंगमेरेन जमीर ने अपने निकट प्रतिद्वंद्वी भाजपा की सहयोगी पार्टी नेशनल डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव पार्टी (एनडीपीपी) के चुंबेन मरी को 50,984 वोटों के अंतर से हराया। जमीर को 4.01 लाख वोट और मरी को 3.50 लाख वोट मिले, जबकि निर्दलीय उम्मीदवार हयिथुंग तुंगो लोथा ने 6,232 वोट हासिल किए। 2019 के आम चुनाव में सत्तारूढ़ एनडीपीपी उम्मीदवार तोखेहो येप्थोमी ने कांग्रेस उम्मीदवार केएल चिशी पर 13 हजार वोटों से जीत दर्ज की थी।

प्रत्याशी चयन और चुनावी मुद्दा सेट करने में भाजपा विफल

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की लोकप्रियता के बावजूद प्रत्याशियों के चयन और चुनावी मुद्दों को सेट करने में विफलता भाजपा पर भारी पड़ी। कुछ राज्यों में बड़े नेताओं के बीच अहम के टकराव का भी नकारात्मक असर पड़ा। नतीजों से साफ है कि 2014 और 2019 में स्पष्ट बहुमत दिलाने में अहम भूमिका निभाने वाले उत्तर प्रदेश में भाजपा अपने ओबीसी वोट बैंक को सहेजने में विफल रही। इसके साथ ही जीत के प्रति अतिविश्वास के कारण कार्यकर्ताओं की शिथिलता और आरएसएस के स्वयंसेवकों की सक्रियता में कमी की कीमत भी भाजपा को चुकानी पड़ी।

वर्ष 2014 में मनमोहन सरकार का भ्रष्टाचार और 2019 में सर्जिकल और एयर स्ट्राइक के बाद राष्ट्रवाद केंद्रीय चुनावी मुद्दा रहा, लेकिन 2024 में भाजपा कोई भी ऐसा राष्ट्रीय मुद्दा बनाने में विफल रही, जो मतदाताओं को मतदान केंद्र तक ला सके। इस बार राष्ट्रीय मुद्दे के अभाव में स्थानीय मुद्दे चुनाव में हावी रहे। कई बार जीते सांसदों के खिलाफ जनता की नाराजगी का भी असर पड़ा। भाजपा सत्ता विरोधी

- महाराष्ट्र में फडणवीस के फार्मूले पर संदेह के बावजूद केंद्रीय नेतृत्व का आगे बढ़ना पड़ा भारी
- राष्ट्रीय चुनावी मुद्दों के अभाव में हावी रहे स्थानीय मुद्दे, बड़े नेताओं के बीच अहम की लड़ाई ने भी बिगाड़ा खेल

लहर से निपटने के लिए हर बार चुनाव में अपने पुराने प्रत्याशियों को बदलने के लिए जानी जाती है। इस बार भाजपा ने पुराने सांसदों को बदलने में कोताही दिखाई। बिहार और राजस्थान में भाजपा की सीटों में कमी के पीछे इसे अहम वजह माना जा रहा है।

पहले के चुनावों में भाजपा मुद्दे तय कर करती थी और विपक्ष को उसी पिच पर आने के लिए विवश करती थी। इस बार ऐसा नहीं दिखा। चरण दर चरण मुद्दा विपक्ष तय करता दिखा और भाजपा जवाब देती रही। 'अबकी बार 400 पार' के नारे को भी विपक्ष संविधान बदलने और एससी, एसटी और ओबीसी आरक्षण खत्म करने से जोड़कर भाजपा के खिलाफ इस्तेमाल करने में सफल रहा। इसके लिए आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत और अमित शाह का फेक वीडियो भी बनाया गया। भाजपा ने इसका प्रतिकार करने का प्रयास किया, लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। विपक्ष आरक्षण जैसे संवेदनशील मुद्दे पर एससी, एसटी और ओबीसी के बीच भाजपा के प्रति भ्रम पैदा करने में सफल रहा। अदाणी-अंबानी और अमीरों की सरकार जैसे मुद्दों पर विपक्ष को घेरने में कोताही रही तो गरीबों में संसाधनों के वितरण के कांग्रेस के वादे पर लोगों को अच्छी तरह समझाने में भाजपा नाकाम रही।

उत्तर प्रदेश भाजपा का गढ़ बन गया था, लेकिन इस बार वरिष्ठ नेताओं के बीच अहम की लड़ाई का असर चुनाव प्रचार के दौरान संगठन में बिखराव और उम्मीदवारों के चयन में भी दिखा। उत्तर प्रदेश ने वर्ष 2014 में 71 और 2019 में मिलीं 62 सीटों ने भाजपा को पूर्ण बहुमत दिलाने में अहम भूमिका निभाई थी। अमित शाह उत्तर प्रदेश में यादव से इतर अन्य पिछड़ी जातियों को भाजपा के पक्ष में गोलबंद करने में सफल रहे थे। इस बार ये पिछड़ी जातियां भाजपा से छिटककर सपा और कांग्रेस के पक्ष में जाती दिखीं। परिणामस्वरूप भाजपा 36 से भी कम सीटों पर सिमटती नजर आई। यही स्थिति बंगाल में रही। केंद्रीय नेतृत्व ने तृणमूल कांग्रेस से आए सुवेंदु अधिकारी पर दांव खेला, लेकिन राज्य के पुराने दिग्गजों ने अभी तक उन्हें स्वीकार नहीं किया। यही कारण है कि ममता बनर्जी के खिलाफ भ्रष्टाचार के बड़े मामले, 50 करोड़ रुपये से अधिक नकदी की बरामदगी और संदेशखाली जैसे मुद्दों को भाजपा भुनाने में विफल रही और पिछली बार के प्रदर्शन से काफी पीछे रह गई। इसी तरह से भाजपा के शीर्ष नेताओं को महाराष्ट्र में शिवसेना और राकांपा को लेकर देवेंद्र फडणवीस के प्लान पर संदेह तो पहले से था, लेकिन उसे सुधारने की कोशिश नहीं की गई। शिवसेना और राकांपा को तोड़ने से महाराष्ट्र की जनता के बीच भाजपा की छवि को नुकसान पहुंचा और उसका नतीजों पर असर भी दिखा।

क्षेत्रवाद-जातिवाद के भंवर से पार नहीं पा सके फडणवीस

ओमप्रकाश तिवारी ● जागरण

मुंबई: महाराष्ट्र में भाजपा नेता एवं उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने बड़ी चतुराई से पिछले दो वर्षों में उन दोनों राजनीतिक दलों को छिन्न-भिन्न कर दिया, जिन्होंने 2019 के विधानसभा चुनाव में भाजपा के सबसे बड़े दल के रूप में उभरने के बावजूद उन्हें मुख्यमंत्री बनने से रोक दिया था। किंतु लोकसभा चुनाव में वही देवेंद्र फडणवीस शरद पवार, उद्धव ठाकरे एवं कांग्रेस की तिकड़ी से निपटने में सफल नहीं हो सके। इन तीनों दलों ने मिलकर पिछले कुछ माह में खड़े हुए मराठा आरक्षण के मुद्दे को परोक्ष रूप से तूल देकर मराठा युवाओं को भाजपानीत गठबंधन से दूर कर दिया। उद्धव ठाकरे अपनी पार्टी टूटने के बाद मराठी मतदाताओं की सहानुभूति हासिल करने में भी सफल रहे।

देवेंद्र फडणवीस ●

- मराठा आरक्षण के मुद्दे ने मराठा युवाओं को भाजपानीत गठबंधन से कर दिया दूर
- पार्टी टूटने के बाद मराठियों की सहानुभूति हासिल करने में सफल रहे उद्धव ठाकरे

लगभग दो वर्ष पहले 20 जून को एकनाथ शिंदे ने शिवसेना में बगावत की थी। इसके एक वर्ष बाद अजीत पवार ने राकांपा में बगावत का झंडा उठा लिया। राकांपा में हुई टूट के बाद ही महाराष्ट्र में मराठों को कुनबी का दर्जा देकर ओबीसी कोटे में आरक्षण देने की मांग उठने लगी। हालांकि शिंदे सरकार ने लोकसभा चुनाव की घोषणा से कुछ माह पहले मराठों को शिक्षा एवं नौकरियों में 10 प्रतिशत आरक्षण देने का कानून विधानसभा का विशेष सत्र बुलाकर बना दिया। किंतु मराठा आरक्षण आंदोलन का नेतृत्व कर रहे मनोज जरांगे पाटिल इससे संतुष्ट नहीं थे। चुनाव से ठीक पहले उन्होंने मराठा आरक्षण का विरोध करने वालों को हराने का 'फतवा' भी दे डाला। भाजपा एवं शिवसेना (शिंदे) को इसका नुकसान भी उठाना पड़ा। यहां तक कि जरांगे पाटिल के अपने जिले जालना में पांच बार से जीतते आ रहे केंद्रीय मंत्री रावसाहब दानवे पाटिल को भी इस बार हार का मुंह देखना पड़ा।

एक जाति की नाराजगी के अलावा महाराष्ट्र में शिवसेना (यूबीटी) के अध्यक्ष उद्धव ठाकरे द्वारा क्षेत्रवाद का मुद्दा उठाया जाना भी भाजपा को भारी पड़ा। शिवसेना एवं राकांपा को तोड़ने का ठीकरा भाजपा पर फोड़ते रहे। किंतु भाजपा इस आरोप की काट नहीं ढूंढ सकी। शिवसेना के पुराने समर्थकों सहित सामान्य मराठियों को भी प्रधानमंत्री की 'नकली शिवसेना' एवं 'नकली राकांपा' वाली टिप्पणी भी कतई रास नहीं आई, क्योंकि शिवसेना की स्थापना उद्धव के पिता बालासाहब ठाकरे एवं राकांपा की स्थापना शरद पवार ने की थी। नतीजा, मुंबई में शिवसेना शिंदे का खाता भी नहीं खुला और भाजपा भी सिर्फ एक सीट (पीयूष गोयल) जीत सकी।

प्याज ने भी हराया

महाराष्ट्र के करीब 18 जिलों में प्याज की खेती होती हैं। केंद्र सरकार ने पिछले वर्ष प्याज की कीमतें नियंत्रित रखने के लिए निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया था। कीमतें तो नियंत्रित रहीं, लेकिन उत्तर महाराष्ट्र के किसानों का कोप भाजपा एवं शिवसेना (शिंदे) पर फूटा। जिसके चलते महाराष्ट्र में नासिक, दिंडोरी, धुले जैसी महत्वपूर्ण सीटें भी गंवानी पड़ीं।

कहीं फिर न लौट आए गठबंधन की मजबूरी का दौर

जयप्रकाश रंजन ● जागरण

नई दिल्ली: 'हम गठबंधन की सरकार हैं। इससे हमारे विकल्प सीमित हो जाते हैं।' तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने यह बात वर्ष 2014 में अपनी अंतिम प्रेस कान्फ्रेंस में कही थी। यह भारत में गठबंधन की राजनीति का सच है जो फिर देश के सामने आ गया है। भाजपा अपने बूते सरकार बनाने की स्थिति में नहीं दिख रही है, हालांकि राजग सरकार बनाने में सक्षम है। तीन दर्जन से ज्यादा दलों वाले राजग में सबसे ज्यादा नजर तेलुगु देसम पार्टी (तेदेपा) और जनता दल यूनाइटेड (जदयू) पर रहेगी। दोनों के पास 30 सीटें होने से अहमियत बढ़ गई है।

राजनीतिक विश्लेषक बताते हैं कि गठबंधन में शामिल पार्टियों का रवैया बहुत हद तक मुख्य पार्टी की सीटों से तय होता है। जब मूल पार्टी के पास कम सीटें होती हैं तो

30 लोकसभा सीटें होने से तेदेपा और जदयू की अहमियत बढ़ गई है

2014 और 2019 में भाजपा के पास अकेले बहुमत था

नीतीश कुमार ●

चंद्रबाबू नायडू ●

समर्थन करने वाले दल अपने मुद्दों पर अडिग रहते हैं। वर्ष 2004 की मनमोहन सिंह सरकार में और इसके पहले की अटल बिहारी वाजपेयी की राजग सरकार के कार्यकाल में यह देखा जा चुका है। उक्त दोनों कार्यकाल में गठबंधन में शामिल पार्टियों ने समय-समय पर अपनी ही सरकारों के लिए परेशानियां पैदा की थीं। वर्ष 2014 और वर्ष 2019 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व भाजपा के पास अकेले बहुमत था, नतीजा दूसरे दलों के पास 'सौदेबाजी की ताकत' नहीं थी। यह स्थिति अब बदल सकती है। जानकार बता रहे हैं कि राजग की केंद्र सरकार में जदयू और तेदेपा शामिल होते हैं तो उनकी तरफ से केंद्र सरकार पर बिहार और आंध्र प्रदेश के लिए विशेष पैकेज का दबाव बनाया जा सकता है। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार काफी पहले से विशेष राज्य का दर्जा देने का दबाव बनाते रहे हैं। इसी तरह से तेदेपा सुप्रीमो चंद्रबाबू नायडू ने विधानसभा चुनाव में केंद्र से आंध्र प्रदेश के लिए विशेष पैकेज हासिल करने को प्रमुख चुनावी मुद्दा बनाया था। लोस चुनाव में 16 सीटों के साथ केंद्र सरकार के गठन में भी उनकी भूमिका बढ़ गई है। सरकार में शामिल होने की स्थिति में उक्त दोनों पार्टियां मनपसंद मंत्रालयों के लिए भी दबाव बनाने में माहिर हैं। वाजपेयी सरकार के कार्यकाल में जदयू मुखिया नीतीश कुमार का पसंदीदा मंत्रालय रेलवे था। बाद में कृषि मंत्री भी रहे। वर्ष 2019 में भी सरकार में शामिल होने के लिए जदयू रेल मंत्रालय की मांग कर रहा था। तेदेपा की पसंद आर्थिक मंत्रालय होते हैं। बताते हैं कि तेदेपा की नजर इलेक्ट्रानिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय पर हो सकती है।

आज का मौसम

आंशिक रूप से बादल छाए रहेंगे। 25 से 35 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवा चलने और हल्की वर्षा होने की भी संभावना है।

पूर्वानुमान	अधिकतम	न्यूनतम
दिल्ली		
5 जून	43.0	31.0
6 जून	42.0	30.0
नोएडा		
5 जून	41.0	29.0
6 जून	42.0	29.0
गुरुग्राम		
5 जून	44.0	27.0
6 जून	43.0	26.0

डिग्री सेल्सियस में

न्यूज गैलरी

आबकारी घोटाले में अमनदीप सिंह की याचिका खारिज

नई दिल्ली: आबकारी घोटाला से जुड़े मनी लांड्रिंग मामले में व्यवसायी और ब्रिंडको सेल्स प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक अमनदीप सिंह ढल को जमानत देने से दिल्ली हाई कोर्ट ने इन्कार कर दिया। अदालत ने कहा कि मामले के समग्र तथ्यों और परिस्थितियों के साथ आरोपों की गंभीरता को देखते हुए आरोपित को जमानत नहीं दी जा सकती है। अभी मामले में आरोप तय किए जाने बाकी हैं। ऐसे में इस स्तर पर आवेदक को जमानत देने का कोई आधार नहीं है। (जासं)

पुलिसकर्मियों पर हमला करने के मामले में बदमाश गिरफ्तार

नई दिल्ली: ड्यूटी के दौरान पुलिसकर्मियों पर हमला करने के मामले में आठ माह से फरार आरोपित नीरज द्विवेदी को उत्तरी जिला के वाहन चोरी निरोधक दस्ता ने गिरफ्तार कर लिया है। जमानत पर बाहर आने के बाद उसने जेल में समर्पण नहीं किया और आठ माह से फरार था। तीस हजारी कोर्ट ने उक्त मामले में उसे भगोड़ा घोषित कर दिया था। (जासं)

11वीं में नान-प्लान दाखिले के लिए जल्द करें आवेदन

नई दिल्ली: राजधानी के निजी स्कूलों से 10वीं उत्तीर्ण कर चुके उम्मीदवार अगर सरकारी स्कूलों में 11वीं में दाखिला चाहते हैं तो नान प्लान दाखिला के तहत आवेदन कर सकते है। आवेदन की अंतिम तारीख सात जून है। शिक्षा निदेशालय की वेबसाइट पर जाकर आनलाइन माध्यम से आवेदन करना होगा। निदेशालय के अधिकारी ने बताया कि दाखिला प्रक्रिया तीन चरणों में होगी। पहला चरण सात जून को समाप्त हो जाएगा। विद्यार्थियों को 18 जून को स्कूल आवंटित किए जाएंगे। अगर सीटें बचती हैं तो दूसरा चरण होगा। जिसके लिए आवेदन एक जुलाई 2024 से 10 जुलाई 2024 तक होंगे। (जासं)

मोदी के काम और भाजपा के मजबूत संगठन से दिल्ली में लहराया भगवा

जीत का परचम ▸ बूथ प्रबंधन से लेकर चुनाव प्रचार तक में दिखी भाजपा की एकजुटता

मतदाताओं तक अपनी बात पहुंचाने व विपक्ष को घेरने में सफल रही पार्टी

संतोष कुमार सिंह ● जागरण

नई दिल्ली: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत के संकल्प को साकार करने के लिए दिल्लीवासी एक बार फिर से भाजपा के साथ खड़े हुए हैं। लगातार तीसरी बार दिल्ली की सभी सात लोकसभा सीटों पर भाजपा को जीत मिली है। इस बार आम आदमी पार्टी और कांग्रेस गठबंधन के साथ आमने-सामने की लड़ाई में भाजपा की जीत का प्रमुख कारण दिल्ली में मोदी सरकार द्वारा कराए गए विकास कार्य, मोदी की लोकप्रियता और भाजपा का मजबूत संगठन है।

राजधानी में आवागमन सुगम करने के लिए नरेन्द्र मोदी सरकार ने मेरठ एक्सप्रेस वे, ईस्टर्न व वेस्टर्न पेरिफेरल, द्वारका एक्सप्रेस वे, प्रगति मैदान सुरंग सड़क सहित कई सड़कों का निर्माण कराया है। साथ ही मेट्रो के निर्माण कार्य में तेजी आई है। नमो ट्रेन एनसीआर की नई पहचान बन गई। वायु प्रदूषण को कम करने के लिए केंद्र द्वारा दिल्ली को इलेक्ट्रिक बसें दी गईं। जी-20 शिखर सम्मेलन के आयोजन और उस समय हुए विकास कार्यों का असर भी लोकसभा चुनाव में दिखा। मोदी ने अपनी चुनावी सभाओं में भी इन कार्यों को गिनाकर मजबूत राष्ट्र व भाजपा प्रत्याशियों के लिए वोट मांगा था। इस बार भी दिल्लीवासियों पर मोदी की लोकप्रियता का जादू दिखा। चुनाव प्रचार के अंतिम चरण में उन्होंने उत्तर पूर्वी दिल्ली और पश्चिमी दिल्ली में एक-एक चुनावी सभा को संबोधित किया था। मोदी ने अपनी सरकार की उपलब्धियां गिनाने के साथ विरोधियों पर तीखे प्रहार किए थे। उनकी चुनावी सभा का असर इन दोनों सीटों के साथ ही पूरी दिल्ली में पर दिखा। छोटी बैठकों, नुक्कड़ सभाओं व जनसंपर्क से प्रचार शुरू कर अंतिम चरण में प्रधानमंत्री सहित अन्य बड़े नेताओं की रैली व रोड शो आयोजित कर हवा बनाने में सफल रही।

उत्तर पूर्वी दिल्ली से जीत के बाद नंद नगरी स्थित मतगणना केंद्र के बाहर विजय चिन्ह बनाते भाजपा के विजयी प्रत्याशी मनोज तिवारी। पारस कुमार

दक्षिणी दिल्ली संसदीय सीट से जीत के बाद समर्थकों का हाथ हिलाकर अभिवादन लेते भाजपा प्रत्याशी रामवीर सिंह विधूड़ी। विपिन शर्मा

पिछले कई माह से योजनाबद्ध तरीके से की तैयारी

दिल्ली में मजबूत संगठन से भाजपा प्रत्याशियों की जीत की राह आसान हो गई। पार्टी ने एक इकाई की तरह काम किया, जिसका परिणाम सामने है। पार्टी ने प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा के नेतृत्व में प्रत्येक बूथ को मजबूत करने का काम शुरू कर दिया था। प्रत्येक बूथ पर 11 और उससे अधिक समर्पित कार्यकर्ताओं और पन्ना प्रमुखों की टीम तैनात की गई।

भ्रष्टाचार का मुद्दा उठाकर विपक्ष की राह मुश्किल की

भ्रष्टाचार के आरोपों में घिरी हुई आप सरकार और सीएम अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी को भाजपा ने बड़ा मुद्दा बनाया। आप व कांग्रेस के साथ चुनाव लड़ने पर प्रश्न खड़ा किया गया। मुख्यमंत्री आवास पर स्वाति मालीवाल से मारपीट व सीएम के पीए विभव कुमार की गिरफ्तारी का मामला भी भाजपा नेताओं ने खूब उछाला।

पिछले चुनाव की तुलना में भाजपा को 2.5% कम वोट मिले

▸ प्रथम पृष्ठ से आगे

दिल्ली में पहली बार किसी दल ने लगातार तीन बार सातों सीटें जीत कर क्लीन स्वीप की हैट्रिक पूरी की है। इस लोकसभा चुनाव में दिल्ली में भाजपा को 54.33 प्रतिशत वोट मिले, जो पिछले चुनाव की तुलना में करीब ढाई प्रतिशत कम है। पूर्वी दिल्ली से भाजपा प्रत्याशी हर्षदीप मल्होत्रा व नई दिल्ली से बांसुरी स्वराज इन दो प्रत्याशियों ने एक लाख से कम वोटों से जीत हासिल की। बाकी सभी उम्मीदवार एक लाख से अधिक वोट से चुनाव जीते। उत्तर पश्चिमी दिल्ली से योगेंद्र चांदोलिया ने कांग्रेस प्रत्याशी उदित राज को दो लाख 88 हजार 767 वोटो से हराकर दिल्ली में सबसे बड़ी जीत हासिल की। वहीं नई दिल्ली से बांसुरी स्वराज ने सबसे कम 78,370 वोटों से जीत दर्ज की। उन्होंने आप प्रत्याशी सोमनाथ भारती को हराया। 2019 के चुनाव में भाजपा को 56.85 प्रतिशत वोट मिले थे। तब कांग्रेस व आम आदमी पार्टी (आप) अलग-अलग चुनाव लड़ रही थीं। तब भाजपा दो लोकसभा सीटों पर साढ़े पांच लाख से अधिक वोटों से चुनाव जीत दर्ज की थी। तब उत्तर पूर्वी दिल्ली से भाजपा प्रत्याशी मनोज तिवारी भी तीन लाख 66 हजार से अधिक वोटों से चुनाव जीते थे।

कांग्रेस को ले डूबी शीर्ष नेतृत्व की मनमानी

संजीव गुप्ता ● जागरण

▸ **प्रदेश इकाई की रजामंदी के बगैर पहले थोपा आप से गठबंधन का निर्णय**

▸ **उम्मीदवारों के चयन में भी चलाई अपनी, वरिष्ठ नेताओं के पार्टी छोड़ने को भी नहीं लिया गंभीरता से**

नई दिल्ली : दिल्ली में कांग्रेस को एक बार लोकसभा चुनाव में करारी शिकस्त का सामना करना पड़ा है तो इसके लिए एक नहीं बल्कि कई कारण उत्तरदायी हैं। सबसे बड़ा कारण तो शीर्ष पार्टी नेतृत्व की मनमानी है। प्रदेश इकाई की सोच और तर्कों को दरकिनार कर बार- बार उस पर अपने निर्णय थोपना पार्टी को खुद ही भारी पड़ गया।

प्रदेश इकाई के नेता बिल्कुल भी इस पक्ष में नहीं थे कि आम आदमी पार्टी से गठबंधन किया जाए। वजह, इसी पार्टी ने कांग्रेस को दिल्ली की सत्ता से बाहर का रास्ता दिखाया था। अब जबकि दिल्ली निवासी कांग्रेस के शासनकाल और शीला दीक्षित सरकार की उपलब्धियों को याद करने लगे थे, शीर्ष नेतृत्व के दबाव में पार्टी को उसी आप के साथ गठबंधन करना पड़ गया। सात में से चार लोकसभा सीटें यानी 40 विधानसभा आप के खाते में डाल देने से प्रदेश के नेताओं को ही नहीं, कार्यकर्ताओं को भी भारी धक्का लगा।

इसके बाद तीन सीटों के उम्मीदवारों के चयन में भी शीर्ष नेतृत्व ने प्रदेश इकाई की सिफारिशों को दरकिनार कर दिया। उत्तर पूर्वी और उत्तर पश्चिमी सीट पर कन्हैया कुमार एवं उदित राज सरीखे बाहरी उम्मीदवार उतार दिए गए। इससे 20 विधानसभा क्षेत्रों के कार्यकर्ता और नाराज हो गए। पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं की नाराजगी को जब तत्कालीन प्रदेश अध्यक्ष अरविंदर सिंह लवली ने उठाना चाहा तो उनकी भी नहीं सुनी गई। लवली और पूर्व मंत्री राजकुमार चौहान के अलावा कई अन्य नेताओं ने इसके विरोध में पार्टी छोड़ने का निर्णय लिया तो भी आलाकमान ने परवाह नहीं की। तीनों ही सीटों पर भितरघात भी खूब देखने को मिली। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने तीनों ही सीटों पर वरिष्ठ नेता सचिन पायलट, चौ वीरेंद्र सिंह और सीपी जोशी को पर्यवेक्षक बनाया। लेकिन पायलट के अलावा कोई एक से दूसरी बार नहीं आया।

कांग्रेस पार्टी। फाइल

> हमारी तरफ से कुछ चूक तो हुई ही हैं। अब चाहे आप से गठबंधन का विरोध कह लें या कुछ प्रत्याशियों की अस्वीकार्यता। अन्य सभी कारकों पर विचार कर उन्हें दूर किया जाएगा। पूरा प्रयास रहेगा कि छह महीने बाद विधानसभा चुनाव में कांग्रेस बेहतर प्रदर्शन करे।
> -देवेंद्र यादव, अध्यक्ष, दिल्ली कांग्रेस

> हम शुरू से ही कांग्रेस नेतृत्व को समझाना चाह रहे थे, लेकिन हमारी नहीं सुनी गई। जनता ने न तो आप-कांग्रेस गठबंधन को स्वीकार किया, न ही उन दो प्रत्याशियों को समर्थन दिया, जिनका हम विरोध कर रहे थे। -अरविंदर सिंह लवली, पूर्व अध्यक्ष, दिल्ली कांग्रेस एवं भाजपा नेता

चांदनी चौक में दिखा मुकाबला, छह सीटों पर भाजपा ही भाजपा

▸ **कांटे की टक्कर के बीच एक मत से चांदनी चौक पर आगे रही भाजपा, जेपी ने शुरूआती चरण में दी टक्कर**

▸ **मनोज तिवारी के सामने कोई चुनौती नहीं पेश कर सके कन्हैया कुमार**

▸ **कमलजीत सेहरावत, योगेंद्र चंदौलिया, रामवीर विधूड़ी, हर्ष मल्होत्रा ने भारी मतों से दर्ज की जीत**

चांदनी चौक से भाजपा उम्मीदवार प्रवीण खंडेलवाल एसकेवी भारत नगर स्थित मतगणना केंद्र के बाहर जश्न मनाते हुए। प्रेट्र

विनीत त्रिपाठी ● जागरण

नई दिल्ली: दिल्ली के पिटारे से एक बाद भाजपा के लिए सातों सीटों पर जीत की हैट्रिक निकली है। सुबह आठ बजे बैलेट पेपर की गिनती के बाद ईवीएम से मतों की गणना शुरू हुई तो चांदनी चौक और कुछ हद तक पूर्वी दिल्ली संसदीय सीट को छोड़ दिया जाए तो कहीं भी कांटे का मुकाबला देखने को नहीं मिला। चांदनी चौक पर आइएनडीआइए गठबंधन के प्रत्याशी व वरिष्ठ कांग्रेस नेता जेपी अग्रवाल भाजपा प्रत्याशी प्रवीण खंडेलवाल के बीच कांटे की टक्कर देखने को मिली। वहीं, दूसरी तरफ पूर्वी दिल्ली से आइएनडीआइए गठबंधन के प्रत्याशी व आप नेता कुलदीप कुमार व भाजपा प्रत्याशी हर्ष मल्होत्रा के बीच भी कांटे की टक्कर दिखने को मिली।

दिल्ली की सबसे चर्चित सीट में शुमार नई दिल्ली सीट पर पूर्व केंद्रीय मंत्री व वरिष्ठ भाजपा नेता सुषमा स्वराज की बेटी बांसुरी स्वराज व आइएनडीआइए गठबंधन के प्रत्याशी व आप नेता सोमनाथ भारती के बीच मुकाबला था। शुरुआती मुकाबले के बाद बांसुरी ने सोमनाथ को 45 हजार 318 मतों से हराकर जीत दर्ज की।

पूर्वी दिल्ली सीट पर वैसे तो हर्ष मल्होत्रा ने शुरुआत से ही बढ़त हासिल की थी, लेकिन शुरुआती चरणों में उनके व कुलदीप कुमार के बीच जीत-हार का अंतर कुछ ज्यादा नहीं था। दस बजे के बाद हर्ष मल्होत्रा ने एक बाद छह हजार से अधिक के मतों का अंतर कायम किया। इसके बाद कुलदीप कुमार का उन्हें पकड़ पाना नामुमकिन हो गया। अंततः हर्ष ने 91 हजार से अधिक मतों से जीत दर्ज किया।

पश्चिमी दिल्ली संसदीय सीट पर कमलजीत सेहरावत ने सुबह नौ बजे 1200 वोट से जो बढ़त बनाई, वह शाम होते डेढ़ लाख से अधिक मतों में तब्दील हो गया। उन्होंने महाबल मिश्रा को 1.95 से अधिक मतों से हराया।

दक्षिणी दिल्ली पर आइएनडीआइए गठबंधन के प्रत्याशी व आप नेता सहीराम पहलवान और भाजपा नेता रामवीर सिंह विधूड़ी के बीच शुरुआती चरण में नौ बजे सहीराम 3117 मतों से विधूड़ी से आगे चल रहे थे, कुछ ही देर में विधूड़ी ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। इसके बाद रामवीर और सहीराम के बीच जीत-हार का अंतर बढ़ता गया। रामवीर ने सहीराम पहलवाल को 1.24 लाख से अधिक मतों से जीत दर्ज की।

उत्तर-पूर्वी दिल्ली में तीसरी बार चुनावी मैदान में उतरे मनोज तिवारी को कन्हैया कुमार मतगणना के किसी भी चरण में पछाड़ नहीं सके। अंततः मनोज तिवारी ने कन्हैया को भारी मतों से हराकर जीत की हैट्रिक बनाई।

उत्तर-पश्चिम दिल्ली पर कांग्रेस नेता उदित राज किसी भी तरह से योगेंद्र चांदोलिया को चुनौती देते नजर नहीं आए। चांदोलिया ने 2.90 लाख से अधिक मतों से जीत हासिल की।

उत्तर पश्चिम लोकसभा क्षेत्र में जीत के बाद विजय यात्रा निकालते भाजपा के विजयी प्रत्याशी योगेंद्र चांदोलिया। हरीश कुमार

फिर नहीं खुला किसी तीसरे दल का खाता

रणविजय सिंह ● जागरण

▸ **बीएसपी के सातों उम्मीद्वारों सहित 148 प्रत्याशियों की जमानत जब्त**

▸ **आप का नहीं खुला खाता, 35 वर्षों में नहीं मिली है किसी तीसरे दल को एक भी सीट**

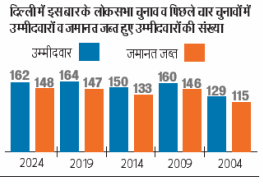

दिल्ली में इस बार के लोकसभा चुनाव व पिछले चार चुनावों में उम्मीदवारों व जमानत जब्त हुए उम्मीदवारों की संख्या

नई दिल्ली: राष्ट्रीय राजधानी में इस बार लोकसभा चुनाव में भाजपा व आइएनडीआइए (कांग्रेस व आम आदमी पार्टी) के प्रत्याशियों के बीच जोरदार मुकाबला हुआ। भाजपा न सिर्फ भारी पड़ी बल्कि राष्ट्रीय राजधानी में लगातार तीसरी बार भगवा लहर में विजेता भाजपा व प्रतिद्वंदी आइएनडीआइए प्रत्याशियों के अलावा अन्य दलों के एक भी उम्मीदवार व निर्दलीय जमानत नहीं बचा पाए। बहुजन समाज पार्टी (बीएसपी) के सातों उम्मीदवारों सहित 148 प्रत्याशियों की जमानत जब्त हो गई। खास बात यह रही कि कांग्रेस व आम आदमी पार्टी (आप) के बीच गठबंधन होने के बावजूद इस बार भी दिल्ली में किसी तीसरे दल का खाता नहीं खुल पाया।

दिल्ली में पिछले 35 वर्षों में किसी तीसरे दल को एक भी सीट नहीं मिली। इस दौरान पिछले दस वर्षों में दिल्ली की सात लोकसभा सीटों के लिए हुए तीन चुनावों का परिणाम एकतरफा ही रहा है। बाकी चुनावों में भाजपा व कांग्रेस के प्रत्याशी ही चुनाव जीत पाए थे। दिल्ली में आखिरी बार वर्ष 1989 के लोकसभा चुनाव में तीसरे दल के रूप में जनता दल ने एक सीट पर जीत दर्ज की थी। तब बाहरी दिल्ली लोकसभा सीट से जनता दल के प्रत्याशी तारीफ सिंह चुनाव जीते थे। इसके बाद से अब तक नौ चुनाव हो चुके हैं, लेकिन दिल्ली में किसी तीसरे दल को सीट नहीं मिली। इस लोकसभा चुनाव में दिल्ली की सात लोकसभा सीटों के लिए 162 प्रत्याशी चुनावी मैदान में थे। भाजपा व आइएनडीआइ गठबंधन के प्रत्याशियों के अलावा बीएसपी ने भी सातों सीटों पर अपने उम्मीदवार चुनावी मैदान में उतारे थे। लेकिन हाथी की चाल बेहद कमजोर रही। इस वजह से बीएसपी के दो उम्मीदवारों को छोड़कर बीएसपी के अन्य उम्मीदवार दस हजार मत भी नहीं जुटा सके। सिर्फ दो उम्मीदवार ही दस हजार से थोड़ा अधिक मत पा सके। आप सरकार से इस्तीफा देखकर नई दिल्ली से बीएसपी प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़े पूर्व मंत्री राजकुमार आनंद को भी सिर्फ छह हजार वोट ही मिले। इस वजह से उनकी भी जमानत जब्त हो गई। भाजपा, कांग्रेस, आप व बीएसपी के अलावा 141 अन्य उम्मीदवार भी चुनावी मैदान में थे। जिसमें करीब चार दर्जन पंजीकृत गौर मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रत्याशी व निर्दलीय उम्मीदवार शामिल हैं। इन सब की जमानत जब्त हो गई।

मुख्यमंत्री के खिलाफ नौ जुलाई को आदेश सुना सकती है अदालत

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: आबकारी घोटाले से जुड़े मनी लांड्रिंग मामले में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के खिलाफ ईडी द्वारा दायर पूरक आरोप पत्र पर संज्ञान लेने के मामले में अदालत नौ जुलाई को आदेश सुना सकती है। राउज एवेन्यू कोर्ट की विशेष न्यायाधीश कावेरी बावेजा ने आरोपपत्र पर संज्ञान लेने के मामले में चार जून के लिए फैसला सुरक्षित रखा था लेकिन उन्होंने इसे नौ जुलाई के लिए टाल दिया।

न्यायाधीश ने कहा कि दस्तावेज बहुत बड़े हैं और अदालत को निर्णय लेने के लिए समय चाहिए। अदालत ने ईडी की दलीलों सहित अन्य दलीलों को सुनने के बाद आदेश सुरक्षित रख लिया था। ईडी की ओर से दाखिल आठवें आरोपपत्र में आम आदमी पार्टी (आप) और उसके संयोजक अरविंद केजरीवाल को मुख्य आरोपित बताया है। ईडी ने कहा कि मामले में केजरीवाल के खिलाफ मुकदमा चलाने के लिए पर्याप्त सुबूत हैं।

सुप्रीम कोर्ट का मनीष सिसोदिया की जमानत पर विचार करने से इन्कार

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

▸ **दिल्ली आबकारी नीति घोटाले में आप नेता को अभी राहत नहीं**

दिल्ली आबकारी नीति घोटाले में आरोपित दिल्ली के पूर्व उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया को सुप्रीम कोर्ट से झटका लगा है। उन्हें कोर्ट से कोई राहत नहीं मिली है। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को मनीष सिसोदिया की जमानत मांगने वाली याचिका पर विचार करने से इन्कार कर दिया। हालांकि कोर्ट ने कहा कि सिसोदिया इस मामले में अंतिम आरोपपत्र दाखिल होने के बाद अपनी जमानत की मांग फिर से उठा सकते हैं।

जस्टिस अरविंद कुमार और संदीप मेहता की अवकाशकालीन पीठ ने प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और सीबीआइ की ओर से पेश सालिसिटर जनरल तुषार मेहता का बयान आदेश में दर्ज किया जिसमें कहा गया था कि सीबीआइ और ईडी तीन जुलाई तक इस मामले में अंतिम आरोपपत्र दाखिल कर देंगी। ज्ञात हो कि किसी भी मामले में सीबीआइ आरोपपत्र दाखिल करती है और प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) अभियोजन शिकायत दाखिल करती है जो कि आरोपपत्र ही होता है। कोर्ट ने सालिसिटर जनरल के बयान के बाद मनीष सिसोदिया को अंतिम आरोपपत्र दाखिल होने के बाद फिर से जमानत का मुद्दा उठाने की छूट देते हुए याचिका निपटा दी। इससे पहले वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने सिसोदिया को जमानत देने की मांग करते हुए कहा कि सिसोदिया पिछले 15 महीने से जेल में हैं और मामले में अभी तक ट्रायल शुरू भी नहीं हुआ है। निकट भविष्य में ट्रायल शुरू होने की उम्मीद भी नहीं है क्योंकि अब तक जांच जारी है।

मनीष सिसोदिया।

अंतिम आरोपपत्र दाखिल होने के बाद याचिका दायर करने की छूट

दिल्लीवालों ने स्पष्ट कर दिया केजरीवाल की जगह जेल में है : भाजपा

राज्य ब्यूरो, जागरण. नई दिल्ली: भाजपा ने दिल्ली में मिली जीत को ऐतिहासिक बताया है। उसका कहना है कि दिल्ली के लोगों ने आम आदमी पार्टी और कांग्रेस के भ्रष्टाचार को जवाब दिया है। जनता ने सभी सातों सीटें भाजपा को देकर स्पष्ट कर दिया है कि केजरीवाल की जगह जेल में है, क्योंकि मतदाताओं से वह जेल से बचने के लिए वोट मांगते थे। वह चुनाव प्रचार में कहते थे कि दिल्लीवासियों का वोट उन्हें जेल जाने से बचाएगा। दिल्ली के लोगों ने उन्हें वोट न देकर बता दिया है कि उन्होंने भ्रष्टाचार किया है और उनकी जगह जेल है।

दिल्ली प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि तीसरी बार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में एनडीए की सरकार बनने जा रही है। दिल्ली में पहली बार किसी भी पार्टी को लगातार तीन बार सभी सीटों पर जीत मिली है। यह मोदी व भाजपा के प्रति भाजपा का विश्वास है। आम आदमी पार्टी व केजरीवाल को ना सिर्फ दिल्ली वालों ने बल्कि पंजाब की जनता ने भी पूरी तरह ठुकरा दिया है।

राजधानी की राजनीति को बदलेगा लोकसभा चुनाव परिणाम

चुनौती

भ्रष्टाचार में घिरी आम आदमी पार्टी के सामने पार्टी को एकजुट रखने की चुनौती, पार्टी में असंतोष को देखते हुए आप से राजनीतिक गठबंधन तोड़ रही है कांग्रेस

संतोष कुमार सिंह ● जागरण

▸ **दोनों पार्टियों में बगावत से बदलेगा विधानसभा चुनाव का राजनीतिक समकीरण**

नई दिल्ली: दिल्ली में भाजपा ने लगभग 54 प्रतिशत से अधिक वोट लेकर एक बार फिर से यह साबित कर दिया है कि राजधानी में उसका मजबूत जनाधार है। यह चुनाव परिणाम दिल्ली की भविष्य की राजनीति भी तय करेगी, क्योंकि आम आदमी पार्टी और कांग्रेस इस समय आंतरिक कलह से जूझ रही है। वहीं, इन दोनों पार्टियों के गठबंधन को परास्त करने से भाजपा कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ा है। अगले कुछ माह में होने वाले दिल्ली विधानसभा चुनाव पर इस बदले हुए राजनीतिक वातावरण का प्रभाव पड़ेगा। आप के सामने दिल्ली में अपनी सत्ता बचाने की चुनौती बढ़ गई है।

वर्ष 2012 में अन्ना हजारे के भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन से उत्पन्न हुई आम आदमी पार्टी ने दिल्ली की राजनीतिक समीकरण बदल दी थी। उसने कांग्रेस के परंपरागत वोट बैंक को अपने पाले में कर पिछले लगभग 10 वर्षों से दिल्ली की सत्ता पर काबिज है। अब लोकसभा चुनाव में भाजपा को हराने के लिए आप और कांग्रेस ने गठबंधन कर चुनाव मैदान में उतरे। यह गठबंधन आप की राजनीतिक मजबूरी थी, क्योंकि उसकी सरकार आबकारी नीति सहित भ्रष्टाचार के कई आरोपों में घिरी हुई है। मुख्यमंत्री केजरीवाल सहित पार्टी के कई बड़े नेता जेल में हैं। पार्टी में विरोध के स्वर उठ रहे हैं। राजकुमार आनंद मंत्री पद छोड़कर बसपा में चले गए। स्वाति मालीवाल के साथ मुख्यमंत्री आवास में मारपीट का मामला प्रकाश में आने से पार्टी की छवि और भी धूमिल हुई है। मुखिया के जेल में होने और चुनाव में खराब प्रदर्शन से पार्टी में बगावत के सुर तेज होने की आशंका जताई जा रही है। खोई हुई राजनीतिक जमीन की तलाश कर रही कांग्रेस राजनीतिक ऊहापोह की स्थिति में है।

प्रदेश अध्यक्ष की असहमति के बाद भी कांग्रेस नेतृत्व ने दिल्ली में आप से चुनावी गठबंधन कर लिया। गठबंधन और कन्हैया कुमार व उदित राज को टिकट देने से पार्टी में बगावत सतह पर आ गई। प्रदेश अध्यक्ष अरविंद सिंह लवली, पूर्व मंत्री राजकुमार चौहान, विधायक नसीब सिंह व नीरज बसोया सहित कई नेताओं ने कांग्रेस छोड़कर भाजपा में चले गए। कई अन्य नेता नाराज बताए जाते हैं। यही कारण है कि गठबंधन के बाद भी अधिकांश नेता व कार्यकर्ता आप के साथ खड़े नहीं हुए।

कांग्रेस नेताओं का कहना है कि दिल्ली में उसकी राजनीतिक जमीन पर आप ने कब्जा किया है उसके साथ रहने से पार्टी को और नुकसान होगा। राजनीतिक परिस्थिति को भांपते हुए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष देवेंद्र यादव ने गठबंधन से अलग होने की घोषणा कर दी है। देश में कांग्रेस का प्रदर्शन सुधरने से दिल्ली के नेता भी अपनी राजनीतिक जमीन को वापस लेने के लिए आप सरकार के खिलाफ मुखर होंगे। इससे आप की मुश्किल बढ़ेगी। इस लड़ाई में भाजपा की राजनीतिक स्थिति मजबूत होगी।

नई दिल्ली स्थित पार्टी मुख्यालय में मतगणना के दौरान लोकसभा चुनाव में पार्टी की बढ़त का जश्न मनाते हुए भाजपा कार्यकर्ता। प्रेट्र

****

कह कर रहेंगे माधव जोशी

2019 के चुनाव में उसे कर्नाटक में सिर्फ एक सीट पर जीत मिली थी। इस बार यह संख्या बढ़कर नौ हो गई है। कांग्रेस ने इनमें से ज्यादातर सीटें भाजपा से ही छीनी है। दक्षिण के राज्यों में कांग्रेस के लिए सबसे कमजोर कड़ी आंध्र प्रदेश है, जहां वह लगभग डेढ़ दशक से वापसी के प्रयास में है।

दक्षिण भारत में भाजपा की मजबूत दस्तक

- तमिलनाडु में वोटों में वृद्धि हुई लेकिन नहीं मिल सकी कोई सीट
- दक्षिणी राज्यों में पिछली बार के मुकाबले एक सीट ज्यादा मिली
- कांग्रेस ने भी मजबूत बनाई रखी पकड़, अपनी 13 सीटें बढ़ाई

अरविंद शर्मा ● जागरण

नई दिल्ली: भाजपा ने दक्षिण के मोर्चे पर मजबूत दस्तक दी। चुनाव जीतने के सारे तंत्र आजमाए। सफलता की उम्मीद भी थी। प्रयास उसी अनुरूप किए गए। बनारस में तमिल संगमम और नए संसद भवन में सेंगोल की प्रतिस्थापना समारोह से लेकर चुनावी अभियानों के माध्यम से भी माहौल बनाने का प्रयास किया गया, फिर भी उम्मीदों के अनुरूप प्रवेश नहीं मिल सका। दक्षिण के सबसे बड़े राज्य तमिलनाडु में भाजपा का खाता नहीं खुल पाया। नतीजे ने निराश तो किया, लेकिन वोटों की वृद्धि ने विस्तार की संभावना भी जगाई।

दक्षिण भारत के पांच राज्यों एवं तीन केंद्र शासित प्रदेशों में लोकसभा की कुल 132 सीटें हैं। सबसे बड़े राज्य तमिलनाडु में 39 सीटें हैं। कर्नाटक में 28, आंध्र प्रदेश में 25, केरल में 20 एवं तेलंगाना में 17 सीटें हैं। लक्षद्वीप, पुडुचेरी एवं अंडमान निकोबार में एक-एक सीट हैं। पिछली बार इन राज्यों में दोनों बड़े राष्ट्रीय दलों के पास 29-29 सीटें थीं, जबकि अन्य दलों को 74 सीटों पर कामयाबी मिली थी। इस बार भाजपा को दक्षिण में पिछली बार से एक अधिक यानी कुल 30 सीटें मिली हैं। कर्नाटक की बात अगर छोड़ दी जाए तो दक्षिण के राज्यों में भाजपा का पहले भी अच्छा प्रदर्शन नहीं रहा है। एकमात्र राज्य कर्नाटक है, जहां भाजपा की उपस्थिति दिखती रही है। किंतु एक वर्ष पहले विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की जीत के साथ ही कर्नाटक भी भाजपा के लिए दुर्लभ राज्यों की सूची में आ गया था। हालांकि इस बार जदएस के साथ गठबंधन करते हुए भाजपा ने कुल 17 सीटें जीतीं और राज्य में बड़ी पार्टी के रूप में खुद को बनाए रखा है। सहयोगी दल जदएस को भी दो सीटें मिली हैं, जबकि राज्य में सत्तारूढ़ कांग्रेस को सिर्फ नौ सीटों से संतोष करना पड़ा है। तीन केंद्र शासित प्रदेशों में दो पर कांग्रेस एवं एक पर भाजपा की जीत मिली है। पुडुचेरी में पिछली बार भी कांग्रेस को जीत मिली थी। किंतु अंडमान निकोबार सीट को भाजपा ने कांग्रेस का हाथ से छीन लिया। लक्षदीप में भी कांग्रेस को जीत मिली है।

कांग्रेस : 42 सीटों का किया जुगाड़

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली: दक्षिण भारत के चार राज्यों में कांग्रेस की मजबूत उपस्थिति पहले से है। ऐसे में भाजपा की तुलना में कांग्रेस के लिए दक्षिण के राज्यों में पहले से ही ज्यादा संभावना थी। परिणाम भी उम्मीदों के अनुरूप ही आया। कांग्रेस ने दक्षिण के पांच राज्यों एवं तीन केंद्र शासित प्रदेशों में 13 सीटें बढ़ाई हैं। 2019 के चुनाव में कांग्रेस को इन राज्यों में सिर्फ 29 सीटों पर ही जीत मिली थी, जो भाजपा के बराबर थी। इस बार कांग्रेस ने 42 सीटों का जुगाड़ दक्षिण के राज्यों से ही किया है।

बेंगलुरु में मंगलवार को लोकसभा चुनाव की मतगणना के दौरान भाजपा की उल्लासित कार्यकर्ता। एएफपी

तेलंगाना ने बरकरार रखी उम्मीदें

तेलंगाना में लोकसभा की 17 सीटें हैं। राज्य में पांच महीने पहले हुए चुनाव में कांग्रेस की सरकार बनी है। फिर भी भाजपा ने यहां अच्छी उपस्थिति दर्ज कराई है। पिछले संसदीय चुनाव में भाजपा को सिर्फ चार सीटें मिली थीं। इस बार आठ सीटें जीतकर भाजपा ने राज्य में सत्तारूढ़ कांग्रेस को भविष्य के लिए बड़े खतरे का संकेत दिया है। कांग्रेस और भाजपा में बराबर की टक्कर थी। दोनों को सीटें भी बराबर ही आईं। उल्लेखनीय यह भी कि पांच महीने पहले तक राज्य में सत्तारूढ़ भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) का राज्य से सूपड़ा साफ हो गया। दस वर्ष तक सत्ता में रहने का भी फायदा नहीं मिल पाया।

तमिलनाडु में खाता भी नहीं खुला

दक्षिण भारत के सबसे बड़े राज्य तमिलनाडु में राजग का खाता भी नहीं खुला है। भाजपा के सारे प्रयास भी बेकार साबित हुए। पूर्व आइएपीएस अन्नामलाई से भाजपा को काफी उम्मीद थी। इसलिए कि उन्होंने भाजपा के लिए सघन प्रचार अभियान चलाया था। ताबड़तोड़ कई रैलियां, जनसभाएं एवं रोडशो किए थे। संभावनाएं दिखने लगी थीं। ऐसे में राज्य में सक्रिय छोटे-छोटे दलों के साथ गठबंधन कर भाजपा ने सत्तारूढ़ क्षेत्रीय दल डीएमके को चुनौती देने का प्रयास किया। कामयाबी नहीं मिली। हालांकि वोट प्रतिशत में इजाफा जरूर हुआ है, लेकिन भाजपा के 'सिंघम' कहे जाने वाले अन्नामलाई का तिलिस्म धराशायी हो गया। एक्जिट पोल में भी उनकी जीत की गारंटी बताई थी।

आंध्र प्रदेश में काम आई दोस्ती : लोकसभा की 25 सीटों वाले इस राज्य में क्षेत्रीय दलों के साथ गठबंधन भाजपा के काम आया। उसे तीन सीटों पर जीत मिली, जबकि पिछले चुनाव में खाता भी नहीं खुला था। भाजपा के सहयोगी तेलुगु देसम पार्टी को 16 और जनसेना पार्टी को दो सीटों पर जीत मिली है। सत्तारूढ़ वाइएसआर कांग्रेस चार सीटों पर ही सिमट गई। भाजपा के वोट प्रतिशत में भी भारी इजाफा हुआ। छह सीटों पर लड़ते हुए उसे 11 प्रतिशत से भी ज्यादा वोट मिले हैं, जबकि पिछली बार एक प्रतिशत का भी आंकड़ा पार नहीं कर पाई थी।

केरल में खुला खाता

राहुल गांधी के वायनाड से लड़ने के कारण केरल में कांग्रेस की लहर के बावजूद भाजपा ने अपना खाता खोल लिया। त्रिशूर से सुरेश गोपी को जीत मिली है। लोकसभा की 20 सीटों वाले केरल में भाजपा की यह पहली जीत है। उसे इस बार 16 प्रतिशत से अधिक वोट भी मिले हैं, जो कांग्रेस कुल वोट प्रतिशत का आधा हैं। भाजपा ने भारत जनसेना पार्टी के साथ मिलकर 16 सीटों पर प्रत्याशी उतारे थे।

भाजपा का वोट प्रतिशत

	%
तमिलनाडु	11.12
कर्नाटक	46.08
आंध्र प्रदेश	11.33
तेलंगाना	35.08
केरल	16.68
पुडुचेरी	35.81
अंडमान निकोबार	50.59

कांग्रेस के राजनीतिक पुनर्जीवन के 'नायक' बने राहुल गांधी

- जनता से सीधे जुड़ाव, उनके मुद्दों के साथ निडर छवि के सहारे देश में विपक्ष के वैकल्पिक नेतृत्व के चेहरे के रूप में खुद को किया स्थापित
- कांग्रेस के बेहतर प्रदर्शन से फिर हुआ साबित 'गांधी' की विरासत ही पार्टी को संकटों से उबारती है

नई दिल्ली स्थित कांग्रेस मुख्यालय में राहुल गांधी की तस्वीर वाला झंडा लहराते हुए एक पार्टी समर्थक। एपी

संजय मिश्र ● जागरण

नई दिल्ली : कांग्रेस जब भी चुनौतियों के गहरे चक्रव्यूह में होती है तो 'गांधी' से जुड़ी उसकी मजबूत विरासत ही पार्टी को संकटों के दौर से बाहर निकालती है और सारे अनुमानों को झुठलाते हुए 2024 के लोकसभा चुनाव में उसकी राष्ट्रीय राजनीति में दमदार वापसी से यह बात फिर साबित हो गई है। इसमें कोई संदेह नहीं कि कांग्रेस की इस वापसी के असली नायक पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी हैं जिन्होंने तमाम हमलों-आक्षेपों को झेलते हुए हाथ में संविधान लेकर भारत के आत्मा को बचाने की अपनी लड़ाई में बाजी मार ली है। राहुल गांधी की यह उपलब्धि कुछ वैसी ही है जैसी 1996-2004 के बीच गहरे संकटों से जूझती रही कांग्रेस को सोनिया गांधी के करिश्माई नेतृत्व ने उबारा था। कांग्रेस-आइएनडीआइए भले बहुमत से दूर रह गया है, मगर अपनी बड़ी नैतिक विजय के साथ राहुल गांधी ने देश में वैकल्पिक राजनीतिक नेतृत्व के चेहरे के रूप में देश की जनता का भरोसा हासिल कर लिया है। कन्याकुमारी से कश्मीर और मणिपुर से मुंबई की भारत जोड़ो यात्रा और न्याय यात्रा के दौरान अर्जित लोगों के विश्वास के सहारे राहुल ने कांग्रेस ही नहीं देश की राजनीति को नई दिशा की ओर आगे बढ़ा दिया है।

लोकसभा चुनाव की घोषणा हुई तब 2024 के चुनाव को लगभग विपक्ष विहीन करार दिया गया और सत्ताधारी भाजपा के शिखर नेतृत्व की ओर से कांग्रेस का राजनीतिक अस्तित्व मिट जाने तक के दावे किए गए। हालांकि इसके बावजूद राहुल गांधी ने अपने हौसले की उड़ान को इन प्रहारों के दबाव में नहीं आने दिया और नरेन्द्र मोदी पर सीधे कड़े राजनीतिक हमले कर आइएनडीआइए में शामिल दलों में यह भरोसा पैदा किया कि भाजपा को कड़ी टक्कर दी जा सकती है। कांग्रेस को इस चुनाव में राहुल गांधी ने जहां ला खड़ा किया है, उसकी उम्मीद राजनीतिक पंडितों को भी नहीं थी। मगर दोनों यात्राओं में लाखों-लाख लोगों से सीधे रूबरू होने के बाद यह भांप लिया था कि जनता के मुद्दे ही पार्टी को संकट के गहरे दौर से बाहर निकाल सकते हैं। इसीलिए कांग्रेस के चुनाव घोषणापत्र को न्याय पत्र का नाम देते हुए उसमें ऐसे ही वादे किए गए जो जनता के मन-मिजाज को छूने वाले रहे। इसी का परिणाम रहा कि 10 साल की मोदी सरकार की सत्ता के बावजूद कांग्रेस का घोषणापत्र लोकसभा चुनाव के विमर्श की धुरी बना रहा और भाजपा नेतृत्व के प्रहारों का जवाब देने के लिए राहुल ने अपने हाथ में संविधान ले लिया। इसमें कोई संदेह नहीं कि 2024 के चुनाव की दशा-दिशा का नियंत्रण उन्होंने अपने हाथों में थामे रखा और भाजपा ही नहीं पीएम मोदी को इन मुद्दों पर प्रतिक्रियावादी विमर्श से आगे नहीं बढ़ने दिया। चुनाव परिणामों में कांग्रेस आज जहां खड़ी है वहां से उसके लिए देश की सत्ता सियासत की वैकल्पिक धुरी के रास्ते खुल गए हैं। इसलिए यह कहना अनुचित नहीं होगा कि राहुल गांधी ही कांग्रेस के इस राजनीतिक पुनर्जीवन के असली नायक हैं।

मजबूत विपक्ष देने का भी जनादेश

संजय मिश्र, नई दिल्ली

लोकसभा चुनाव-2024 के नतीजों ने साफ कर दिया है कि जनता को केवल बहुमत की सरकार ही नहीं, देश में एक मजबूत विपक्ष भी चाहिए। कांग्रेस के नेतृत्व वाले गठबंधन आइएनडीआइए को लोकसभा में मिली बड़ी संख्या इस बात का प्रमाण है। चुनाव नतीजों में कांग्रेस ने जैसी वापसी की है, उसमें सत्ता से वह भले दूर रह गई हो मगर यह तय हो गया है कि 18वीं लोकसभा में आधिकारिक रूप से नेता विपक्ष होगा। भाजपा-राजग गठबंधन की सरकार तीसरी बार कमान संभालती है तो उसे पिछले ढाई दशक में संसद में सबसे ताकतवर विपक्ष से रूबरू होना पड़ेगा। चुनाव नतीजों के अब तक के आंकडों से साफ है कि कांग्रेस जहां तीन अंकों के करीब पहुंचकर पहले से कहीं ज्यादा राजनीतिक ताकत से सत्ता को चुनौती देगी तो विपक्षी आइएनडीआइए का 235 के आसपास का लोकसभा में सीटों का आंकड़ा भाजपा-राजग को

राहुल गांधी। फाइल

एकतरफा फैसले लेने की गुंजाइश नहीं देगा। विपक्ष के मजबूत होने का सबसे बड़ा फर्क यह होगा कि संसद में आम सहमति के राजनीतिक दौर की वापसी का रास्ता बनेगा क्योंकि भाजपा-राजग सरकार को तीसरी पारी में संसद में अपने नीतिगत फैसलों से लेकर हर अहम विधायी कार्य के लिए विपक्ष के सहयोग की जरूरत होगी। इस जनादेश की खूबसूरती यही है कि जनता ने सरकार और विपक्ष से देश के व्यापक हित से जुड़े सवालों पर एक दूसरे से संवाद करने और जहां जरूरत हो, सहयोग भी करने की अपेक्षा की है। लोकतंत्र पर खतरे और बहुमतवाद का राजनीतिक विमर्श पिछले कुछ वर्षों से चल रहा था जिसकी वजह लोकसभा में विपक्ष का कम संख्या बल होना रहा है। मालूम हो कि कांग्रेस को 2014 के चुनाव में 44 और 2019 में केवल 52 लोकसभा सीटें मिली थीं जिसका नतीजा रहा कि बीते 10 वर्षों से लोकसभा में कोई आधिकारिक विपक्ष का नेता नहीं था। 18वीं लोकसभा में कांग्रेस ने अपने प्रदर्शन से इस पर जहां ब्रेक लगा दिया है, वहीं कई राज्यों में भाजपा को मजबूत चुनौती दी है। कांग्रेस ने कर्नाटक, हरियाणा, महाराष्ट्र, मणिपुर, मेघालय, गोवा में भाजपा के लिए मजबूत चुनौती पेश की है तो उत्तर प्रदेश जैसे बड़े राज्य में समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन कर भाजपा को रोक लिया है। महाराष्ट्र और हरियाणा में अगले चार महीने में चुनाव होने हैं और इस नतीजे का बड़ा असर इन राज्यों पर पड़ सकता है। अटल बिहारी वाजपेयी की 1998 में बनी भाजपा-राजग की सरकार के समय विपक्ष सबसे मजबूत था और यही वजह रही कि 1999 में जब अविश्वास प्रस्ताव लाया गया तब वाजपेयी सरकार एक वोट से हार गई। 2004 में कांग्रेस नेतृत्व वाली संप्रग की सरकार बनी तो भाजपा 137 सीटों के साथ दमदार विपक्ष के रूप में थी मगर तब भी विपक्षी दलों की संयुक्त ताकत इतनी नहीं थी जितनी 2024 में चुनी गई लोकसभा में है। 2009 में भी कमोबेश स्थिति ऐसी ही थी मगर 2014 तथा 2019 में कांग्रेस के कमजोर संख्या बल के कारण पार्टी को विपक्ष का आधिकारिक दर्जा नहीं मिल पाया। लोकसभा में विपक्ष के कमजोर होने से राजनीति के बदले तेवरों का ही नतीजा है कि 18वीं लोकसभा में जनता ने पिछले 10 वर्ष की एकतरफा राजनीति पर ब्रेक लगा दिया है।

कांग्रेस के साथ ही आइएनडीआइए में उसके सहयोगी क्षेत्रीय दल उत्तर प्रदेश में अखिलेश यादव की सपा, तमिलनाडु में द्रमुक, महाराष्ट्र में शिवसेना-यूबीटी और शरद पवार की राकांपा से लेकर बंगाल में ममता बनर्जी विपक्ष की मजबूत व अहम कड़ी बनकर उभरे हैं। बिहार में राजद का प्रदर्शन जरूर आशानुरूप नहीं रहा, मगर गठबंधन की साझी ताकत तेजस्वी यादव को आगे की लड़ाई के लिए उम्मीद देगी।

'आइएनडीआइए की बैठक में होगा नए सहयोगी बनाने का फैसला'

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : विपक्षी दलों का गठबंधन आइएनडीआइए भले ही 272 के जादुई आंकड़े से अभी काफी दूर है, लेकिन सरकार बनाने की उम्मीदों को इसने पूरी तरह से खारिज नहीं किया है। आइएनडीआइए के घटक दलों की बुधवार को नई दिल्ली में अहम बैठक होगी, जिसमें आगे की रणनीति का फैसला होगा। इसमें यह भी फैसला होगा कि सरकार बनाने के लिए राजग के मौजूदा घटक दल लेकिन पूर्व में आइएनडीआइए के सहयोगी रहे जदयू और तेदेपा से संपर्क किया जाना है या नहीं। यह जानकारी कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने आम चुनाव-2024 के परिणाम आने के बाद मंगलवार को प्रेस कांफ्रेंस में दी। वैसे इसके पहले कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने यह संकेत दिया कि कांग्रेस अपने दूसरे सहयोगी दलों के साथ विपक्ष में बैठ सकती है। इसकी रणनीति जल्द ही बना ली जाएगी।

अरुणाचल से लोकसभा की दोनों सीटें भाजपा ने जीती

इटानगर, प्रेट्र : अरुणाचल से लोकसभा की दोनों सीटों पर भाजपा को जीत मिली है। केंद्रीय मंत्री किरण रिजिजू ने अरुणाचल पश्चिम लोकसभा सीट पर अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस के नबाम तुकी को 1,00,738 मतों के अंतर से हराया। रिजिजू को 2,05,417 वोट मिले, जबकि पूर्व मुख्यमंत्री तुकी को 1,04,679 वोट मिले। 2019 में रिजिजू ने यह सीट 1,74,843 वोटों के अंतर से जीती थी।

भाजपा के तापिर गाओ ने अरुणाचल पूर्व संसदीय क्षेत्र से अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस के बोसीराम सिरम को 30,421 मतों के अंतर से हराकर जीत दर्ज की। गाओ को 1,45,581 मत मिले, जबकि सिरम को 1,15,160 मत मिले।

लोकसभा चुनाव 2024

अरुणाचल प्रदेश 2/543

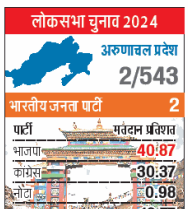

भारतीय जनता पार्टी	2
पार्टी	मतदान प्रतिशत
भाजपा	40.87
कांग्रेस	30.37
नोटा	0.98
अन्य	19.77

अरुणाचल के दोनों निर्वाचन क्षेत्रों में 19 अप्रैल को मतदान हुआ था।

कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री शिवकुमार के भाई चुनाव हारे

बेंगलुरु, प्रेट्र : कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डीके. शिवकुमार के भाई डीके. सुरेश को बेंगलुरु ग्रामीण निर्वाचन क्षेत्र में भाजपा के सीएन. मंजूनाथ ने 2,69,647 वोटों से हरा दिया। इस हार को शिवकुमार और कांग्रेस के लिए झटका माना जा रहा है। प्रख्यात हृदय रोग विशेषज्ञ मंजूनाथ पूर्व प्रधानमंत्री एचडी. देवेगौड़ा के दामाद हैं।

कई हिंदी भाषी राज्यों में हुई आइएनडीआइए की वापसी

नई दिल्ली, प्रेट्र: विपक्षी गठबंधन आइएनडीआइए ने हिंदी पट्टी के कई राज्यों में बेहतरीन वापसी की है। सबसे अप्रत्याशित परिणाम उत्तर प्रदेश में देखने को मिले, जहां समाजवादी पार्टी ने 37 और कांग्रेस ने छह सीटें जीती हैं। उत्तर प्रदेश में भाजपा केवल 33 सीटें जीत सकी। भाजपा ने 2014 में 71 सीटों पर जीत हासिल की थी, वहीं 2019 में भाजपा ने 62 सीटें जीतकर अपनी जमीन बरकरार रखी थी। 2019 में समाजवादी पार्टी ने पांच, कांग्रेस ने केवल एक सीट जीती थी।

आइएनडीआइए ने राजस्थान, हरियाणा, बिहार और झारखंड में भी बढ़त हासिल की। मध्य प्रदेश, दिल्ली, उत्तराखंड और छत्तीसगढ़ में भाजपा मजबूत बनी हुई है। राजस्थान में भाजपा ने 14 सीटें जीतीं। कांग्रेस को आठ सीटें मिलीं। 2019 के चुनावों में भाजपा ने राजस्थान की 25 सीटें जीती थीं। आइएनडीआइए ने बिहार में 2019 की तुलना में अच्छा प्रदर्शन किया।

भाजपा ने जीती उत्तरी गोवा सीट और दक्षिणी गोवा से कांग्रेस को मिली जीत

उत्तरी गोवा निर्वाचन क्षेत्र से भाजपा के उम्मीदवार श्रीपद नाइक मंगलवार को पणजी में अपने पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ विजय संकेत दिखाते हुए। एएनआइ

पणजी, प्रेट्र : भाजपा उम्मीदवार और केंद्रीय मंत्री श्रीपद नाइक ने उत्तर गोवा लोकसभा क्षेत्र से लगातार छठी जीत दर्ज की। दक्षिणी गोवा सीट कांग्रेस के विरियाटो फर्नांडिस ने जीती। गोवा की दो संसदीय सीटों - उत्तरी गोवा और दक्षिण गोवा के लिए सात मई को मतदान हुआ था।

चुनाव आयोग के अनुसार श्रीपद नाइक ने उत्तरी गोवा सीट पर 1,13,621 वोटों के अंतर से अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस उम्मीदवार रमाकांत खलप को हराया। नाइक को 2,53,812 वोट मिले, वहीं खलप को 1,40,191 वोट मिले। यह लगातार छठी बार है जब नाइक ने भाजपा के टिकट पर उत्तरी गोवा संसदीय क्षेत्र से चुनाव जीता है।

दक्षिण गोवा सीट पर कांग्रेस उम्मीदवार फर्नांडिस ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी भाजपा की पल्लवी डेम्पो को 14,216 मतों के अंतर से हराया। फर्नांडिस को 2,16,022 वोट मिले, जबकि डेम्पो को 2,01,806 वोट मिले।

ईवीएम ने पास की एक और अग्निपरीक्षा

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- विपक्षी दलों ने नहीं उठाए ईवीएम पर सवाल, नतीजों के बाद उल्लास में
- पिछले कई चुनावों में विपक्ष हार का ठीकरा ईवीएम पर फोड़ रहा था

चुनाव से पहले ईवीएम (इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीन) और वीवीपैट (वोटर वेरीफाइड पेपर आडिट ट्रेल) पर सवाल खड़ा कर रहे विपक्ष ने मंगलवार को आशा के अनुरूप नतीजे आने के बाद ईवीएम मामले पर पहले की तरह फिर चुप्पी ओढ़ ली है। साथ ही निर्वाचन आयोग की निष्पक्षता पर खड़े किए जा रहे सवालों के सुर भी बदल लिए हैं। अब वह आयोग पर भरोसा जताते दिख रहा है। साथ ही ईवीएम से आए नतीजों को लेकर उल्लास जता रहा है। फिलहाल ईवीएम के परिणामों की इस स्वीकारोक्ति से साफ हो गया है कि उसने हर चुनावों की तरह फिर से एक और अग्निपरीक्षा पास कर ली है।

ईवीएम को लेकर विपक्ष का यह रवैया पिछले चुनावों की तरह इस बार भी था। विपक्ष दलों के कई शीर्ष नेताओं की ओर से सीधे-सीधे निर्वाचन आयोग पर सवाल खड़े किए जा रहे थे। कुछ संगठनों की ओर से सुप्रीम कोर्ट में बार-बार याचिका डाली जा रही थी। चुनाव से पहले और बाद में ईवीएम से छेड़छाड़ के मुद्दे को पूरे जोर-शोर से उठाया जा रहा था। बाद में वीवीपैट को भी इस विवाद में शामिल किया। इस दौरान यह पूरा मामला सुप्रीम कोर्ट भी पहुंचा था। लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले पर और ज्यादा सुनवाई से इन्कार किया और कहा कि इस पर पहले से बहुत सुनवाई हो चुकी है, जिसमें यह साफ हो चुका है कि ईवीएम के साथ किसी भी तरह की छेड़छाड़ नहीं हो सकती। हालांकि मतगणना से पहले पूर्व केंद्रीय मंत्री और राज्यसभा सांसद कपिल सिब्बल ने इस मुद्दे को फिर उठाया था और विपक्षी दलों को सतर्क किया था। वहीं कांग्रेस पार्टी ने ईवीएम और वीवीपैट को लेकर आयोग को एक लंबी चिट्ठी लिखी थी।

जयपुर के एक कालेज में ईवीएम को एक मतगणना केंद्र में एक स्ट्रांग रूम के अंदर रखा गया। प्रेट्र

ईवीएम से हुए पांच लोकसभा और 152 विधानसभा चुनाव

इस चुनाव के साथ ही देश में अब तक पांच लोकसभा और 152 राज्य विधानसभाओं के चुनाव ईवीएम से हो चुके हैं। 46 से अधिक बार सत्ता में बदलाव हुआ है। पांच लोकसभा चुनावों में दो बार कांग्रेस की अगुआई वाला यूपीए गठबंधन जबकि 2014, 2019 और 2024 में भाजपा की अगुआई में राजग ने सबसे अधिक सीटों पर जीत दर्ज की है।

1982 में शुरू हुई थी यात्रा

ईवीएम का चुनाव में पहली बार इस्तेमाल 1982 में केरल के एर्नाकुलम जिले में किया गया। जहां करीब 50 पोलिंग बूथों पर इसे बतौर ट्रायल इस्तेमाल किया गया था। शुरुआत में ईवीएम में आठ प्रत्याशियों के शामिल होने का विकल्प था, लेकिन अब नोटा सहित 16 प्रत्याशियों को शामिल किया जा सकता है। 2013 में नगालैंड में पहली बार वीवीपैट का इस्तेमाल हुआ।

आर्थिक नीतियां जारी रहने की उम्मीद, सरकार के लिए बड़े फैसले लेना नहीं होगा आसान

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- नए कानूनों के लिए गठबंधन की पार्टियों पर निर्भर रहना होगा
- सहयोगी दलों को देने पड़ सकते हैं रेल, सड़क जैसे अन्य विभाग

चुनावी नतीजों के बाद यह साफ हो गया है कि भाजपा के नेतृत्व में राजग की सरकार तो बनेगी, लेकिन किसी भी बड़े आर्थिक सुधार के लिए भाजपा को गठबंधन दलों के फैसले पर निर्भर रहना पड़ेगा।

आर्थिक विशेषज्ञ मान रहे हैं कि पिछले दस सालों में जो आर्थिक नीतियां अपनाई गई हैं, उसे जारी रहना चाहिए। तभी अगले तीन साल में अर्थव्यवस्था के आकार को पांच ट्रिलियन डालर तक ले जाना संभव होगा। परंतु सरकार के तीसरे कार्यकाल में जमीन, कृषि, श्रम जैसे क्षेत्र में नए कानून की जो उम्मीद की जा रही थीं, अब उसे लाने के लिए तेदेपा और जदयू जैसी पार्टियों पर निर्भर रहना होगा।

एचडीएफसी बैंक की प्रमुख अर्थशास्त्री साक्षी गुप्ता कहती हैं कि गठबंधन की सरकार में भी इन्फ्रास्ट्रक्चर एवं सामाजिक कल्याण से जुड़ी योजनाओं पर सरकारी खर्च जारी रहना चाहिए और तभी इससे चालू वित्त वर्ष 2024-25 में जीडीपी विकास दर सात प्रतिशत रह सकती है। आर्थिक जानकारों के मुताबिक, राजग सरकार में जदयू एवं तेदेपा जैसे क्षेत्रीय दलों की अहम भूमिका होगी क्योंकि भाजपा बहुमत से दूर रह गई है। अब तक अगले 100 दिनों में सरकार श्रम, भूमि रिकार्ड व कारोबार को आसान करने संबंधी कई नए कानून लाने की तैयारी कर रही थी। तेदेपा एवं जदयू जैसी पार्टियों पर निर्भर रहने से यह आसान नहीं होगा क्योंकि दोनों ही पार्टियां उन्हीं कानून को बनने के लिए आसानी से हामी भरेंगी, जिससे उनकी राज्य की राजनीति प्रभावित नहीं हो और उन्हें अपने-अपने राज्यों में राजनीतिक लाभ भी मिले।

आर्थिक जानकारों का यह भी कहना है कि गठबंधन की सरकार में मंत्रालय का बंटवारा भी सहयोगी दलों की इच्छा पर निर्भर करेगा। इन्फ्रास्ट्रक्चर से जुड़े रेल, सड़क जैसे कई अन्य विभाग सहयोगी दलों को देने पड़ सकते हैं। इनका इस्तेमाल वे अपने-अपने राज्यों की राजनीति चमकाने के लिए कर सकते हैं। निवर्तमान सरकार में भाजपा के पास 303 सीटें थी, इसलिए राजग की सरकार होने के बावजूद किसी भी नीति को लागू करने के मामले में सहयोगी दलों के सामने झुकना नहीं पड़ता था।

****

विकल्प बढ़ाएगी रोहित-विराट की ओपनिंग जोड़ी

आयरलैंड के विरुद्ध आज पहला मैच खेलेगा भारत, शिवम-हार्दिक के साथ तीन आलराउंडर खिलाने का विकल्प खुलेगा

अभिषेक त्रिपाठी
न्यूयार्क से

209 दिन पहले भारतीय टीम नरेन्द्र मोदी स्टेडियम में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध वनडे विश्व कप का फाइनल हारी थी, और अब उससे 12000 किलोमीटर दूर नसाऊ काउंटी के आइजनहवर पार्क में बुधवार को टी-20 विश्व कप का अभियान शुरू करेगी। अमेरिका में पहली बार हो रहे क्रिकेट विश्व कप में भारतीय टीम का शुरुआती मुकाबला आयरलैंड से होगा और उसे उसके बाद चिरप्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान से भिड़ना होगा। अमेरिका और वेस्टइंडीज पहली बार 20 देशों के विश्व कप की मेजबानी कर रहे हैं और रोहित शर्मा की टीम इसको जीतने की मुख्य दावेदार है।

भारतीय टीम इस विश्व कप को किसी भी कीमत पर जीतना चाहती है क्योंकि टीम के धुरंधर रोहित शर्मा और विराट कोहली का यह अंतिम टी-20 विश्व कप हो सकता है। दोनों ही इसे जीतने के लिए जी-जान लगाएंगे। जिस तरह से भारतीय टीम ने बांग्लादेश के विरुद्ध अभ्यास मैच में यशस्वी की जगह संजू सैमसन से ओपनिंग कराई और जिस तरह से विराट कोहली सोमवार को अर्शदीप के सामने नई गेंद से अभ्यास करने उतरे उससे ये लग रहा है कि भारतीय टीम प्रबंधन ने उन्हें रोहित के साथ ओपनिंग में उतारने का विकल्प खुला रखा है। जब मुख्य कोच राहुल द्रविड़ से ओपनिंग के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि हमारे पास रोहित और यशस्वी जायसवाल हैं।

विराट ने आइपीएल में ओपनिंग की है तो हमारे पास सभी विकल्प खुले हुए हैं। मालूम हो कि विराट ने आइपीएल के 15 मैचों में ओपनिंग करते हुए 741 रन बनाए थे। देर से आने के कारण विराट ने भारतीय टीम के शुरुआती तीन अभ्यास सत्र और बांग्लादेश के विरुद्ध अभ्यास मैच में भाग नहीं लिया था। सोमवार को केंटीगे पार्क में सबसे पहले विराट और यशस्वी नेट पर बल्लेबाजी करने उतरे। उस समय बाकी टीम बगल वाले मैदान में वार्मअप कर रही थी। बाद में सूर्यकुमार यादव ने तीसरा नेट पकड़ लिया। शुरुआत में नेट बालर ने और फिर अर्शदीप और हार्दिक ने विराट को गेंदबाजी की। विराट अर्शदीप के सामने कई बार बीट हुए, एक बार तो वह बोल्ड भी हो गए। उन्होंने नेट भी बदला, हालांकि बाद में वह टच में नजर आने लगे।

शिवम दुबे पर रहेगी नजर: अगर टीम प्रबंधन रोहित और विराट को ओपनिंग कराता है तो उसके पास तीसरे नंबर पर रिषभ पंत, चौथे नंबर पर सूर्यकुमार यादव और उसके बाद शिवम दुबे व हार्दिक को उतारने का विकल्प होगा। श्रीलंका और दक्षिण अफ्रीका के मैच में जिस तरह पिच ने बिहेव किया है उससे यहां पर कुलदीप यादव सहित तीन स्पिनर खिलाए जाएंगे। अब रोहित अक्षर और जडेजा को खिलाते हैं या इन दोनों में से एक को बैठकार युजवेंद्रा सिंह चहल को मौका देते हैं। अभ्यास मैच में रोहित ने आठ गेंदबाजों से गेंद फिंकवाई थी लेकिन चहल को मौका नहीं दिया था, ऐसे में देखना होगा कि क्या आयरलैंड के विरुद्ध चहल को मौका मिलेगा। हार्दिक जिस तरह टीम के बस में बैठने तक अभ्यास कर रहे थे, उससे लग रहा था कि वह कुछ साबित करना चाह रहे हैं। बल्लेबाजी कोच विक्रम राठौर उन्हें मैच फिनिशर की तरह जीत का लक्ष्य दिया। उन्होंने उसे एक गेंद शेष रहते ही पूरा किया। विक्रम ने कहा कब तक अभ्यास करोगे तो हार्दिक ने मुस्कुराते हुए कहा कि मेरे पास अलग कार है, आप चले जाओ मैं बाद में आता हूं। हालांकि वह थोड़ी देर बाद बस से ही गए।

अभ्यास सत्र के दौरान रोहित शर्मा को नेट्स में गेंदबाजी करते हार्दिक पांड्या ● सुरजीत यादव

टीमें इस प्रकार हैं

भारत : रोहित शर्मा (कप्तान), विराट कोहली, रिषभ पंत, सूर्यकुमार यादव, हार्दिक पांड्या, शिवम दुबे, रवींद्र जडेजा, अक्षर पटेल, कुलदीप यादव, जसप्रीत बुमराह, अर्शदीप सिंह, मोहम्मद सिराज, यशस्वी जायसवाल, संजू सैमसन, युजवेंद्रा सिंह चहल।

आयरलैंड: पाल स्टर्लिंग (कप्तान), मार्क एडर, रोस एडर, एंडी बल्बर्नी, कर्टिस कैंफर, ग्रेथ डेलेनी, जार्ज डाकरैल, ग्राहम ह्यूमे, जोश लिटिल, बैरी मैकार्थी, नील राक, हैरी टेक्टर, लोरकान टकर, बेन व्हाइट, क्रैग यंग।

मैंने राहुल भाई को रुकने के लिए मनाने की कोशिश की: रोहित

विशेष संवाददाता, जागरण ● न्यूयार्क: टी-20 विश्व कप के बाद भारतीय टीम के मुख्य कोच राहुल द्रविड़ का कार्यकाल समाप्त हो जाएगा। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा चाहते थे कि राहुल पद पर बने रहें और उन्होंने उनको मनाने का भी प्रयास किया। रोहित ने आयरलैंड के विरुद्ध बुधवार को होने वाले मुकाबले से पहले प्रेस कांफ्रेंस में कहा, द्रविड़ मेरे पहले अंतरराष्ट्रीय कप्तान थे। हमने उनको खेलते हुए देखा। वह हम सबके लिए बहुत बड़े रोल माडल हैं। उन्होंने सालों तक टीम के लिए बहुत कुछ किया। जब वह कोच के तौर पर आए तो उन्हें देखा। हमने उनके साथ लगभग सभी मेजर टूर्नामेंट जीते। वह पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने कहा कि ये हमें करना है ये टीम के लिए जरूरी है। मैंने व्यक्तिगत तौर पर उन्हें कोच पद पर बने रहने के लिए मनाने की कोशिश की, लेकिन उनकी अपनी प्राथमिकताएं हैं। मैं उनको जाते हुए नहीं देख पाऊंगा।

आयरलैंड के विरुद्ध तैयारियों को लेकर और उन्होंने कहा, हमारा फोकस बल्लेबाजी, गेंदबाजी, क्षेत्ररक्षण पर है न कि विपक्षी टीम क्या कर रही उस पर है। जब आप अलग परिस्थितियों में बल्लेबाजी करते हैं तो आपस में बात करना और बाहर से संदेश भेजना महत्वपूर्ण हो जाता है। हमने इस पर काफी बात की है। इस तरह की परिस्थितियों में खास तौर पर बड़े कारण (विश्व कप जीतने) के लिए जरूरी है। दक्षिण अफ्रीका बनाम श्रीलंका मैच के दौरान धीमी पिच को लेकर उन्होंने कहा कि मैंने वह मैच नहीं देखा। मेरा परिवार आ रहा था तो मैं उसमें बिजी था। जहां तक की पिच की बात है तो स्टेडियम में चार पिच का स्क्वायर है। हमें नहीं पता कि हम किस पिच पर खेलेंगे। इस तरह की पिच में बल्लेबाजी के साथ गेंदबाजी भी महत्वपूर्ण होती है। टीम संयोजन पर रोहित ने कहा कि हमारे पास स्पिनर है, बल्लेबाज हैं, गेंदबाज हैं जिस तरह का संयोजन होगा उस तरह के खिलाड़ी हमारे पास हैं।

प्रेस कांफ्रेंस के दौरान भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ● अभिषेक त्रिपाठी

हार्दिक और रोहित के बीच कम हो रहीं दूरियां

न्यूयार्क : मुंबई इंडियंस ने रोहित को कप्तानी से हटाकर हार्दिक को कमान सौंप दी थी और इसके बाद दोनों के खराब संबंधों को सबने देखा लेकिन अब उनके बीच दूरियां कम होते हुए दिख रही हैं। सोमवार को टीम का माहौल काफी अच्छा नजर आ रहा था। रोहित को हार्दिक ने काफी देर तक गेंदबाजी की और आपस में अच्छी बातचीत करते नजर आए। जब हार्दिक की गेंद पर रोहित बीट हुए तो वह उनके पास तक आए। दोनों एक दूसरे से मुस्कुराकर बातचीत कर रहे थे और ये नजर आ रहा था कि इसमें कुछ भी नकली नहीं है। विराट भी सोमवार को काफी अच्छे मूड में नजर आ रहे थे, ऐसा लग रहा था कि टीम मीटिंग में यह तय हुआ है कि अब हमें तिरंगे के लिए उतरना है और सबको अपने विवाद पीछे छोड़कर भारत के लिए खेलना चाहिए। अभ्यास के बाद विराट काफी देर तक टीम बस के पास पत्रकारों से हंस हंसकर बातचीत करते रहे।

नसाऊ काउंटी स्टेडियम की पिच बन सकती है मुसीबत

न्यूयार्क: आइसीसी ने न्यूयार्क की नसाऊ काउंटी के आइजनहवर पार्क में बने अस्थायी स्टेडियम में चार और केंटीगे पार्क में बने अभ्यास एरिया में छह ड्राप इन पिच लगवाई हैं। केंटीगे पार्क में बनी पिचों पर शुरुआत में असमान उछाल था लेकिन सोमवार तक इसमें इतनी रोलिंग हुई कि ये अच्छी नजर आने लगीं। अभ्यास की ड्राप इन पिचों पर अच्छा उछाल नजर आ रहा है लेकिन एक अभ्यास मैच और एक लीग मैच में पिच काफी धीमी नजर आई। दक्षिण अफ्रीका के सामने श्रीलंकाई टीम 19.1 ओवर में 77 रनों पर आलआउट हो गई थी और दक्षिण अफ्रीका को उसे जीतने के लिए 16.2 ओवर लग गए। बांग्लादेश के विरुद्ध अभ्यास मैच में भारत ने पांच विकेट पर 182 रन बनाए थे। अभी तक दोनों मैच साइड पिचों पर हुए हैं।

बार्डर पार करने से ज्यादा मुश्किल स्टेडियम पहुंचना

अभिषेक त्रिपाठी ● जागरण

न्यूयार्क : अमेरिका में पहली बार क्रिकेट विश्व कप हो रहा है लेकिन यहां पर ऐसी अभूतपूर्व सुरक्षा की गई है जैसी आपको दुनिया के सबसे बड़े खेल आयोजनों ओलिंपिक और फुटबाल विश्व कप में भी देखने को नहीं मिलती है। न्यूयार्क की नसाऊ काउंटी स्टेडियम में मैच के दिन पहुंचना बहुत कठिन काम है। आम प्रशंसक की बात तो छोड़िए, दक्षिण अफ्रीका और श्रीलंका के मैच के पहले मीडिया पार्किंग पास होने के बावजूद हम लोगों को अपने गेट के पास पहुंचने में पसीने छूट गए।

सोमवार को मैच से पहले जब हम आइजनहवर पार्क के पास पहुंचे तो न्यूयार्क पुलिस ने हमें एक तरफ जाने को इशारा किया तो लगा कि हम आसानी से पहुंच जाएंगे लेकिन कुछ किलोमीटर चलने के बाद और स्टेडियम से करीब दो किलोमीटर पहले तीन अलग-अलग पुलिसकर्मियों ने एक ही पार्किंग पास को बार-बार चेक किया। जब हम आइजनहवर पार्क के अंदर घुसे तो कुछ दूर बाद पुलिस का पहला चेक पोस्ट आया जिसमें मीडिया एक्रीडिटेशन, कार पास और बैग चेक किया गया। उसके बाद दूसरे चेक पोस्ट पर फिर से मीडिया पास, कार पास और मशीन से टैक्सी को चेक किया गया। पार्किंग में टैक्सी ने ड्राप किया और फिर हम चलकर मीडिया गेट पर पहुंचे तो फिर से प्राइवेट सिक्योरिटी गार्ड ने हमारा कार्ड और बैग चेक किया गया। फिर हम मेटल डिटेक्टर से गुजरे और उसके बाद सारे पत्रकारों को बैग किनारे रखने को कह दिया गया। इसके बाद स्निफर डाग ने आकर बैग सूंघा। फिर एक पुलिस कर्मी ने बैग की एक-एक चैन खोलकर देखी। इसके बाद पत्रकार मीडिया बाक्स तक पहुंच सके। बाकी प्रशंसकों का भी कुछ ऐसा ही हाल रहा। नसाऊ काउंटी के एक्जक्यूटिव ब्रूस ए. ब्लैकमैन से जब इस बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि हम किसी भी तरह की परिस्थितियों से निपटने के लिए तैयार हैं। यह हमारे लिए बहुत बड़ा आयोजन है। मैच के दौरान दो हेलीकाप्टर आसमान में लगातार गश्त लगा रहे थे।

मालूम हो कि नसाऊ काउंटी पुलिस विभाग 3-12 जून के बीच इस मैदान पर आयोजित होने वाले आठ मैचों को बिना किसी घटना के संपन्न कराने के लिए बारीकी से निगरानी कर रहा है। यहां नौ जून को भारत और पाकिस्तान के बीच महामुकाबला भी होना है। आइएसआइएस समर्थक समूह ने इस टी20 विश्व कप को निशाना बनाने की धमकी दी थी। सूत्रों के मुताबिक इन मैचों के लिए स्नाइपर्स और स्वाट टीमों के अलावा, मैदान के अंदर सिविल ड्रेस में भी पुलिस अधिकारी तैनात हैं। नारकोटिक्स डिवीजन के अधिकारी भी 24 घंटे चार ड्राप-इन पिचों की निगरानी कर रहे हैं।

नसाऊ के पुलिस बल ने संघीय जांच ब्यूरो, यूएस डिपार्टमेंट आफ होमलैंड सिक्योरिटी, न्यूयार्क पुलिस विभाग और अन्य एजेंसियों के साथ मिलकर काम किया है। मैच के दिनों में ड्रोन हमले के किसी भी संभावित खतरे को कम करने के लिए मैदान के पास भी कड़े नियम लागू किए गए हैं। स्टेडियम के अंदर जाने से पहले प्रशंसकों की तलाशी ली जा रही है और स्टेडियम में प्रवेश करने से पहले उन्हें एयरपोर्ट-स्टाइल सुरक्षा स्कैनर से गुजरना पड़ रहा है।

नसाऊ में कुछ ऐसी है सुरक्षा व्यवस्था ●

इससे पहले किसी खेल कार्यक्रम में नहीं देखी ऐसी सुरक्षा व्यवस्था

गफ सेमीफाइनल में, स्वियातेक से भिड़ेंगी

पेरिस, एपी: अमेरिका की कोको गफ ने पहला सेट गंवाने के बाद जोरदार वापसी करते हुए मंगलवार को यहां फ्रेंच ओपन टेनिस टूर्नामेंट में ओंस जेब्यूर को हराकर लगातार तीसरी बार ग्रैंडस्लैम टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में प्रवेश किया। अब उन्हें सेमीफाइनल में गत चैंपियन इगा स्वियातेक से भिड़ना है, जिन्होंने क्वार्टर फाइनल मैच में मार्केटा वोंद्रोसोवा को हराया।

पिछले वर्ष सितंबर में यूएस ओपन के रूप में पहला ग्रैंडस्लैम खिताब जीतने वाली गफ ने आठवीं वरीय जेब्यूर को 4-6, 6-2, 6-3 से हराया। यूएस ओपन के बाद गफ ने जनवरी में आस्ट्रेलियन ओपन के भी अंतिम चार में जगह बनाई थी। वर्ष 2022 की उप विजेता 20 वर्षीय गफ को रोलां गैरो पर तीसरी वरीयता दी गई है। गफ की सेमीफाइनल में भिड़ंत शीर्ष वरीय इगा स्वियातेक से होगी स्वियातेक ने ही 2022 में फाइनल में गफ को हराया था। स्वियातेक ने क्वार्टर फाइनल में 2023 की विंबलडन चैंपियन मार्केटा वोंद्रोसोवा को 6-0, 6-2 से एकतरफा हराया।

कोको गफ ● एएफपी

गत चैंपियन जोकोविक घुटने की चोट के कारण हटे

पेरिस, एपी : विश्व नंबर एक टेनिस खिलाड़ी नोवाक जोकोविक ने मंगलवार को घुटने की चोट के कारण फ्रेंच ओपन से हटने का निर्णय लिया। इसके साथ ही यह तय हो गया कि वह अपने खिताब की रक्षा नहीं कर पाएंगे। साथ ही विश्व नंबर एक रैंकिंग पर भी अब जैनिक सिनर पहुंच जाएंगे।

टूर्नामेंट की ओर से जारी बयान के अनुसार जोकोविक को विश्व नंबर 23 फ्रांसिसको सेरुंडोलो के विरुद्ध साढ़े चार घंटे तक चले मैच के दौरान दाएं घुटने की मेडियल मेनिसकस मांसपेशी में चोट आ गई थी। क्वार्टर फाइनल मैच में बुधवार को 24 बार के ग्रैंडस्लैम विजेता को दो बार फ्रेंच ओपन के उपविजेता कैस्पर रुड से भिड़ना था। इसका अर्थ है कि रुड अब सीधे सेमीफाइनल में पहुंच जाएंगे, जहां उनका मुकाबला विश्व नंबर चार एलेक्जेंडर ज्वेरेव और विश्व नंबर 11 एलेक्स डिमिनौर के बीच होने वाले मैच के विजेता से भिड़ना है।

अफगानिस्तान ने युगांडा को 125 रन से रौंदा

गुयाना, प्रेट्र: तेज गेंदबाज फजलहक फारूकी के पांच विकेट और रहमानुल्लाह गुरबाज तथा इब्राहिम जादरान के बीच पहले विकेट की शतकीय साझेदारी की मदद से अफगानिस्तान के टी-20 विश्व कप में अपने पहले मैच में युगांडा को 125 रन से रौंद डाला। केकेआर के आरंभिक बल्लेबाज गुरबाज ने 45 गेंद में 76 रन बनाए, जबकि जदारान ने 46 गेंद में 70 रन की पारी खेली। दोनों के बीच 154 रन की साझेदारी हुई, जो टी-20 विश्व कप में पहले विकेट के लिए अब तक की सर्वोच्च साझदारी है। अफगानिस्तान ने इस साझेदारी के बल पर पांच विकेट पर 183 रन बनाए।

इसके बाद बाएं हाथ के तेज गेंदबाज फारूकी ने चार ओवर में नौ रन देकर पांच विकेट चटकाए, जिससे पहली बार विश्व कप खेल रही युगांडा की टीम केवल 58 रन पर ढेर हो गई। फारूकी दो बार हैट्रिक लेने के करीब पहुंचे थे। पहली गेंद पर चौका पड़ने के बाद उन्होंने बेहतरीन इनस्विंगर पर रौनक पटेल को आउट किया। इसके बाद रोजर मुकासा एलबीडब्ल्यू आउट हो गए। फारूकी ने 13वें ओवर में तीन और विकेट लेकर टी20 क्रिकेट में करियर का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। उन्होंने रियाजत अली शाह को बोल्ड किया और युगांडा के कप्तान ब्रायन मसाबा को गुरबाज के हाथों लपकवाया। वह हैट्रिक से चूक गए लेकिन ओवर की आखिरी गेंद पर एक और विकेट लिया।

फजलहक फारूकी ● एपी

प्रगनानंद ने विश्व चैंपियन लिरेन को हराया

खेल डायरी

स्टावेंगर, , प्रेट्र: भारतीय ग्रैंडमास्टर आर प्रगनानंद ने विश्व चैंपियन डिंग लिरेन के विरुद्ध आर्मागेडोन पर मिली हार का बदला चुकता करते हुए नार्वे शतरंज टूर्नामेंट के सातवें दौर में जीत दर्ज की हालांकि इससे पहले चीनी खिलाड़ी ने मजबूत स्थिति में पहुंचकर खुद गलतियां की थीं जो उन पर भारी पड़ीं। पहला मुकाबला ड्रा रहा और प्रगनानंद ने आर्मागेडोन में बाजी मारी।

नार्वे के मैग्नस कार्लसन ने अमेरिका के हिकारू नकामूरा के विरुद्ध धीमी शुरुआत की और आर्मागेडोन में हार गए। वहीं फ्रांस के फिरोजा अलीरेजा ने अमेरिका के फेबियानो कारूआना को हराया। अभी टूर्नामेंट के तीन दौर शेष हैं और कार्लसन 13 अंक लेकर शीर्ष पर हैं। नकामूरा उनसे आधा अंक पीछे हैं। प्रगनानंद 11 अंक लेकर तीसरे स्थान पर हैं जबकि अलीरेजा उनसे डेढ़ अंक पीछे हैं। महिला वर्ग में यूक्रेन की अन्ना मुजिचुक ने चीन की विश्व चैंपियन वेंजुन जू को हराकर एकल बढ़त हासिल की।

बोपन्ना ने ओलिंपिक के लिए बालाजी को जोड़ीदार चुना: विश्व के चौथे नंबर के खिलाड़ी रोहन बोपन्ना ने फ्रेंच ओपन में अपने प्रदर्शन से प्रभावित करने वाले एन श्रीराम बालाजी को पेरिस ओलिंपिक के लिए अपना जोड़ीदार चुना है और अखिल भारतीय टेनिस महासंघ के इस अनुभवी खिलाड़ी की पसंद पर आपत्ति जताने की संभावना नहीं है।

एमबापे का रीयल मैड्रिड से जुड़ने का सपना पूरा

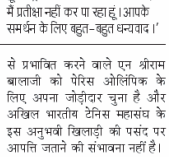

मैड्रिड, एपी : फ्रांस के स्टार खिलाड़ी कायलियन एमबापे आधिकारिक रूप से आगामी पांच सत्रों के लिए स्पेन के शीर्ष फुटबाल क्लब रीयल मैड्रिड से जुड़ गए। रीयल मैड्रिड ने सोमवार को इसकी पुष्टि कर दी। साथ ही एमबापे ने भी एक्स पर बचपन की फोटो साझा कर लिखा कि यह उनका सपना पूरा होने जैसा है। मैड्रिड ने अभी इस अनुबंध की कोई वित्तीय जानकारी साझा नहीं की है। साथ ही उन्होंने टीम में एमबापे को शामिल करने के संबंध में भी अभी कोई जानकारी नहीं दी है। वर्तमान में एमबापे राष्ट्रीय टीम के साथ यूरोपियन चैंपियनशिप की तैयारी में जुटे हैं। एमबापे ने रीयल मैड्रिड की जर्सी पहने बचपन की फोटो साझा कर एक्स पर अंग्रेजी, स्पेनिश और फ्रेंच भाषा में लिखा, 'यह सपने के पूरे होने जैसा है। मैं अपने सपनों के क्लब से जुड़कर बहुत खुश और गौरवान्वित हूं। कोई नहीं समझ सकता कि मैं इसे लेकर कितना उत्सुक हूं। मैड्रिड प्रशंसकों को देखने के लिए मैं प्रतीक्षा नहीं कर पा रहा हूं। आपके समर्थन के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।'

एमबापे ने रीयल की जर्सी में बचपन की फोटो एक्स पर साझा की ● एक्स

राष्ट्रीय फलक

उत्तराखंड के सहस्त्रताल में रास्ता भटके ट्रेकर्स, ठंड लगने से चार की मौत

जागरण संवाददाता, उत्तरकाशी

उत्तराखंड के भटवाड़ी मल्ला-सिल्ला-कुशकल्याण-सहस्त्रताल की ट्रेकिंग पर गए चार ट्रेकरों की ठंड लगने से मौत होने की सूचना है। जबकि, 13 ट्रेकरों की स्थिति गंभीर बताई जा रही है। ट्रेकिंग दल के एक सदस्य ने मंगलवार शाम यह जानकारी उत्तरकाशी स्थित जिला आपदा प्रबंधन कार्यालय तक पहुंचाई। इसके बाद जिला प्रशासन सक्रिय हो गया है। बुधवार को खोज-बचाव अभियान शुरू होने की संभावना है। जिस स्थान पर ट्रेकर फंसे हैं, वह जिला मुख्यालय उत्तरकाशी से 60 किमी दूर है। इसमें 35 किमी का रास्ता पैदल तय करना पड़ता है। इस दल ने पर्यटन व वन विभाग से 29 मई से सात जून तक ट्रेकिंग की अनुमति ली थी।

जानकारी के अनुसार, कर्नाटक ट्रेकिंग एसोसिएशन का 22 सदस्यीय दल उत्तरकाशी के सिल्ला गांव से 29 मई को सहस्त्रताल के लिए रवाना हुआ। दल में 18 ट्रेकर बेंगलुरु (कर्नाटक) व एक पुणे (महाराष्ट्र) का है। उत्तरकाशी निवासी तीन गाइड भी दल के साथ हैं। बेस कैंप से सहस्त्रताल समिट के लिए दल तीन जून को रवाना हुआ। समिट के बाद दल को बेस कैंप लौटना था, पर सहस्त्रताल क्षेत्र में वर्षा व बर्फबारी होने के चलते वह बीच में ही फंस गया। घना कोहरा छाने के कारण दल के सदस्य रास्ता भी भटक गए और उन्हें वर्षा व बर्फबारी के बीच चट्टानों की आड़ में रात गुजारनी पड़ी। ऐसे में बीमार पड़ने व अत्याधिक ठंड लगने से चार ट्रेकर्स की मौत हो गई।

इसकी जानकारी दल के गाइड व अन्य सदस्यों को मंगलवार सुबह मिल पाई। दोपहर में दल के सात सदस्य किसी तरह बेस कैंप लौटे, जबकि 11 सदस्य अभी भी सहस्त्रताल के कोखली टाप क्षेत्र में बीमार अवस्था में फंसे हुए हैं। दो अन्य सदस्यों की स्थिति ज्यादा खराब है। उन्हें निकालने के लिए ट्रेकिंग दल के गाइड ने जिला प्रशासन और जिला आपदा प्रबंधन से हेली रेस्क्यू की मांग की है।

पर्यटक स्थल सहस्त्रताल। जागरण आर्काइव

वायुसेना का सुखोई विमान एसयू-30 एमकेआइ नासिक में दुर्घटनाग्रस्त

- दुर्घटना से पहले दो पायलट सुरक्षित बाहर निकलने में सफल
- ओवरहालिंग के लिए एचएएल को सौंपा गया था लड़ाकू विमान

मुंबई, प्रेट्र : महाराष्ट्र के नासिक जिले में मंगलवार को भारतीय वायुसेना का सुखोई लड़ाकू विमान एसयू-30 एमकेआइ दुर्घटनाग्रस्त हो गया। हालांकि दुर्घटना से पहले ही पायलट और सह-पायलट सुरक्षित बाहर निकलने में सफल रहे। यह विमान ओवहालिंग (मरम्मत) के लिए हिंदुस्तान एयरोनाटिक्स लिमिटेड (एचएएल) को दिया गया था और परीक्षण उड़ान पर था। ओवरहालिंग और परीक्षण के बाद विमान को परिचालन के लिए वायुसेना को सौंपा जाना था।

नासिक रेंज के विशेष पुलिस महानिरीक्षक डीआर कराले ने बताया कि विंग कमांडर बोकिल दूसरे कमांडर बिस्वास के साथ एसयू-30 एमकेआइ विमान उड़ा रहे थे। निफाड तहसील के शिरसगांव के निकट खेत में दोपहर तकरीबन डेढ़ बजे विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। हादसे में दोनों पायलटों को मामूली चोटें आई हैं और उन्हें उपचार के लिए एचएएल अस्पताल में भर्ती कराया गया है। दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद विमान ने आग पकड़ ली और विमान के हिस्से 500 मीटर के इलाके में बिखर गए। हालांकि आग पर जल्द ही काबू पा लिया गया। घटना की जानकारी पर वायुसेना, एचएएल सुरक्षा व तकनीकी इकाई के अधिकारियों ने मौके का निरीक्षण किया। एचएएल ने एक्स पोस्ट में विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने की जानकारी दी और बताया कि पायलटों द्वारा तकनीकी खामी की सूचना दी गई है। हालांकि दुर्घटना के सही कारण की जानकारी विस्तृत जांच के बाद ही हो सकेगी। बता दें कि सुखोई एसयू-30 एमकेआइ रूसी विमान निर्माता सुखोई द्वारा विकसित दो सीटों वाला ट्विनजेट मल्टीरोल लड़ाकू विमान है।

महाराष्ट्र के नासिक में मंगलवार को भारतीय वायुसेना के लड़ाकू विमान सुखोई के दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद इस तरह का मंजर दिखा। प्रेट्र

नीट-यूजी का परिणाम घोषित, 67 अभ्यर्थियों ने किया टाप

- टापर लिस्ट में 14 लड़कियां शामिल, सभी को मिले 99.99 प्रतिशत
- उत्तर प्रदेश से सर्वाधिक 11.65 लाख अभ्यर्थियों ने उत्तीर्ण की परीक्षा

मेडिकल पढ़ाई का अवसर। फाइल

11 टापर सर्वाधिक राजस्थान से हैं, इसके बाद आठ तमिलनाडु और सात महाराष्ट्र से हैं

नई दिल्ली, प्रेट्र: नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) ने मंगलवार को मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट-यूजी का परिणाम घोषित कर दिया। इस वर्ष परीक्षा में 14 लड़कियों समेत 67 अभ्यर्थियों ने टाप कर पहली रैंक साझा की है। टाप करने वाले अभ्यर्थियों ने 99.9971 प्रतिशत अंक हासिल किए। इस वर्ष उत्तर प्रदेश से सर्वाधिक 11.65 लाख अभ्यर्थियों ने परीक्षा उत्तीर्ण की है।

एनटीए के वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि टाप करने वाले 67 अभ्यर्थियों में सर्वाधिक 11 राजस्थान से हैं। इसके बाद आठ तमिलनाडु व सात महाराष्ट्र से हैं। इस वर्ष 24.06 लाख अभ्यर्थियों ने नीट के लिए पंजीकरण कराया था। उत्तीर्ण प्रतिशत गत वर्ष के समान 56.2 प्रतिशत रहा। एनटीए ने कहा कि स्नातक स्तर पर एमबीबीएस और बीडीएस पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए देश की सबसे बड़ी प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करने वालों में 5.47 लाख पुरुष, 7.69 लाख महिलाएं और 10 ट्रांसजेंडर हैं।

उन्होंने बताया कि मेरिट लिस्ट टाई-ब्रेकिंग फार्मूला का उपयोग कर तैयार की जाएगी। इसमें जीवविज्ञान में उच्च अंक अथवा प्रतिशत स्कोर प्राप्त करने वालों को रसायन विज्ञान और भौतिकी के बाद प्राथमिकता दी जाएगी।

एनटीए ने बताया कि परीक्षा असमी, बंगाली, गुजराती, हिंदी, कन्नड समेत 13 भाषाओं में आयोजित की गई थी।

****

अमेरिकी समलैंगिक पुरुषों में देखा गया एड्स का पहला मामला

1981 में आज ही यूएस सेंटर्स फार डिजीज कंट्रोल के समाचार पत्र में डा. माइकल गोटलिब ने पांच समलैंगिक पुरुषों के एक दुर्लभ प्रकार के निमोनिया से पीड़ित होने की जानकारी दी थी। इसे ही बाद में एड्स के रूप में जाना गया। आज दुनियाभर में तीन करोड़ से ज्यादा लोग एड्स से पीड़ित हैं।

पर्यावरण पर पहला अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया

1972 में आज ही स्वीडन में यूएन ने अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण मुद्दों पर केंद्रित पहला सम्मेलन आयोजित किया था। 1974 में इसी दिन पहला विश्व पर्यावरण दिवस विश्वव्यापी गतिविधियों के साथ मनाया गया। इसके बाद प्रत्येक वर्ष पांच जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाने की शुरुआत हुई।

भारतीय शिक्षा प्रणाली के सतीश चंद्र ने किया था दुरुस्त

शिक्षाविद सतीश चंद्र मुखर्जी का जन्म 1865 में आज ही के दिन बंगाल के हुगली जिले में हुआ था। शिक्षा पूरी कर अध्यापन करने लगे। 1902 में भारतीय विश्वविद्यालय आयोग की रिपोर्ट के विरोध में डान सोसायटी का गठन किया। इसका उद्देश्य छात्रों में राष्ट्रवाद को विकसित करने के साथ-साथ तकनीकी शिक्षा भी प्रदान करना था। सोसायटी ने स्वदेशी आंदोलन में भी हिस्सा लिया था। 1906 में राष्ट्रीय शिक्षा परिषद (एनसीई) की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 18 अप्रैल, 1948 को उनका निधन हो गया।

बचपन में होने वाला ल्यूकेमिया भ्रूण के विकास के साथ होता है पैदा

बार्सिलोना, एएनआइ: एक्यूट माइलायड ल्यूकेमिया बचपन में होने वाला दूसरा सबसे प्रचलित प्रकार का एक्यूट ल्यूकेमिया है। इसका पता जीवन के कुछ महीनों के भीतर लगाया जा सकता है।

इस बीमारी की शुरुआत ने इस संभावना को जन्म दिया कि जन्म से पहले ही कैंसर शुरू हो गया था। हालांकि, जन्मपूर्व या नवजात में नमूनों की कमी के कारण इस धारणा को मान्य करना मुश्किल रहा है। बार्सिलोना विश्वविद्यालय व जोसेप कैरेरास संस्थान में प्रोफेसर पाब्लो मेनेंडेज़ ने समझाया कि मैड्रिड के अस्पताल में एक पांच महीने के नवजात के मामले में ल्यूकेमिया के पैदा होने का अध्ययन किया गया, जिसे एक्यूट माइलायड ल्यूकेमिया का इलाज किया गया। शोधकर्ता ने कहा कि इसमें माता-पिता के गर्भनाल रक्त को संरक्षित किया था, जिसके जरिये शोध की ऐसी दिशा खोली, जिसे अब तक संबोधित करना संभव नहीं था। शोधकर्ताओं ने तकनीकों का उपयोग कर हुए ट्यूमर के पूरे जीनोम का विश्लेषण किया।

पंचवल्कल पट्टी से जल्द भर जाएगा घाव

आयुर्वेद विभाग के सहयोग से तैयार आइआइटी बीएचयू की हर्बल पट्टी को मिला पेटेंट

- छोटे जख्म 10 दिन और गंभीर घाव 30 दिनों के भीतर ठीक करने में सफलता, तीन वर्ष से अध्ययन
- उत्तराखंड की कंपनी मेरियन हेल्थ साइंस प्राइवेट लिमिटेड से अनुबंध, बाजार में मिलेगा 'हर्बल पैच'

आइआइटी बीएचयू द्वारा तैयार पंचवल्कल पट्टी। सौ. बीएचयू

संग्राम सिंह, जागरण

वाराणसी : घावों को भरने के लिए बाजार में उपलब्ध पैच (पट्टी) को निकालते समय अक्सर मरीज की त्वचा को नुकसान पहुंचता है। दुष्प्रभाव की वजह से कई बार दूसरी समस्याएं हो जाती हैं। आइआइटी बीएचयू के मैटेरियल साइंस एंड टेक्नालाजी विभाग ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय के आयुर्वेद विभाग की मदद से हर्बल पैच तैयार किया है। इसे पंचवल्कल (पांच तरह के वृक्ष) और पालिमर से बनाया गया है।

तीन वर्ष तक चले अध्ययन के दौरान बीएचयू के आयुर्वेद विभाग में 40 मरीजों पर इसके अच्छे परिणाम मिले हैं। इस उत्पाद को पेटेंट मिला है। उत्तराखंड की कंपनी मेरियन हेल्थ साइंस प्राइवेट लिमिटेड से आइआइटी बीएचयू का अनुबंध हो चुका है। यह कंपनी अगले माह से 'सुपर हील' हर्बल पैच का उत्पादन करेगी। यह पट्टी बायोडिग्रेडेबल है, इसलिए मिट्टी को प्रदूषित नहीं करेगी। इसका उपयोग आसानी से हो सकता है जबकि निकालते वक्त यह घाव को प्रभावित नहीं करती। सुश्रुत व चरक के समय से इस आयुर्वेदिक औषधि का इस्तेमाल होता है, अब इसी दवा को पालिमर में मिश्रित कर नया फार्मूला तैयार किया गया है। पट्टी के उपयोग से छोटे घाव 10 दिनों में और गंभीर चोट एक माह में ठीक हो जाएगी। पट्टी को निकालते समय त्वचा बिल्कुल नहीं छिलती है। कोशिका को सुरक्षित रखा जा सकता है। शोध परिणाम को यूरोप के जरनल नैनो मेडिसिन ने प्रकाशित किया है। मैटेरियल साइंस एंड टेक्नालाजी विभाग के प्रो. प्रलय मैत्री ने बताया कि पालिमर व पंचवल्कल दवा से तैयार पैच का उपयोग घावों को ढंकने और बांधने में होता है। पंचवल्कल में बरगद, पीपल, गूलर, पाकड़ व पारस पीपल के वृक्षों की छाल शामिल है। पट्टी का पहले चूहों पर परीक्षण किया गया। चूहों के घाव पर इस पट्टी के परिणाम बेहद अच्छे आए और उनके जख्म छह-सात दिनों में ठीक हो गए। इसके बाद क्लीनिकल ट्रायल पर सहमति बनी। आयुर्वेद विभाग के पूर्व डीन प्रोफेसर मनोरंजन साहू ने भी प्रोजेक्ट में सहयोग दिया है।

तेजी से भरता है घाव, जल्द बनती स्किन सेल

प्रो. मैत्री ने बताया कि अध्ययन के दौरान हमने पाया कि पंचवल्कल पट्टी से घाव तेजी से भरा। इस पट्टी से न सिर्फ संक्रमण से बचाव होता है, नई स्किन सेल भी जल्दी बनती हैं। किसी चीज से खरोंच आई है तो पहले जख्म को साफ पानी से धो लें, इसके बाद किसी तौलिये की मदद से उसे सुखाए और फिर उसके बाद यह पट्टी लगाएं।

बेहद लोकप्रिय मड रेस

इंग्लैंड के मालडनम में वार्षिक मड रेस में भाग लेते प्रतिभागी। यह रेस एसेक्स में ब्लैकवाटर नदी के तल पर दौड़ लगाने के लिए एक चैरिटी इवेंट है। दौड़ की शुरुआत 1973 में हुई थी, जिसमें एक स्थानीय निवासी ने मालडन में हाइथ क्वे पर स्थित क्वींस हेड पब्लिक हाउस के मकान मालिक को चुनौती दी थी, जिसमें उसे डिनर जैकेट पहनकर ब्लैकवाटर नदियों के नमक पर भोजन परोसने की चुनौती दी गई थी। चुनौती स्वीकार की गई और उसे पूरा किया गया। एएफपी

चंद्रमा से नमूने लेकर वापस आ रहा चीन का चांग ई-6

- इसके 25 जून को इनर मंगोलिया क्षेत्र में उतरने की संभावना
- दुनिया का कोई देश चांद के दूरस्थ क्षेत्र से नहीं ला सका है नमूना

चंद्रमा सतह से चट्टान का नमूना लेता चीन का चंद्रयान चांग ई-6 प्रोब। एपी

बीजिंग, प्रेट्र: चीन अंतरिक्ष में ऐतिहासिक सफलता हासिल करने की ओर है। चीन का चंद्रयान चांग ई-6 प्रोब मंगलवार को चंद्रमा की सतह से चट्टान का नमूना लेकर पृथ्वी पर वापस लौट रहा है। ऐसा पहली बार होगा जब कोई देश चंद्रमा के इस दूरस्थ क्षेत्र एटकेन बेसिन से चट्टान का नमूना लेकर पृथ्वी पर लौटेगा। चांग ई-6 के धरती पर 25 जून को उतरने की संभावना है।

चीन के राष्ट्रीय अंतरिक्ष प्रशासन (सीएनएसए) ने घोषणा की कि मंगलवर सुबह एसेंडर ने चंद्रमा के दूरस्थ इलाके से नमूने लेकर चांद की पूर्व निर्धारित कक्षा में प्रवेश किया। चीन की सरकारी एजेंसी शिन्हुआ ने बताया कि मंगलवार को चांग ई-6 ने बीजिंग के समयानुसार सुबह 7:38 पर चांद की सतह को छोड़ दिया। इसके तीन सप्ताह बाद चीन के इनर मंगोलिया क्षेत्र में उतरने की संभावना है। चंद्रमा के जिस दूरस्थ इलाके में चांग ई-6 ने लैंडिंग की थी, वहां कभी भी सूर्य की किरणें नहीं पहुंची हैं। यह पृथ्वी से नजर न आने वाला हिस्सा है। चांग ई-6 इस हिस्से से दो किलो नमूना एकत्र कर पृथ्वी पर लौटेगा। यहां अबतक कोई दूसरा देश नहीं पहुंच पाया है। वहीं, दक्षिणी ध्रुव पर सबसे पहले पहुंचने वाला देश भारत है। यहां पिछले वर्ष चंद्रयान-3 ने सफलतापूर्वक लैंडिंग की थी।

आर्बिटर, रिटर्नर, लैंडर और एसेंडर से युक्त चांग ई-6 प्रोब को तीन मई को लांग मार्च-5 राकेट की मदद से हैनान के दक्षिणी द्वीप स्थित वेनचांग सेटेलाइट लांच सेंटर से भेजा गया था। चीन का चांग ई-6 प्रोब चंद्रमा के सबसे बड़े क्रेटर दक्षिणी ध्रुव-एटकेन बेसिन में रविवार को सफलतापूर्वक उतरा था। माना जा रहा है कि चंद्रमा के इस क्षेत्र के नमूने के विश्लेषण से चंद्रमा के निर्माण को लेकर जानकारी मिल सकती है।

अरुणाचल प्रदेश में चींटी की नीले रंग की प्रजाति की खोज

- सियांग घाटी में मिली चींटी की नई प्रजाति का नाम पैरापैराट्रेचिना नीला
- एटीआरईई-फेलिस क्रिएशंस बेंगलुरु की टीम की टीम को मिली सफलता

नीली चींटी।

नई दिल्ली, प्रेट्र: अरुणाचल प्रदेश में जैव विविधता के केंद्र के रूप में प्रसिद्ध सियांग घाटी में चींटी की विशिष्ट नीले रंग की नई प्रजाति की खोज की गई है। चींटी की नई प्रजाति का नाम पैरापैराट्रेचिना नीला है और इस खोज को जूकीज जर्नल में प्रकाशित किया गया है।

अशोक ट्रस्ट फार रिसर्च इन इकोलाजी एंड एनवायरनमेंट (एटीआरईई) के शोधकर्ताओं व फेलिस क्रिएशंस बेंगलुरु की दस्तावेजीरण टीम ने सियांग घाटी की यात्रा की। इनका मुख्य उद्देश्य वहां की जैव विविधता का फिर से सर्वेक्षण-दस्तावेजीकरण करना था। इस दौरान उन्हें चींटी की नई प्रजाति का पता चला। शोधकर्ताओं ने बताया कि यिनकू गांव के सुदूर इलाके में एक पेड़ पर 10 फुट ऊपर एक छेद में उन्हें अंधेरे में कुछ चमकता नजर आया। जांच करने पर पता चला कि ये चमकदार चींटियां थीं। एटीआरईई के शोधकर्ताओं ने बताया कि ये आम लाल, काली या भूरी चींटियों जैसी नहीं है। यह एक छोटी चींटी है और इसकी लंबाई दो मिमी से भी कम है। इस चींटी का की आंखें बड़ी हैं और मुखभाग त्रिभुजाकार व पांच दांत हैं।

इन्फ्लूएंजा बी के नए एंटीबाडी से वैक्सीन विकसित करने में मिलेगी मदद

अनुसंधान

अमेरिकी विज्ञानियों ने इन्फ्लूएंजा बी के खिलाफ मानव मोनोक्लोनल एंटीबाडी को अलग कर लिया है। यह एक ऐसी खोज है जो बच्चों, बुजुर्गों और कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली वाले लोगों को प्रभावित करने वाली बीमारी के लिए सार्वभौमिक वैक्सीन का मार्ग प्रशस्त कर सकती है।

वेंडरबिल्ट यूनिवर्सिटी मेडिकल सेंटर (वीयूएमसी) के शोधकर्ताओं ने इन्फ्लूएंजा के खिलाफ पहले से टीका लगाए गए एक व्यक्ति के अस्थि मज्जा से मोनोक्लोनल एंटीबाडी के दो समूहों को अलग किया, जो इन्फ्लूएंजा बी की सतह पर इन्फ्लूएंजा वायरस के एक प्रमुख सतह ग्लाइकोप्रोटी और न्यूरामिनिडेस के अलग-अलग हिस्सों से बंधे थे। जर्नल इम्युनिटी में टीम ने खुलासा किया कि एंटीबाडी में से एक फ्लूबी-400 ने मानव श्वसन उपकला कोशिकाओं की प्रयोगशाला संस्कृतियों में वायरस प्रतिकृति को व्यापक रूप से बाधित किया। उन्होंने पाया कि पशु माडल में एंटीबाडी इंजेक्शन द्वारा या नाक की बूंदों के माध्यम से दिए जाने पर इन्फ्लूएंजा बी से भी रक्षा कर सकती है।

इंट्रानेजल अधिक प्रभावी हो सकता है। उन्होंने बताया कि ऐसा इसलिए है क्योंकि इंट्रानेजल एंटीबाडी नाक के बलगम में वायरस को "फंसा" सकते हैं, जिससे अंतर्निहित उपकला सतह के संक्रमण को रोका जा सकता है। टीम ने पेपर में कहा कि ये निष्कर्ष इन्फ्लूएंजा बी की रोकथाम और उपचार के लिए फ्लूबी-400 के विकास का समर्थन करते हैं और एक सार्वभौमिक इन्फ्लूएंजा वैक्सीन विकसित करने के प्रयासों को निर्देशित करने में मदद करेंगे। वेंडरबिल्ट वैक्सीन सेंटर के निदेशक और बाल चिकित्सा के प्रोफेसर जेम्स क्रो जूनियर ने कहा कि वायरल संक्रमण को रोकने या उसका इलाज करने के लिए एंटीबाडी तेजी से चिकित्सा उपकरण बन गए हैं। (आइएएनएस)

अंतरराष्ट्रीय

गाजा में बाइडन के युद्धविराम प्रस्ताव का समर्थन करे सुरक्षा परिषद : अमेरिका

- यूएन में अमेरिकी राजदूत ने परिषद के 14 देशों को प्रस्ताव भेज किया अनुरोध
- कहा, गाज में आठ माह से चल रहे युद्ध का अंत चाहते हैं अमेरिकी राष्ट्रपति

फलस्तीन के सेंट्रल गाजा पट्टी में इजरायली सेना की ओर से की गई एयर स्ट्राइक के बाद निकलती आग और धुआं। रायटर

संयुक्त राष्ट्र: गाजा में इजरायल और हमास के बीच युद्धविराम की कोशिशें तेज हो गई हैं। अमेरिका ने सोमवार को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद से अनुरोध किया कि वह गाजा में तीन चरण के स्थायी युद्धविराम के राष्ट्रपति जो बाइडन के प्रस्ताव का समर्थन करे। यूएन में अमेरिकी राजदूत लिंडा थामस-ग्रीनफील्ड ने प्रस्ताव का समर्थन करने के लिए परिषद के 14 अन्य सदस्यों को एक मसौदा प्रस्ताव भेजा। कहा, बाइडन का उद्देश्य गाजा में आठ महीने से चल रहे युद्ध का अंत करना और सभी बंधकों की रिहाई है। इससे गाजा में पीड़ितों को राहत सामग्री भेजी जा सकेगी।

अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने 31 मई को समझौता प्रस्ताव जारी कर हमास से इसे बिना देरी और बिना शर्त स्वीकार करने की अपील की थी। हमास ने कहा था कि वह इसे सकारात्मक रूप से लेगा। इस प्रस्ताव में इजरायल द्वारा प्रस्ताव को स्वीकार या अस्वीकार करने की बात शामिल नहीं है। बाइडन द्वारा घोषित समझौता प्रस्ताव में हमास द्वारा सभी बंधकों को छोड़ने के बदले स्थायी युद्धविराम का प्रस्ताव है। इस प्रस्ताव के बाद इजरायल सरकार में शामिल उग्रराष्ट्रवादी दलों ने धमकी दी थी कि अगर नेतन्याहू ने बाइडन के प्रस्ताव को स्वीकार किया तो वह सरकार से समर्थन वापस ले लेंगे। वहीं, नेतन्याहू ने संसद की विदेश एवं रक्षा मामलों की समिति के समक्ष समझौता प्रस्ताव को लेकर बात की लेकिन विस्तार से नहीं बताया।

इस बीच, इजरायल ने हमास के कब्जे में चार और बंधकों की मौत की घोषणा की है। माना जा रहा है कि हमास के कब्जे में अब 80 जीवित बंधक और 43 मृतकों के अवशेष हैं। वहीं, हमास का प्रतिनिधिमंडल मंगलवार को अमेरिका समर्थित समझौते पर बातचीत के लिए मिस्र की राजधानी काहिरा पहुंच गया है। इजरायल पहले चरण में बंधकों की रिहाई के बदले फलस्तीनी कैदियों को छोड़ने को राजी है। पिछले साल सात अक्टूबर से शुरू गाजा युद्ध में अबतक 36,550 फलस्तीनियों की मौत हुई है। जबकि पिछले वर्ष सात अक्टूबर को हमास द्वारा इजरायल पर हमले में 1200 से अधिक इजरायली नागरिकों की मौत हुई थी। इसके अलावा हमास ने करीब 250 लोगों को बंधक बना लिया था।

जी-7 के देशों ने भी बाइडन के प्रस्ताव का किया समर्थन : जी-7 के देशों के नेताओं ने इजरायल-हमास युद्ध को खत्म करने को बाइडन के समझौता प्रस्ताव को स्वीकार करने की अपील की। जी-7 नेताओं द्वारा जारी बयान में कहा गया है कि वह बाइडन के गाजा समझौता प्रस्ताव के समर्थन में खड़े हैं।

गाजा में रात भर चले इजरायली हमले में 11 लोगों की मौत

यरुशलम, एपी : गाजा पट्टी में फलस्तीन के स्वास्थ्य अधिकारियों ने कहा कि रात भर चले हमले में 11 लोगों की मौत हो गई। मारे गए लोगों में बुरीज शरणार्थी शिविर में एक परिवार के तीन लोग और आठ पुलिसकर्मी शामिल हैं। कब्जा किए गए वेस्ट बैंक में इजरायली सेना ने कहा कि उसने दो फलस्तीनी आतंकियों को मार गिराया। दोनों आतंकी इजरायली समुदाय पर हमला शुरू करने का प्रयास कर रहे थे।

अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन द्वारा घोषित संघर्ष विराम प्रस्ताव ने इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू को एक चौराहे पर ला खड़ा किया है। यह प्रस्ताव हमास के विरुद्ध इजरायल के युद्ध को समाप्त करने, बंधक बनाए गए लोगों को वापस करने, लेबनान के साथ उत्तरी सीमा पर शांति और सऊदी अरब के साथ संबंधों को सामान्य करने के लिए ऐतिहासिक समझौते को आगे बढ़ाने की संभावना को बल देता है। गाजा में इजरायली हमले में 36000 से ज्यादा फलस्तीनी मारे जा चुके हैं।

संबंधों को प्रगाढ़ करने के इरादे से चीन पहुंचे शहबाज शरीफ

- सत्ता संभालने के बाद पहली बार पांच दिनी यात्रा पर पहुंचे हैं शहबाज
- पाकिस्तान में चीनी नागरिकों पर हुए आतंकी हमलों पर जताई चिंता

बीजिंग, प्रेट्र : सत्ता संभालने के बाद मंगलवार को पहली बार चीन पहुंचे पाकिस्तानी प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने कहा है कि वह यहां दोनों देशों के बीच संबंधों को और प्रगाढ़ करने के इरादे से आए हैं। साथ ही उन्होंने अपने देश में चीनी नागरिकों पर हुए आतंकी हमलों तथा राजनीतिक और आर्थिक संकटों के गहराने पर चिंता भी जताई।

पांच दिनी सरकारी यात्रा पर पहुंचे पाकिस्तानी प्रधानमंत्री शहबाज ने एक्स पर पोस्ट किया कि चीनी नेतृत्व के न्योते पर पर यात्रा के पहले चरण में शेनझेन पहुंच गए हैं और वह यहां सरकारी अधिकारियों, कारोबारी व उद्यमी समुदाय से मिलने को लेकर उत्सुक हैं। उसके बाद वह राष्ट्रपति शी चिनफिंग तथा प्रधानमंत्री ली कियांग और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों से भी मिलेंगे।

इसके पहले चीन के लिए रवाना होने से पहले शरीफ ने इस्लामाबाद में कहा, "हम अपनी दोस्ती को हिमालय से भी ऊंची और दुनिया के सबसे गहरे महासागर से भी गहरा बनाने की गंभीर योजना के साथ जा रहे हैं।" उनके देश में अरबों डालर की सीपीईसी परियोजनाएं हैं। उल्लेखनीय है कि शहबाज की यह चीन यात्रा ऐसे समय में हो रही है, जबकि भारत में लोकसभा चुनाव के परिणाम घोषित हुए हैं और नई सरकार के गठन की तैयारी है। इसी साल मार्च में पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) पार्टी के नेतृत्व वाली सरकार के सत्ता संभालने के बाद दूसरे कार्यकाल के लिए प्रधानमंत्री के रूप में कार्यभार संभालने के बाद शरीफ बुधवार को बीजिंग पहुंचने वाले हैं और पाकिस्तान की बिगड़ती आर्थिक स्थिति को संभालने के लिए अधिक निवेश और सहायता के लिए राष्ट्रपति शी के साथ बातचीत करेंगे। शिन्हुआ को दिए एक साक्षात्कार में शरीफ ने कहा कि पाकिस्तान चीन को दुनियाभर में सबसे भरोसेमंद दोस्तों में से एक मानता है।

भारत के दिए हेलीकाप्टर को अब मालदीव के सैनिक उड़ा रहे

माले, प्रेट्र: मालदीव से अपने सैन्य अफसर वापस बुलाने के बाद से भारत की ओर से भेंट किए गए दो हेलीकाप्टरों को मालदीवी सेना एमएनडीएफ इन हेलीकाप्टरों को खुद ही संचालित कर रही है। अधाधुडाटकाम ने एक अनाम वायुसैनिक के हवाले से बताया कि जब भी भारत के दिए हेलीकाप्टरों को हवा में उड़ाया जाता है, उसमें मालदीव नेशनल डिफेंस फोर्स (एमएनडीएफ) का एक सैनिक अवश्य बैठा होता है।

मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू के चीन के प्रबल समर्थक होने के चलते पिछले साल सितंबर में वहां तैनात सभी भारतीय सैनिकों को वापस भारत लौटने को कहा गया था।

मालदीव से 88 सैन्य अफसरों की आखिरी खेप तय समय 10 मई तक भारत लौट आई थी। लेकिन भारत ने इसके बाद भेंट किए दो हेलीकाप्टर और डोर्नियर विमानों का संचालन करने के लिए नागरिक अधिकारियों को भेजा था। इसके बावजूद पिछले कुछ समय से इनका संचालन अभी भी मालदीव की सेना कर रही है।

यूक्रेन संघर्ष को लेकर शांति सम्मेलन में भाग लेंगी अमेरिकी उपराष्ट्रपति

- व्हाइट हाउस ने कहा, 15-16 जून हो स्विटजरलैंड में एनएसए जैक सुलिवन भी साथ होंगे

कहा, पुतिन अपनी सेना को वापस ले लें तो कल समाप्त हो सकता है युद्ध

वाशिंगटन, एएनआइ: गाजा में युद्धविराम की कोशिशों के बीच यूक्रेन संघर्ष को लेकर भी समझौते के प्रयास तेज हो गए हैं। व्हाइट हाउस ने कहा है कि यूक्रेन में शांति को लेकर अगले हफ्ते स्विटजरलैंड में होने वाले सम्मेलन में अमेरिका की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस हिस्सा लेंगी।

व्हाइट हाउस ने बयान जारी कर कहा है कि 15-16 जून को होने वाले शांति सम्मेलन में उपराष्ट्रपति के साथ अमेरिका के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जैक सुलिवन भी साथ होंगे। इससे पहले इस दो दिवसीय सम्मेलन में राष्ट्रपति जो बाइडन हिस्सा लेने वाले थे। लेकिन वे राष्ट्रपति चुनाव अभियान में व्यस्त होने के कारण इसमें भाग नहीं ले सकेंगे। व्हाइट हाउस में सोमवार को एक प्रेसवार्ता में राष्ट्रीय सुरक्षा संचार सलाहकार जान किर्बी ने कहा कि उपराष्ट्रपति हैरिस और सुलिवन के स्विटजरलैंड शांति सम्मेलन में भाग लेने से यूक्रेन की संप्रभुता और अंखडता कायम रखने के प्रयास को समर्थन मिलेगा। व्हाइट हाउस के प्रवक्ता किर्बी ने दावा किया कि यूक्रेन का युद्ध कल समाप्त हो सकता है यदि रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन अपनी सेना को यूक्रेन से वापस ले लें। उन्होंने कहा कि हम, हमारा गठबंधन और साझेदार यूक्रेन के लोगों का समर्थन जारी रखेंगे। कहा, हम रूस के हमले को नाकाम करने के लिए यूक्रेन के साथ खड़े हैं। वहीं, यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की ने बताया कि स्विटजरलैंड सम्मेलन में भाग लेने के लिए 106 देश सहमति दे चुके हैं। चीन कह चुका है कि वह सम्मेलन में भाग नहीं लेगा। बिना सभी पक्षों और अंतरराष्ट्रीय समुदाय की सहमति के ऐसे आयोजन नहीं होने चाहिए। ज्ञात हो कि 24 फरवरी, 2022 को रूस द्वारा यूक्रेन पर हमले के बाद अब तक जारी है।

बिजली कटौती विरोध में प्रदर्शन

गर्मी बढ़ने के साथ ही पाकिस्तान में बिजली कटौती से हाहाकार मचा हुआ है। मंगलवार को कराची में हजारों लोग सड़कों पर उतर आए और प्रदर्शन किया। इनमें बड़ी संख्या में महिलाएं भी शामिल थीं, जो बैनर लिए हुए थी, जिन पर लिखा था ओवर बिलिंग और लोड-शेडिंग बंद करो। इनदिनों देश में 15 से 18 घंटे तक बिजली कटौती की जा रही है। एएफपी

गुलाम जम्मू-कश्मीर की अदालत ने खारिज की कवि फरहाद की अर्जी

इस्लामाबाद, प्रेट्र : गुलाम जम्मू-कश्मीर में मुजफ्फराबाद स्थित आतंकवाद निरोधी एक अदालत ने हाल के सरकार विरोधी प्रदर्शनों के दौरान करीब 15 दिनों तक गायब रहे कवि अहमद फरहाद की जमानत अर्जी मंगलवार को खारिज कर दी। कोर्ट ने दोनों पक्षों की दलील सुनने के बाद सोमवार को आदेश सुरक्षित रख लिया था। जियो न्यूज के मुताबिक, कवि की पत्नी उरूज जैनब ने कहा कि अदालत के इस फैसले के खिलाफ अपील की जाएगी। उन्होंने कहा कि फिलहाल यह पता नहीं चल पाया कि जमानत याचिका क्यों खारिज की गई है। विद्रोही तेवर वाली कविता रचने वाले फरहाद गुलाम जम्मू-कश्मीर में हाल में हुए सरकार विरोधी प्रदर्शनों के दौरान सुर्खियों में आए थे। उनकी पत्नी का कहना था कि फरहाद को उनके घर से 14 मई को अपहृत कर लिया गया था।

उसके बाद जैनब में इस्लामाबाद हाई कोर्ट में याचिका दाखिल कर पति की तलाश करने तथा जिम्मेदार लोगों के खिलाफ मुकदमा चलाकर उन्हें दंडित किए जाने की मांग की थी।

****